१५८३

वैधव्य विध्वंसन चंपू काव्यम् सटीक

नहीं। (आर्य कवि) मेरी प्यारी बहिनों ! सुनो ! ! मैंने इस संसार में जन्म लेकर दोही काम करने हैं एक विधवाओं का उद्धार दूसरा स्त्री शिक्षा का प्रचार ॥ ८ ॥

सं०—(उभे) सर्वसंभाव्यते तत्रभवति कविरत्ने परं सनातनधर्मावलंबिनांमतेतु नास्यप्रचारोभवितुमर्हति (आर्यकविः) उभे वलितकधरंपश्यन् ।

वदतं मा मे पुरतस्तेषां-
नामापि कर्णशूलाभम् ।
यैरस्मिञ्जगतीतलमध्ये-
विधवाकदंवकं रचितम् ॥ ९ ॥

भा०—(दोनों) आप जैसे महानुभावों के लिये सब कुछ संभव है। परन्तु पौराणिकों के बीच में इसका प्रचलित होना असंभव सा है। (आर्य कवि) दोनों की तरफ देख कर मत कहो मेरे सामने उन पौराणिकों का वृत्तांत जिन्होंने स्वयं इस जगत में विधवाओं को बढ़ाया है। मुझको इनका नाम तक भी लेना बुरा लगता है और कानों में दर्द करता है ॥ ६ ॥

सं०—(उभे)वयस्यार्यकवे!नाद्यावधि श्रुतमस्मादृशीभिरेतदितिवृत्तं यदेभिरेव विधवानां प्रथनंकृतमिति तदावेद्य नातिगुरुकं नातिभारिकंचेदितिवृत्तं (आर्यकविः) श्रूयताम् नरपशुना काशीनाथेन यदारभ्य शीघ्रबोधाविधं पुस्तकमरचि तदारभ्यैव सप्ताष्टनवदशैकादशाब्दवयस्वतीनां कन्यकानां परिणयप्रथा जगति संवृत्ता येयमिदानीमस्मादृशजनदुःखनिदानं (उभे) हा हतेस्वः अस्मत्पूर्वजैरेवेयमस्मदुःखविवर्धिनी. वालवैधव्यदीक्षा जगति विस्तारमनायि (किमपिहृदयेकृत्वा) नयने प्रमृज्य कविरत्नमुद्दिश्य (सुकवे) तत स्ततः (आर्यकवि) ततः किम् ।

सहस्रशो भूतलभारभूता-
गृहे गृहे दुःखविवर्धयित्र्यः ।
प्रवृद्धिमानन्दविनाशमूलां-
समेयुराराद्विधवाकदंवाः ॥ १० ॥

भा०—(दोनों) कवि जी महाराज ! हमने आज तक यह वृत्तांत नहीं सुना था कि हमारे पूर्वजों ने ही हमारी संख्या बढ़ाई है इस लिये यदि आपको परिश्रम न हो तो यह वृत्तांत सुनाइये । (आर्य कवि) सुनो ! काशीनाथ नामक नर पशु ने जब से शीघ्रबोध (शीघ्रनाश) नामक पुस्तक बनाया तभी से छोटी अवस्था में कन्याओं का विवाह होना आरंभ हो गया जोकि हम लोगों को आज दुःख दे रहा है।(दोनों) हा विधता ! हमारे पूर्वजों ने ही हम को दुःख देने के लिये यह प्रथा चला दी । (कुछ सोच कर) आंसुओं को पोछती हुई कहिये कवि जी ! फिर क्या हुआ । (आर्य कवि) फिर क्या होना था । घर २ में भार रूप दुःख को देने वाली कड़ोरों विधवाएं बढ़ती गईं ॥ १० ॥

सं०—(उभे) ततः पूर्वं जगति का प्रथा समासीत् (आर्यकविः) श्रुतं पुराषोड़षवर्षावधिक-ब्रह्मचर्यधारणानन्तरं कन्यामहाविद्यलयेषु नियमपूर्वकविद्याभ्यासात्पूर्णविद्यावतीनां रजोदर्शनादनन्तरं निश्चित-परिणयसमयानां स्वयम्वरमहोत्सवे वृतमनोनुकूलनववरैःसमं पुत्रीणां विवाहसंस्काराअभूवन् नान्यदृष्टैर्नगलितवयस्कैर्नपलितशिरस्कैर्नचग लितवीर्यैः एवंकृते वैधव्याशंसैवनासीत् (उभेपरस्परं) धन्यः सकालो यस्मिन्नेवंविधा कन्यकानां विवाहप्रथासीत् सांप्रतन्तु हतभाग्यतया समयोपि विषमःसंवृत्तः किं विधेयं कथं स्थेयं कथं वर्तितव्यम् ।

क्व समयपरिवृत्तिः कुत्र वैधव्यदीक्षा-
ऽवनतिरियमिदानीमुन्नतिः कुत्र सासीत् ।

विषमशरनिपातः कुत्र चास्मद्दशेयं-
स्वकृतविलसितानां हंत चित्रो विपाकः ॥११॥

भा०—(दोनों) इससे पहिले जगत में कौन सी प्रथा प्रचलित थी (आर्य कवि) सुनो, पहिले समय में सोलह वर्ष तक कन्यायें ब्रह्मचारिणी रहा करती थीं नियम पूर्वक महाविद्यालय में पढ़ा करती थीं मासिक धर्म के अनन्तर उनका विवाह नियत होता था स्वयंवर में पति को बरती थीं (आज कल जैसे नाइयों द्वारा वृद्धों के साथ नहीं व्याही जातीं थीं) इस लिये विधवा नहीं होती थीं (दोनों आपस में) उस समय को धन्य है जिसमें यह व्यवस्था थी आज कल तो बदकिस्मती से समय भी उलटा हो गया क्या करें कैसे बैठे किस तरह से वर्ते कहां तो समय का लौटना कहां यह रड़ापा कहां वह उन्नति और कहां आज कल की गिरी हुई हालत कहां हमारी दशा और कहां फिर कामदेव का वेग अपने किये हुये कर्मों का विचित्र ही फल मिल रहा है ॥ ११ ॥

सं०—(आर्य कविः) अन्यदपि तदानीमद्भुततममिदमितिवृत्तमासीद्यदिदानीं नविद्यते (उभे) किं तत् (आर्य कविः) श्रूयताम् ।

न कोपि कन्याधनजीवनः पुमा-
न्न कश्चिदासीद्द्रमणोद्वयप्रियः ।
न कोपि पत्नीसुखवञ्चितस्तदा-
कथापि नासीद्विधवानुजीविनाम् ॥ १२ ॥

भा०—(आर्य कवि) और भी उस समय एक अद्भुत बात थी जो इस समय नहीं है (दोनों) वह कौन सी (आर्य कवि) सुनो, आज कल की तरह उस समय में न कोई कन्या के ऊपर धन लेता था न कोई दो विवाह करता था न कोई बिना विवाह के रहता था विधवाओं से जीविका करने वालों का तो नाम ही कहां था ॥ १२ ॥

सं०-इदानींतु सर्वेपि पौराणिकमतावलम्बिनोजनाः कन्याविक्रयेण पुत्रविक्रयेणवा जीवन्ति विशेषतः (कान्यकुब्जाः) पत्नीद्वयकरणे को विचारःपंचाष्ट नव दशैकादश द्वादश परिणयैरप्येषांमनो नतुष्यति-दृश्यंते लोकेपत्यविक्रयप्रथया पुत्राणामतिमहर्घत्वादेषामनन्ताः सुताया अविवाहिताएव क्रमागतं वार्धक्यमभ्यगमन् किंबहुना ।

पुरा यदासीदिहवर्त्तनं गतं-
कथावशेषं तदलं नवं नवम् ।
प्रवृत्तमेतत्परिवर्तनक्रमा-
द्दिनस्थले रात्रिरहस्तमीपदे ॥ १३ ॥

भा०—इस समय में तो सभी पौराणिक कन्या विक्रय से अथवा पुत्र विक्रय से निर्वाह करते हैं। खास कर (कान्यकुब्ज) दोविहाह करने में तो विचार ही क्या पांच आठ नौ दस ग्यारह बारह विवाहों से भी इनका मन नहीं भरता है। बहुत सी इनकी ऐसी कन्यायें हैं जो विनाही विवाह के वृद्ध हो गई हैं बहुत कहने से क्या जो बातें पहिले समय थी वह अब नहीं है समय पलट गया दिन की जगह रात रात की जगह दिन हो गया ॥ १३ ॥

सं०—(उभे) अस्मद्वैधव्यपक्षे कृतपक्षपाते पौराणिकजनव्रजे कथंभवान्विधवाविवाहप्रचारं करिष्यति (आर्य कविः) श्रूयताम् श्रुतिस्मृतिप्रमाणनिचयानामेकान्तंसर्वत्रप्रसुतत्वान्न विधवाविवाहस्य दुष्प्रयोज्यत्वं सेत्स्यति विदुषांमध्ये प्रमाणावश्यकतैव कार्यनिष्पत्ति प्रत्यूहकरीभवति सा निष्पन्नाचेत्सर्वमपि कार्यं निष्प्रत्यूहतयैव सिद्धि मेति नात्रसन्देहः (उभे) किं तादृशप्रमाणकदंबोभवतांसविधे वरीवर्ति (आर्य कविः) श्रूयतामवधार्यतांच (उभे) अवणाय।वहि-तेस्वः (आर्य कविः) यद्येवं तर्हि श्रूयताम् ।

भा०—(दोनों) विधवाओं की वृद्धि में अधिक बल देने वाले पौराणिकों के समक्ष आप किस तरह विधवा विवाह का प्रचार करेंगे (कवि) सुनो, श्रुति और स्मृति के प्रमाणों का सर्वत्र प्रमाण होने से इस कार्य में कोई विघ्न उपस्थित न होगा विद्वानों के बीच में प्रमाणों का न होना ही कार्य का बाधक माना जाता है यदि प्रमाण विद्यमान हों तो कोई देर नहीं लगती (दोनों) क्या इस विषय के प्रमाण आपके पास विद्यमान हैं (आर्य कवि) है (दोनों) तो हम को भी सुनाइये (आर्य कवि) सुनो और विचार भी लो (दोनों) सुनने के लिये हम एकाग्रचित्त हैं (आर्य कवि) यदि ऐसा है तो सुनिये।

युक्तः कुलेन गुणतश्च नचेद्वरः स्या-
त्पूर्वस्तदाऽक्षतमनोजगृहा बलेन ।
देयाऽपराय विदुषे सुकुलाय सेति-
[1]शातातपस्य वचनं विधवानुकूलम् ॥ १४ ॥

भा०—जिस वर के लिये पहिले कन्या दी जा चुकी हैं अगर वह कुल औरगुण से उत्तम न हो तो वह पढ़े हुए मन्त्र जोकि विवाह में कहे गये थे अनुचित समझे जावें और वह कन्या दान भी न माना जावे दुबारा उस कन्या को उनसे छीन कर गुणवान वर के लिये देना चाहिये यह शातातप ऋषि का मत है ॥ १४ ॥

[अथच]

दत्तापि पूर्वमवराय वराय नष्टे-
तस्मिन्गतागतवती दुहितापि तूर्णम् ।

---

(१) वरश्चेत्कुलशीलाभ्यां न युज्येत कथंचन ।
न मन्त्राः कारणं तत्र नच कन्यानृतं भवेत् ॥
समाच्छिद्यतु तां कन्यां बलादक्षतयोनिकाम् ।
पुनर्गुणवते दद्यादिति शातातपोऽब्रवीत् ॥ शा० ॥

पौनर्भवेन मनुजेन समं द्विवारं-
संस्कारमर्हति नु [2]मानवधर्मवाक्यात् ॥ १५ ॥

भा०—जिस कन्या का विवाह हो चुका हो और दुबारा भी पति के घर जा चुकी हो परन्तु दैव वश पति के मर जाने पर वह अक्षत ही रही हो तो उस कन्या का दूसरे वर के साथ में फिर विवाह करना चाहिये यह मनु का मत है ॥ १५ ॥

[अन्यञ्च]

उद्वाहेसति नायके सुरपदं याते सुता केवलं-
मन्त्रैरेव शिशौ विमोहवशतः संस्कारभूयं गता ॥
या सा चाक्षतयोनिका यदि तदा देयान्यभर्त्रैरसा-
देतत्प्राह [3]वसिष्ठएव भगवानवैधव्यदीक्षोत्तरम् १६।

भ०—जिस कन्या का विवाह किसी बालक के साथ में भूल से हो गया हो और वह बालक मर गया हो तो वह अक्षत कन्या फिर विवाह करने योग्य है यह वसिष्ठ ऋषि का मत विधवाओं के विवाह में प्रमाण है ॥ १६ ॥

[अपिच]

क्षताऽक्षतावा दुहिता यदा वरे
द्वितीयवारं विनियोजिता भवेत् ॥

---

(२) सा चेदक्षतयोनिः स्याद्गतप्रत्यागतापि वा ।
पौनर्भवेन भर्त्रा सा पुनः संस्कारमर्हति ॥ म० ॥

(३) पाणिग्राहे मृते बाला केवलं मन्त्र संस्कृता ।
साचेदक्षतयोनिःस्यात्पुनः संस्कारमर्हति ॥ व० ॥

स [1]याज्ञवल्क्योऽपि तदा विवेद तां
विवाहमन्त्रैरुचितां पुनर्भुवम् ॥ १७ ॥

भा०—जिस कन्या का एक वार विवाह हो गया हो और दैव वश उसका पति मर गया हो तो वह क्षत हो या अक्षत हो दुवारा विवाह करना चाहिये यह याज्ञवल्क्य ऋषि का मत है (अक्षता भूयः संस्कृता पुनर्भूरिति प्रमाणम्) ॥ १७ ॥

[किञ्च]

ऊढ़ापि दैववशतो दुहिता वरेण
नो संगता यदि समं शयनं तदीयम् ॥
कन्यैव [2]नारदमतेन पुनर्द्विवारं
सा संस्कृता भवितुमर्हति नात्र दोषः ॥१८॥

भा०—जो कन्या विवाह होने पर भी पति के साथ २ एकत्र न हुई हो और इतने में पति मर जावे उसको कन्या ही मान कर दुवारा विवाह करना चाहिये यह नारद ऋषि का मत है इसमें किसी प्रकार का दोष नहीं है ॥ १८ ॥

(तथाच]

यः कोऽपि कन्यां परिणीय नश्ये-
त्पुमानजातागमना सुता सा ॥

---

(१) अक्षताच क्षताचैव पुनर्भूः संस्कृतापुनः ॥ या ॥

(२) उद्वाहितापि या कन्या नचेत्संप्राप्तमैथुना ।
पुनः संस्कारमर्हेत यथा कन्या तथैव सा ॥ ना ॥

[३]कात्यायनस्यापि मतेन देया
ऋतुत्रयानन्तरमन्यभर्त्रे ॥ १६ ॥

भा०—जो कोई पुरुष विवाह होने पर युवावस्था में ही मर जावे तो उसकी स्त्री को यह अधिकार होगा कि वह तीन ऋतु धर्म होने पर और दूसरे पति के साथ विवाह करे यह कात्यायन ऋषि का मत है ॥ १६ ॥

सं०—इत्यादीन्यनेकप्रमाणानि धर्मशास्त्रकारैरक्षतयोनीनां पुनः-संस्कारविधौ स्व स्वविनिर्मितस्मृतिग्रंथेषु निदर्शितानि किमतोधिकं-(उभे)सानंदमाकर्ण्य(परस्परं)आवामप्यक्षतयोनिके एव तद्गतमिदानीम स्मद्वैधव्यकष्टं नातिचिरादेव योग्येनभर्त्रा संगते भविष्यावः परमस्माकं प्राणेभ्योपिप्रियतमा सखी मनदलेखातु संगतप्राणनाथास्ति दैवदुर्विपाकेनेदानीं विगतप्राणनाथासंवृत्ता सा कथं जीवितमतिवाहयिष्यति (आर्यकविः)क्षतयोनिकानामपिकृते धर्मशास्त्रकारैर्बहवोविवाहा निर्णीताः क्वचिन्नियोगेन क्वचिद्विवाहादिना तासामपि वैधव्य विध्वंसनं सेत्स्यति(उभे)केषामृषीणांमतेन भवान्संगतानामपि भर्त्रा योषितां वैधव्ये सति परिणयं व्यवस्थापयति-(आर्यकविः)वयस्ये शृणुतम्

भा०—इत्यादि अनेक प्रमाण धर्म शास्त्रकारों ने अपने २ बनाये ग्रन्थों में अक्षत योनियों का विवाह सिद्ध करने के लिये लिख दिये हैं कहां तक कहें (दोनों) आनन्द पूर्वक सुन (आपस में) हम दोनों भी अक्षत ही है इस लिये हमारे दुःख का तो अब अन्त आ गया बहुत ही शीघ्र हम दोनों योग्य वर से मिल जावेंगी परन्तु प्राणों से भी प्यारी हमारी सखी (मदनलेखा तो) क्षत हो चुकी इस समय विधवा हो गई है वह कैसे जीवेगी (आर्य कवि) क्षत

---

(३) वरयित्वातु यःकश्चित्प्रणश्येत्पुरुषो युवा ।
ऋत्वागमांस्त्रीनतीत्य कन्यान्यं वरयेत्पतिम् ॥ का ॥

योनियों के लिये भी धर्म शास्त्रकारों ने बहुत से विवाह बतलाये हैं कहीं नियोग से कहीं पुनर्विवाह से उनका भी दुःख दूर हो सकता है (दोनों) किन ऋषियों के मत से आप उनका विवाह सिद्ध करते हैं (आर्य कवि) सुनो—

गतेऽमरपुरीं क्रमो विधिवशाद्यथा दृश्यते-
वधूजनकदंबके परिणयस्य योगः पुनः ।
नृणां कलियुगे तथा पतिवियोगतो[1]व्याघ्रपात्
ब्रवीति विधवावधूपरिणयं स्वतो दृश्यताम् ।२०।

भा०—जिस प्रकार स्त्रियों के मरने पर पुरुषों को दूसरा विवाह करने का अधिकार है उसी प्रकार स्त्रियों को भी पुरुष के मरने पर दूसरे विवाह का अधिकार है कलियुग में दोनों को समान अधिकार व्याघ्रपाद ऋषि देते हैं ॥ २० ॥

[अपिच]

वै[2]शंपायनमुनिना-
दर्शितमेतन्निजस्मृतौ स्वमतम् ।
स्त्रीणामपि युज्यन्ते-
पुंसामिव परिणया बहवः ॥ २१ ॥

भा०—पुरुषों के समान स्त्रियों के लिये भी अनेक विवाह करने का अधिकार है यह अपना सिद्धान्त वैशंपायन ऋषि ने अपने ग्रन्थ में कहा है ॥ २१ ॥

---

(१) पत्निनाशे यथा पुंसो भर्तृनाशे तथा स्त्रियाः ।
पुनर्विवाहः कर्तव्यः कलावपियुगे जनैः ॥ व्या० ॥

(२) पुरुषाणामिव स्त्रीणां विवाहा बहवो मताः ।
भर्तृनाशे तथा स्त्रीणां पुंसा पत्नीलये यथा ॥ वै० ॥

[अन्यश्च]

यदि निषेकविधेः पुरतो मृतिं-
धवइयात्परमेश्वरवांछया ॥
दशदिनोदरएव तदा पुनः
परिणयश्च्य[1]वनस्य मते मतः ॥ २२ ॥

भा०—यदि विनाही गर्भाधान किये हुए पति परलोक चला जावे तो दश दिन के अंदर ही स्त्री का दूसरा विवाह कर देना यह च्यवन ऋषि कहते हैं ॥ २२ ॥

[पुनश्च]

गतधवा यदि षोडषवर्षतः-
पुरतएव भवेद्दुहिता तदा ॥
परिणयं विधिदर्शितसत्पथः
स्वयमुवाच मुदैव स [2]काश्यपः ॥ २३ ॥

भा०—सोलह वर्ष की अवस्था के वाद यदि स्त्री का पति मर जावे तो तुरंत ही उसका दूसरा विवाह कर देना चाहिये यह काश्यप का मत है ॥ २३ ॥

[तथाच]

यौवने मृतिमिते हृदयेशे-
सत्वरं परिणयो विधवानाम् ॥

---

(१) पूर्वं निषेकान्नारीणां मृते पत्यौ विधेर्वशात् ॥
दशाहाभ्यन्तरे कुर्यात्पुनः परिणयं पिता ॥ च्य० ॥

(२) आषोडशवयो नार्यो यदि स्युर्मृतभर्तृकाः ॥
पुनर्विवाहमर्हंति न तत्र नियमो भवेत् ॥ का० ॥

कार्यं इत्यति वलेन मुनीशः
प्राह किन्न [3]जलधेरपि शोषः ॥ २४ ॥

भा०—पति के मरने पर स्त्रियों का अवश्य दूसरा विवाह होना चाहिये इसमें कुछ पाप नहीं है अन्यथा उनकी गति न होगी यह अगस्त्यजी कहते है ॥ २४ ॥

[अथच]

इदं [4]भरद्वाजमुनिः समुक्त्वा-
न्निजस्मृताव[5]त्रिरपीह तादृशम् ॥
सुखेन देया विधवाल्पवार्षिकी
वरांतरायेतिच [6]गाधिनन्दनः ॥ २५ ॥

भा०—पति के नष्ट अथवा संन्यासी या रोगी होने पर स्त्रियों का फिर विवाह होना चाहिये यह भरद्वाज अत्रि विश्वामित्र और मनु का भी मत है ॥ २५ ॥

सं०—प्रमाणांतराण्यप्येवमवगन्तव्यानि नियोगप्रथातु पूर्वतएवात्र-भारते प्रथितास्ति यामहाभारते सप्रमाणमुपलभ्यते यथादिपर्वणि विंशाधिकेशततमेऽध्याये प्रकरणम् ।

शापे शिरस्युपगते दुरदृष्टयोगा-
त्पाण्डोस्तदीयकथनेन नियोगरीत्या ॥

---

(३) भर्त्रभावे नवस्त्रीणां पुनः परिणयो मतः ॥
न तत्र पापन्नारीणामन्यथा तद्गतिर्नहि ॥ अ० ॥

(४-५-६) नष्टे संन्याससमापन्ने व्याधिग्रस्तेच भर्तरि ॥
पुनः स्त्रीणां विवाहः स्यात्कलावपि न संशयः ॥ भ, अ, वि, ॥

कुन्ती मनोवृतवरैरथ साच माद्री
पुत्रानवाप नकुलार्जुनभीममुख्यान् ॥ २६ ॥

भा०—इसी प्रकार और भी बहुत से प्रमाण मिलते है नियोग की प्रथा तो इस भारत वर्ष में पहिले ही से चली आती है जिसका पूरा २ प्रमाण महाभारत में मिलता है जैसे आदिपर्व १२० अध्याय का प्रकरण देखिये जिस समय पांडु राजा के लिये शाप लग चुका था और उसी के वश वह रोगी हो गया था उस समय पुत्रों के न होने से दुखित हुए पांडु ने अपनी दो स्त्रियों को जिनका कि नाम माद्री और कुंती था अधिकार दे दिया कि तुम दोनों नियोग के द्वारा संतान उत्पन्न करो अतएव पति के कथनानुसार उनोंने अनेक पुरुषों के साथ में नियोग कर अर्जुन भीम आदि पुत्र प्राप्त किये ॥ २६ ॥

[अथच]

सौदासनामा नृपतिर्नियोगा—
द्वसिष्ठदेवस्य नवीनपत्न्याम् ॥
समाप भैम्यां तनयं वदंति
यमश्मकं नाम समानरूपम् ॥ २७ ॥

भा०—सौदास नामक राजा ने वसिष्ठ नामक ऋषि की धर्मपत्नी मैभी में नियोग से एक पुत्र उत्पन्न किया जिसका कि नाम अश्मक था यह कथा प्रसिद्ध है ॥ २७ ॥

[अपरञ्च]

पंचभिः पतिभिरेकयुवत्याः—
संगमो भवितुमर्हति लोके ॥
दृश्यतां यदि समेति न बुद्धौ
द्रौपदी जगति मानमुपेता ॥ २८ ॥

भा०--एक स्त्री का एकसमय में पांच पतियों के साथ में संबंध हो सकता है यदि यह बात समझ में न आती हो तो द्रौपदी का इतिहास पढ़िये ॥ २८ ॥

[तथाच]

विलयं दुरदृष्टतो गते
नलदेवे कलिशापतः सती ॥
ऋतुपर्णमकामयन्नकिं
दमयंती विषमेषुपीडिता ॥ २९ ॥

भा०--दुर्दैव के वश महाराजा नल के नष्ट होने पर महारानी दमयंती ने अयोध्या के राजा ऋतुपर्ण से फिर नियोग किया (१)भारत देखिये ॥ २९ ॥

[अन्यच्च]

नागराजदुहितुर्विधवायाः-
कामखिन्नमनसो मदशान्त्यै ॥
किं धनंजयनृपो नहिलेभे
पाणिमेतदधुनापि विचार्यम् ॥ ३० ॥

---

(१) गत्वा सुदेव नगरीमयोध्यावासिनं नृपम् ॥
ऋतुपर्णं वचोब्रूहि संपतन्निव कामगः ॥
आस्थास्यति पुनर्भैमी दमयंती स्वयंवरम् ॥
तत्र गच्छन्ति राजानो राजपुत्राश्च सर्वशः ॥
तथाच गणितः कालः श्वोभूते स भविष्यति ॥
यदि संभावनीयं ते गच्छशीघ्रमरिन्दम ॥
[भारत-पुण्य पर्व ७० अध्याय]

भा०—नागराज की कन्या जिस समय में विधवा हो गई थी उस समय में २अर्जुन ने उसको धर्मपत्नी बनाया और इरावान पुत्र उसमें उत्पन्न किया ॥ ३० ॥

[अपिच]

बलिना भूपेन पुरा स्वधर्मपत्न्यां महर्षि योगेन।।
किं न कृत: सुतलाभः सर्वैरेवं विधीयते जगति। ३१।

भा०—महाराजा बलि ने नदी में बहते हुए एक ऋषि को निकाल कर ३सुदेष्णा नामक अपनी स्त्री के साथ उसका नियोग कराया और पुत्र पैदा कराए ॥ ३१ ॥

---

(२) अर्जुनस्यात्मजः श्रीमानिरावान्नाम वीर्यवान् ॥
सुतायां नागराजस्य जातः पार्थेन धीमता ॥
ऐरावतेन सादत्ता ह्यनपत्या महात्मना ॥
पत्यौ हते सुपर्णेन कृपणा दीनचेतसा ॥
[भारत-भीष्म पर्व ९१ अध्याय]

(३) सोनुश्रोतस्तदाविप्रः स्रवमानो यदृच्छया ॥
जगाम सुबहून्देशानंधस्तेनोडुपेनह ॥
तं तु राजा बलिर्नाम सर्वधर्मविदांवरः ॥
अपश्यन्मज्जनगतः श्रोतसाभ्याशमागतम् ॥
जग्राह चैनं धर्मात्मा बलिः सत्यपराक्रमः ॥
ज्ञात्वैवंसच वव्रेथ पुत्रार्थे भरतर्षभ ॥
संतानार्थं महाभाग भार्यासु मम मानद ॥
पुत्रान्धर्मार्थकुशलानुत्पादयितुमर्हसि ॥
एव मुक्तः स तेजस्वी तं तथेत्युक्तवानृषिः ॥
तस्मै स राजा स्वां भार्यां सुदेष्णां प्राहिणोत्तदा ॥
[भारत-आदि पर्व १०४ अध्याय]

सं०—उपनिषत्प्रसिद्धा जावाला मनोभिलषितेन केनचिन्नरेण जावालिनामानं तनयं प्रपेदे महात्मा पराशरोपि नियोगेन मत्स्योदर्यां व्यासमासादितवान्भीमपराक्रमोभीमोपि हिडिंबाभिधानां युवतिंप्राप्य नियोगेनतस्यां घटोत्कचमजनयत् किंबहुना बह्वन्येवंविधान्युपलभ्यंते तत्र २ नियोगप्रमाणानि यान्यशक्यानि पुरुषायुषेणापि संख्यातुम् (उभे) सानन्दमाकर्ण्य सिद्धानौमनोरथाः सर्वथा विधवाकदंबकमिदानीं सनाथं भविष्यति गमिष्यतिचास्मद्दुःखसन्ततिर्विलयं यास्यतिचनिलयंसास्मद्वैधव्यैकृतपक्षपाताजनता नातिचिरादेवसर्वमेतन्मांगलिकंभविष्यतीतिमनसिविचार्य समाश्वस्ते !

भा०—उपनिषदों में जिसकी कथा विद्यमान है उस जावाला ने नियोग से जावालि ऋषि उत्पन्न किये पराशर ने नियोग से मत्स्योदरी में व्यास उत्पन्न किया भीमसेन से हिडिंबा के साथ नियोग कर घटोत्कच पैदा किया कहां तक कहे बहुत से इस विषय में प्रमाण मिलते हैं जो गणना से भी अधिक है (दोनों) आनन्द पूर्वक सुन कर आपस में हम दोनो के मनोरथ सिद्ध हो गए अब समस्त विधवाओं का विवाह हो जावेगा, हमारा दुःख दूर होगा, हमारे शत्रुओं का नाश हो जायगा, बहुत ही शीघ्र यह आनन्द देखने में आवेगा ऐसा मन में विचार शान्त हुई ।

विलोक्य शान्ते युवती निशान्ते-
तान्ते नितान्ते तपनीय कान्ते ।
किमद्यकर्तव्यमिति स्वचित्ते-
कविर्विचारैकपरायणोऽभूत् ॥ ३२ ॥

भा०—ताप से अत्यन्त खिन्न दोनों युवतियोंको शान्त देख अब क्या करना चाहिये इस बात का विचार कविरत्न ने अपने हृदय में उठाया और उसी में तत्पर रहे ॥ ३२ ॥

(क्षणं विचिन्त्य)

श्रूयते भारतेवर्षे श्रोत्रियः कोपि शंकरः ।
कृतं येन यथाशक्ति विधवातापकृन्तनम् ।२३।

भा०—(थोड़ी देर विचार कर) सुनते हैं इस भारतवर्ष में एक श्रोत्रिय शङ्करलाल जी विद्यमान हैं जिन्होंने बहुत कुछ विधवाओं का दुःख नष्ट किया है ॥ २३ ॥

सं०—सांप्रतं तेन मयाचेदं कार्यमवश्यंकर्तव्यमिति समयं नियमयति (मदनमंजरी) वयस्यार्यकवे ! कस्येमानि कर्णरसायनानि सुधापूरमुद्गिरन्ति श्रोत्रियइतिनामाक्षराणि यानिश्रुतान्येवंचेतसिमुदमंकुरयन्ति-पल्लवयन्तिचाऽऽशाव्रततिं कोरकयंतिचमनोरथपथानुगानि तानि२ कर्तव्यानि फलयन्तिच जीवनसफलतां (आर्य कविः) किं नाश्रावि भवतीभ्यां हृदयमिव मेद्वितीयं दत्तसर्वस्वो विधवाविवाहप्रचारे श्रोत्रियःशङ्करलालशर्मा येन प्रसन्नशारदशशिमयूखच्छटावधीरणचतुरं निजंयशः प्रसारयता भारते दर्शितमेव परोपकाररसिकतया मनुष्य कर्तव्यम् ।

भा०—इस समय में हम दोनो मिल कर इस कार्य में प्रवृत्त होंगे ऐसा निश्चय कर दिन नियत करते हैं (मदन मंजरी) कहिये कवि जी महाराज ! यह कानों के अन्दर अमृत देने वाले श्रोत्रिय शब्द के अन्दर आये हुए किन के नामाक्षर हैं जो सुनने से ही आनन्द दे रहे हैं आशालता को पल्लवित करते हैं मनोरथ रूप मार्ग में आये हुये वृत्तांतों को पुष्पित करते हैं (आर्य कवि) क्या तुमने अभी तक नहीं सुने ? हमारे परममित्र श्रोत्रियशंकरलाल जी जिन्होंने अपना सर्वस्व विधवा विवाह के प्रचार में लगा दिया और चन्द्रमा से भी निर्मल अपना यश संसार में फैलाया है ।

(अथच)

अवलाजन तापतापितेन-
प्रथितं येन भुवस्तले वलेन ।
अवलाहितकारकं प्रसादात्-
क्रियते मासिकपत्रमप्युदारम् ॥ ३४ ॥

भा०—और जिन्होंने अवलाओं का दुःख देख कर उनके उपकार के लिये "अवलाहितकारक" प्रसिद्ध मासिक पत्र निकालना आरम्भ किया है ॥ ३४ ॥

सं०—(उभे) हर्षाश्रूणि निवारयन्त्यौ वयस्यार्यकवे ! नाद्याव ध्ययं विधवाजनोपकारी समश्रावि केवलं भवन्मुखाद्देवास्यप्रशस्तिरुपश्रुता (आर्य कविः) यद्येवं तर्हि सांप्रतं शृणुतम् ।

धियोगुणैस्तर्जितवैरिपक्षो-
विभूतिसंवर्धितधर्म कार्य्यः ।
प्रतिष्ठितः सूर्यवदस्ति लोके-
श्रीमानयं शंकरलालशर्मा ॥ ३५ ॥

(अपिच)

सुदर्शनं येन विलोक्य लोके-
सुदर्शनाचार्य वरायदत्ता ।
पुनर्विवाहेनसुता भगिन्या-
गोपालदेवी गतजीवितेशा ॥ ३६ ॥

सं०—इति वर्णयति (उभे) समाकर्ण्य (परस्परं) अहो ! समारब्धमपिसुजनैरेतत्कर्तव्यं केवलं प्रचारमाकाङ्क्षते सर्वेश्वराधीनः

(आर्य कविः) नात्रसन्देहः वास्तविकमेतदाशंसनमितिवदन्कार्या-न्तरार्थमुपक्रमते ।

भा०—(दोनों) आनंद के आंसू पोछ कर (कविजी) आज तक हमने इनका नाम नहीं सुना था आपही के मुख से आज इनकी प्रशंसा सुनी है (आर्य्य कवि) यदि नहीं सुना तो अब सुनो, अपनी बुद्धि के प्रभाव से इन्हों ने शत्रुओं के पक्ष को सर्वदा ही हराया, और अपना सब धन धर्मकार्य में ही लगाया, आप सूर्य के समान प्रतापी और प्रसिद्ध हैं, और आपका शुभ नाम श्रोत्रिय शंकर लाल है (३५) और सब से प्रथम आपही ने अपनी बहिन की लड़की जो कि बाल-विधवा थी, और जिसका नाम श्रीमती गोपाल देवी था पं० सुद-र्शनाचार्य जी के साथ उसका पुनर्विवाह किया, इस प्रकार वर्णन करते हैं (३६) (दोनों) सुन कर-आपस में-ओहो ! इस मांगलिक प्रथाका सज्जनों ने आरंभ भी कर दिया केवल प्रचार मात्र करना बाकी रहा वह ईश्वरेच्छा पर निर्भर है (आर्य कवि) इसमें कोई संदेह नहीं-वास्तव में यह ठीक बात है—इतना कह कर दूसरे काम के लिये कुछ विचारते हैं ।

सं०—अत्रान्तरे (मदनमंजरी) वयस्यार्यकवे पौराणिकानांमते पिविद्यमानानी मानिप्रमाणानि कुतोनतैर्विधवाविवाहप्रचारेण साफल्य मानीयन्तेकुतश्च श्रुतिस्मृतिभ्यामुत्थापितस्य विस्तारितस्यचेतिहासेन विषयस्यास्य प्रचारो नविधीयते (आर्यकविः) श्रूयताम् ।

दृष्टमपि धर्मशास्त्रे सिद्धं वेदे प्रसिद्धमितिहासे ।
स्वार्थी गणयति नार्थं दोषः कोस्मिन्प्रमाणवाक्यानाम् ३७ ॥

भा०—इसी बीच में (मदन मंजरी) कहिये कविजी ! जब कि विधवा विवाह के इतने प्रमाण पौराणिकों के पास विद्यमान हैं, तो फिर-इस बात का ये लोग प्रचार क्यों नहीं करते, वेद और स्मृतियों ने जिसका समर्थन किया और इतिहास ने जिसको फैला

दिया उसके मानने में इनको क्या हरज है-(आर्य कवि) सुनो ! धर्म शास्त्र में देखे हुए वेद से सिद्ध हुए इतिहास के द्वारा प्रसिद्ध भी अर्थ को भी स्वार्थी पुरुष नहीं चलने देते इस में प्रमाणों का कोई दोष नहीं है २७ ॥

सं०--(अनंगलतिका) अथ केस्माकमत्रविषयेन्तरायभूताः (आर्य्य-कविः) श्रूयताम् सर्वतःपूर्वं मौहूर्तिकाः ततःपरे गर्भपातनकर्तारोवैद्याः ततःपरतरे काथिकाःतदपरे कन्याविक्रयकर्तारः तदग्रेमन्दिरपूजकाः तेभ्योपरे तीर्थयाचकाः ततोन्ये वैष्णवाःसाधवः तेभ्योन्ये पारदा-रिकाः (व्यभिचारिणः) सर्वेभ्योन्ते तुच्छपण्डिताः ।

भा०—(अनंगलतिका) कृपा करकेयह तो बतलाइये कि विधवा-ओं के विवाह में कौन २ से विघ्नरूप हैं (आर्य कवि) सुनो, सबसे पहिले तो गांवों के शीघ्रबोधिया पाधे, दूसरे दवाओं के द्वारा गर्भ गिराने वाले वैद्य, तीसरे कथा बांचने वाले, चौथे कन्याओं के ऊपर द्रव्य लेने वाले दलाल, पांचवे मन्दिरों की पुजारी, छठे तीर्थों के पंडे, सातवे वैष्णव, साधु बैरागी, आठवे व्यभिचारी, नवे छोटे २ पंडित, और दसवे विधवाओं से खाने वाले ।

सं०—(उभे) को नाम स्वार्थ एषामस्माकं दुःखेन सिध्यति काच सिद्धिरेषामबलानां पीडनेन भवति नावगम्यते कुटिलमेतदिति-वृत्तम् विस्तरेण बोधयतुभवान् (आर्य कविः) श्रूयताम् नैर्गुण्याद्येषां कथमपि जगति निर्वाहो नभवति विधवानां वृद्धया सुलभस्तैरानन्दः (१) मौहूर्तिकानां प्रयोजनंतु स्वयमेवाग्रे भोजनभट्टमुखेन स्फुटी-भविष्यति (२) विधवाऽऽजीवनवृत्तान्तः स्वयमग्रे तन्मुखेन श्रोतव्यः (३) मंदिरपूजकानां व्यवस्थाप्यग्रे व्यभिचारदत्तद्वारा प्राकट्यमेष्यति (४) वैष्णवसाधूनां भिषजां तु विधवाभ्यःप्रत्यक्षमाजीवनम् (५) का-थिकास्तु अद्यैकादशी व्रतंकार्यं श्वोब्राह्मणभोजनं शालिग्राम तुलसी-पूजनंच विधायभोक्तव्यमिति वदंतः सर्वदा विधवाभ्योजीवन्त्येव (६) तीर्थयाचकाअपि यात्रायै गतानां विधवानामेववञ्चनाय पुरोहितवेषेण

तत्रस्सहभवन्ति तास्यएवचजीवन्ति (७) विधवानांविवाहेन सर्वेषामेषां जीविकानश्यति ततइमेदुःखंति ।

भा०—(दोनों) हमको कष्ट देने से इनका कौनसा स्वार्थ बनता है कौनसी सिद्धी हस्तगत होती है यह कुछ समझ में नहीं आता आप समझा दीजिये (आर्य कवि) सुनो निर्गुण होने से निजका निर्वाह संसार में असंभव था विधवाओं के द्वारा वह भी आनंद उड़ा रहे है (१) शीघ्रबोधी पाधों की बात अगाड़ी भोजनभट्ट स्वयं वर्णन करेंगे (२) विधवाऽऽजीवन भी अपनी बातें अगाड़ी स्वयं कहेगा (३) पुजारियों की भी हालत अगाड़ी जाकर खुलेगी (४) वैष्णव साधु और छोटे मोटे वैद्य तो विधवाओं से ही पल रहे हैं (५) कथा बांचने वाले भी 'आज एकादशी है व्रत करो कल ब्राह्मण भोजन और शालिग्राम एवं तुलसी की पूजा करके भोजन करना, इत्यादि बातों से इनको बहकाकर इनसे जी रहे हैं (६) रहे तीर्थों के पंडे वह भी जगन्नाथ बद्रीनाथ आदि की यात्रा बता कर तीर्थों में खूब इनको लूटते रहते हैं (७)विधवा विवाह की प्रथा प्रचलित हो जावे तो यह सब के सब भूखे मरने और कड़ाके करने लगे ॥

सं०—(उभे) वास्तविकमेतदार्यकवेः कथनमिति (स्वगतं) हृदयेकृत्वा (प्रकाशं) वयस्यार्यकवे!सर्वेष्वेतेषुविधवाविवाहविरोधिषु विद्यमानेषु कथमाविर्भविष्यति भवतां मनोरथः कथंचास्माकं दैवदुर्विलसितानिशांतिमेष्यंति(आर्यकविः)भवतीनां सौभाग्यपक्षे बद्धपक्षपाते भगवति जगदीश्वरे न कश्चिदपि विघ्नो भविष्यत्यत्रविषये तथाहि ।

द्वीपान्तराज्जलनिधेरुदराद्दिगंता-
दाकाशतस्तदुदरस्थितलोकतश्च ॥
आनीय दर्शयति सत्वरमिष्टजातं
भाग्योदयादभिमुखो जगतामधीशः ॥३८॥

भा०—(दोनों) इनका यह सब कहना ठीक है ऐसा हृदय में बिचार कर कहिये कवि जी महाराज इन सब विरोधियों की विद्यमानता में कैसे आपका मनोरथ सिद्ध होगा कैसे फिर हमारा दुख कटेगा (आर्यकवि) आज विधवाओं के परमात्मा सहायक बने हुए हैं इसलिये कोई भी विघ्न इस कार्य में नहीं पड़ेगा देखिये जिस समय में परमात्मा प्रसन्न होता है उस समय में दूसरे द्वीपो से समुद्र के बीच में से आकाश और उसमें बसे हुए लोकों से मनुष्य का मनोरथ पूर्ण कर देता है ॥ ३८ ॥

सं०—(उभे) सफलाभवतु भगवतोभावेन भवतां भगवतीभारती रतीशोपतापितमानसानां मादृशीनां शमयतुविप्लवं सएवैकःकरुणावरुणालयोऽबलाहितकारकःशंकरइतिवदतः अत्रान्तरे आर्यकविः ।

हे हे दयामय विभो जगतामधीश
नाशं नयाशु विधवाजनवैरिजातम् ॥
सौख्यं विधेहि बनितास्वबलासु तासु
नान्यद्वदामि पुरतस्तव दीनबन्धो ॥ ३९ ॥
दीनाबलेतिसमभावगतौ सुशब्दौ
पर्यायतः समवलोकय भिदामुपेतौ ॥
दीनाबलेतिपदवद्विधवाकदंबं
रक्षन्निजंजगति मानय नामधेयम् ॥ ४० ॥

भा०—(दोनों ईश्वर आपकी इस मंगल मय वाणी को सफल करे और हमारा कष्ट शीघ्र दूरकरें ऐसा कहती है इसी बीच में (आर्यकवि) हे परमात्मन् ! आप विधवाओं के शत्रुओं के नष्ट कर इनको सुख प्रदान करें आप दीनानाथ हैं यह बिचारी दीन और अबला हैं इन पर दया कर अपने दीनानाथ नामको यथार्थ बनावें ॥ ३९ ४० ॥

सं०—इति मुहुर्मुहुरीश्वरं प्रार्थयते (मदनमंजरी) एकतःपश्यन् वयस्यार्यकवे ! कोयमाकृत्यानिर्जितस्मरः स्मरन्निवकिमपिनवमितिवृत्तं वृत्ताङ्कितपत्रपात्रीकृतकरतलो हर्षोत्फुल्लयागत्या भवन्तंद्रष्टुमितएवागच्छति दृश्यतां २ (आर्य कविः) साचिपश्यन् वयस्ये ! सएवायमस्माकंद्वितीयंहृदयमिवाद्वितीयकर्मा समानधर्मा कृन्तितवैरिमर्मा समायात्यसौ शंकरलालशर्मा यस्येतिवृत्तं पुरस्ताद्भवत्यो रगादि पुरस्तादितिवदन्ननुगतस्ताभ्यामुत्थाय कतिचित्पदानि गच्छति स्वागताचारपरं गीतंच गायति तद्यथा (भुजंगप्रयातीयं-राजगीतम्)

भा०—इस प्रकार बार २ ईश्वर की प्रार्थना करते हैं (मदनमंजरी) एक ओर देख कर कहिये कवि जी! यह अत्यन्त सुन्दर कौन है जोकि कुछ याद सा करते हुए हाथ में अकबार लेकर शीघ्र २ इसी ओर आ रहे हैं देखिये (आर्य कवि) देख कर आहा यह तो हमारे परममित्र श्रोत्रिय शंकरलाल जी हैं जिनका कि वर्णन मैं पहिले कर चुका था इतना कह कर शीघ्र उठ कर दोनों को साथ ले उनकी तरफ जाते हैं और स्वागताचार के लिये (भुजंगप्रयातीयराजगीत) गा रहे हैं जैसे—

कृपालेशतो यस्य सिध्यंति सर्वे-
निमेषेण संकल्पितार्था नराणाम् ।
गुणातीतविज्ञानरूपाय [1]कस्मै-
नमो ब्रह्मणे निर्विकल्पाय [2]तस्मै ॥
अनैमित्तिकानन्तकारुण्यभाजां-
पवित्रीकृतानेकभूमण्डलानाम् ।
कृपालेशतो मे गृहे संगताना-
मिदं स्वागतं वो बुधानां जनानाम् ॥
कृतार्थीकृतं मे भवद्भिः शरीरं-
पवित्रीकृतं गेहमेतन्मदीयम् ।
महर्घीकृतं वंशनामास्मदीयं
शिवायाभवद्दर्शनं युष्मदीयम् ॥

१—कस्मै सुखस्वरूपाय २—तस्मै प्रसिद्धाय ।

सं०—इतिराजगीतमाकर्ण्य मुदितनाः श्रोत्रियः प्राह ।

कथय काव्यकलापकलानिधे!
कुशलमस्ति नवेति नमोस्तु ते ।
प्रथमवाच्यमिदं विबुधव्रजे-
विपदुदन्तसमुन्नतिदर्शनात् ॥ ४१ ॥

भा०—इस प्रकार राजगीत सुन प्रसन्न हुए श्रोत्रिय जी कहने लगे कि कविजी नमस्ते कहिये कुशल तो है आजकल सब से प्रथम यहीं पूछने योग्य है क्योंकि समय अच्छा नहीं है ॥ ४१ ॥

[आर्य कविः]

अधिगतं कुशलं भवतांकृपा-
वशातएव समस्तमयत्नतः ।
समधिगत्य हृदिस्थित मानवं-
जगति को न जनो वद मोदते ॥ ४२ ॥

सं०—(आर्य कवि) आपकी कृपा से कुशल है मनोवांछित मनुष्य को विना प्रयास प्राप्त कर संसार में कौन पुरुष आनंदित नहीं होता है ॥ ४२ ॥

क्व मुदिरः क्व भुजंगभुजांव्रजः-
क्व कमलं क्व विभाकरमंडलम् ॥
क्व कुमुदं क्व च शीतकरस्थिति-
र्न हृदयेशयमन्तरितं भवेत् ॥ ४३ ॥

भा०—कहां मेघ कहां मयूर मंडल कहां कमल कहां फिर सूर्य, मंडल कहां कुमुद और कहां चंद्रमा हृदय में बसा हुआ कदापि दूर नहीं होता ॥ ४३ ॥

यस्य गेहमुपयान्ति सहर्षं-
स्वागतोचितमहत्करणीयाः ॥
तस्य कीर्तिनिवहस्तु जगत्यां-
केन केन नहि सत्करणीयः ॥ ४४ ॥

भा०—जिसके गृह में आप जैसे स्वागत योग्य महोदय आते हैं उस जनकी प्रशंसा संसार के अन्दर कौन २ नहीं करते अर्थात् सब करते हैं ॥ ४४ ॥

[परंतु]

अकारणेयं करुणा मयाप्ता-
सकारणावेति विचारणायाम् ॥
पुरःस्थितायां पुरतः स्थितस्य-
तवैवसंदर्शनमन्तरायः ॥ ४५ ॥

भा०—परंतु यह आप का आगमन अकारण हुआ या सकारण इस आशंका में आपका समक्ष में होना ही अंतराय है ॥ ४५ ॥

] तस्मात्]

निवेद्यतामस्यजनस्ययोग्यं-
यदस्ति कार्यं हृदये निविष्टम् ॥
निसर्गबन्धो जगतामबन्धो-
दुरात्मनामात्मविदां सबन्धो ॥ ४६ ॥

भा०—इसलिये जो कुछ इस जन के योग्य हो और आपने भी कथन योग्य समझा हो कृपा कर शीघ्र कहिये विलंब न कीजिये ॥ ४६ ॥

सं०—इत्याद्यनेकविधप्रशस्तिपरंपरासु परिणतवचोमालं धृतसुमनोमालं समीपस्थितरचनाजालं तर्जितवहुवाचालं हर्षविनीतकालं दीनाभ्यागतपालं पाठितगुरुकुलबालं विधिविरचितनवभालं कांतिवितर्जितहालं कविरत्नमालोक्य श्रोत्रियः (स्वगतम्)।

किं वदाम्यकथनीयमिदानीं-
सर्वमस्ति हृदयेगतवृत्तम् ॥
सिद्धिमेष्यति यदा स्वयमेव
ख्यातिमेष्यति जगत्त्रितयेपि ॥ ४७ ॥

भा०—इस प्रकार अनेक प्रकार की प्रशंसा में लगे हुए कविरत्न को देखकर श्रोत्रिय विचारते हैं कि क्या कहू जो कुछ मन में है वह अभी हुआ नहीं है जब सिद्ध हो जायगा स्वयं सबको विदित होगा ॥ ४७ ॥

सं०—तथापि प्रश्ननैरर्थक्यनिरासाय किंचिद्वदामीतिविचार्य (प्रकाशं) सुकवे! भवद्दर्शनार्थमेव सांप्रतं केवलमायातोस्मि (आर्यकविः) यद्येवं तर्हि।

अन्योन्यदर्शनसमुत्थितहर्षभारा-
वावां परस्परविनोदविनीतकालौ ॥
प्रासादभूमिगततल्पनिषेवणाय
गच्छाव एहि न विरुद्धमिदं यदि स्यात्। ॥४९॥

भा०—परंतु इनका प्रश्न व्यर्थ न हो जावे इसलिये कुछ कहना चाहिये ऐसा विचार कर (कविजी) इस समय में केवल दर्शनार्थ ही आया हूं (आर्य कवि) यदि ऐसा है तो चलिये हम दोनों आपस में बात करते हुए प्रासाद में बिछे हुए बिस्तर पर आराम करें यदि अनुचित न हो तो ॥ ४९ ॥

सं०—(श्रोत्रियः) किमिदमपि प्रष्टव्यं सर्वथा भवत्परवश इदानी-मस्मि तथाच ।

उचितमनुचितंवा किं विधेयं मयास्मि-
न्समय इति नबुद्धावेति सौहार्दभारात् ॥
कुरु निजरुचिपूर्वं यद्यदाकांक्षितं ते
न किमपि जनएष क्वापिवा वक्तुमीशः ॥५०॥

सं०-आर्यकविः यद्येवं तर्ह्यागम्यतामिति व्रजति गतानुगतिकन्या-येनऽसर्वे तमनुव्रजंति (मदनमंजरी) विभवोचितेनसत्कारेण श्रोत्रिय-मर्चयति अनन्तरमावश्यकमशनादिकं विधाय शय्योदरे निजोदरमा-स्फालयन्तौ श्रोत्रियार्यकवी यथायथमितस्ततो लुठतः ।

(श्रोत्रिय) क्या ऐसी भी बातें पूछा करते हैं ! (मीठा और पूंछकर) चलिये अब तो आप ही के अधीन है हमें तो कुछ प्रेम में मग्न होकर सूझता नहीं आप यथोचित कार्य कीजिये (आर्य कवि) चलिये तो चलें (सब चलते) हैं मदनमंजरी आपका आतिथ्य करती है अंत में भोजन आदि से निवृत होकर दोनों महाशय पेट पर हाथ फेरते हुए पलंग पर लेट रहे हैं और निद्रा के सुपुर्द हो रहे हैं ॥

सं०—तथाविधौ तावालोक्य (मदनमंजरी) वयस्येऽनङ्गलतिके परदुःखदुःखिताविमौ श्रोत्रियार्यकवी किमपिमन्त्रयन्ताविव सांप्रतं निमीलितनयनौ दृश्येते तदेहि नानयोरतिदूरे वियोगतान्ते आवामपि कार्यखेदं निवारयावः-

(अनंगलतिका) वयस्ये मदनमंजरि! क्वास्माकमेवंविधानि भाग-धेयानि येनावामपि खेदं निवारयावः एकतोविषधरइव सुधाधरः किरणैरुद्वेजयति परतो मदनः खरतरैर्विशिखैरुभे भेदयति अन्यतः कोकिलरुतं यथाकथंचिच्छांतमपि मानसं पुनरुद्दीपयति इतः प्रति-दिनविकसन्मदनविलासं वर्धितबहुविधभोगविभासं नवनवपरिरम्भ-

णाभिलाषं तर्जितशिरीषकुसुममार्दवं शरीरमावयोः श्रीमता चिरकालपरिचितेन शैशवेन सादरमिव समीपमागताय भगवते यौवनाय रमणीयंगृहमिवोपायनीकृतम् ।

भा०—दोनों को सोते हुए देख (मंदनमंजरी) प्यारी अनंगलतिके ! दूसरों के दुःखों से दुःखित यह दोनों कुछ विचारते जैसे अब निद्रा में आए हुए है इस लिये अब इनके पास से चलो कहीं हम भी आराम करलें ।

(अनंगलतिका) प्यारी मदन मंजरी ! हमारे ऐसे भाग्य कहां है जो हम भी कुछ आराम करलें एक तरफ से विषधर जैसा सुधाधर (चन्द्रमा) किरणों के द्वारा हमको छेद रहा है दूसरी तरफ से कामदेव हमारे मन को भेद रहा है उधर से जैसे तैसे थामे हुये चित्त को कोयल बोल २ कर चेता रही है इधर से रोज २ अनेक प्रकार के भोग विलास चाहने वाला यह शरीर अभी थोड़े ही दिन हुये हमारे पुराने दोस्त (वचपन ने) पास आई हुई जवानी को मकान जैसा सौप दिया ।

सं०—धन्यास्ताःसीमन्तिन्यो याः प्रियसदनेषु चन्द्रच्छटाच्छुरित प्रासादोदरे शुकोदरसुकुमाराणि वसनानि धारयंत्यः पुष्पवाणविलास सुखमनुभवितुं समुत्कण्ठिताइव नव २ कलिकाकल्पितमण्डनासु बहुविधकुसुमपरागसौरभ्यपेशलासु परस्पर्शीकृतान्यसुखासु पयःफेननिभासु शय्यासु निजप्राणेश्वरपरिष्वंगपूर्वकं किमपिरहस्यंवोधयन्त्यः किमपिकर्णाकर्णिसंदिशन्त्यः किमपिमुहुर्मुहुर्निषेधयन्त्यः सानन्दं यौवनसुखमनुभवन्तिअस्माकन्तु दैवदुर्विपाकेन सर्वमप्येतद्विरुद्धं वैधव्यदीक्षागुरुभिरस्मत्पंडितैर्यथेच्छगमनागमनवसनधारणभूषणपरिधानादिकमपि निषिद्धम अविरतसमुदितवहुविधव्रतनिवन्धवन्धनसन्धानैः शोषितशरीरासु मलिनवसनभोजनस्थानासन सेवनमेव नियोजितमस्मादृशीषु पापैः ।

भा०—धन्य है उन स्त्रियों को जो अपने २ घरों में चांदनी से चमकी हुई छज्जों पर अत्यन्त कोमल वस्त्रों को पहिन कर जवानी के आनंद भोगने को तयार हुई फूलों की कलियों से सजाए हुए इत्र से छिड़के हुए दूधके झाग जैसे मुलायम पलंगों पर अपने पति के साथ सोती हुई कुछ गुप्त बात सुनाती हुई कुछ सुनती हुई कुछ कान में कहती हुई कुछ वार २ कहने पर भी न मानती हुई आनंद पूर्वक यौवन का सुख अनुभव कर रही है।

भा०—हमारे लिये तो दैव के वश से यह सारी ही बातें उलटी हो गईं जो कि हमारे उपदेश देने वाले पुरोहित हैं उनोंने यहां तक कह दिया है कि न तुम कहीं जाओ न आओ न अच्छा कपड़ा पहिनो न जेवर पहिनों (और भी देखिये) हर रोज एक न एक व्रत बता कर हमारा शरीर भी इन्होंने सुखा दिया मैले कुचैले कपड़े बुरा भला खाना ज़मीन पर लेटना आदि २ बातें हमारे लिये इन दुष्टों ने (ठगो ने) बतादी ॥

सं०—इदानीमष्टादशवर्षदेशीयंवयः दुःसहंचमदनवेदनं कथमतिवाहयिष्यावो यौवनं नावगच्छावः निर्जितस्मरः कश्चिदपरोयुवा काम्यतेचेत्कुलकलङ्किता विषादनेनात्मापरलोकपथिकः क्रियतेचेदात्मघातपातकं यथावस्थत्वेन तत्तदुपगतसहनं विधीयतेचेदवस्थाविरुद्धं पुनःपरिणयाय गुरुजनःकथ्यतेचेन्नपासमुदयः किमधुनाभविष्यतीति मन्यतेचेदात्मनोवधीरणं विधिलिखितमेतन्नवारयितुंशक्यमिति मीमांस्यतेचेत्पुरुषार्थविरुद्धं बलरहितावयमितिस्वीक्रियतेचेन्मृषाभाषणं गुरुजनानुज्ञेतिमन्यतेचेच्छास्त्रविरुद्धं यज्जातंतज्जातमितिस्थीयतेचेद्वेदविरुद्धं परमेश्वरमहिमेयमिति विचार्यतेचेत्तदुपहासः सर्वथा दुरदृष्टविशेषशेमुषीपेशला सांप्रतं किंकर्तव्यता समुपगता यानितरां दुनोतिचेतः नातिक्रान्तं मासैककमपि स्वर्गतायामातुःपित्राद्भिः परिणीतमपि नातिचिरादेव समानवयस्का द्वितीयाम्वा समेष्यतिगृहम् संपाद्यन्ते तदर्थं वस्त्रालंकारविशेषाः विरच्यतेनवीनगृहं प्रसाध्यंते नवीन-

शेप्याः कथमेवंविधविलासहासप्रेयसीं समानां तामन्विद्य स्थास्यति चञ्चलश्चेतइति सोरस्ताडंविलपतः तथाविधे ते निरीक्ष्य श्रुतसमस्त-कथः कविः स्वगतं दैवमुपालभते यथा।

भा०—इस समय अठारह वर्ष की केवल अवस्था है काम की मार सही नहीं जाती क्यों कर जवानी कटेगी समझ में नहीं आता यदि किसी सुन्दर पुरुष से संबंध कर लें तो कुलको कलंक लगेगा विष खाकर मरें तो आत्मघात का पाप लगेगा ज्योंका त्यों रहना अवस्था के विरुद्ध है, दुबारा शादी के लिये कहें तो लज्जा आती है अब क्या होगा अगर ऐसा मानें तो आत्मा का तिरस्कार होता है यदि कहें कि यह विधाताका लेख है टल नहीं सकता, तो यह पुरु-षार्थ के विरुद्ध है यदि कहें कि हम अबला हैं तो झूंठ बोलना है बड़ों की आज्ञा मान कर यदि ऐसे ही बैठें तो शास्त्र के विरुद्ध है जो कुछ हुआ सो हुआ अगर ऐसा कहे तो वेद के विरुद्ध है यदि कहें कि यह परमेश्वर की लीला है तो उसका तिरस्कार करना है हर तरह से हमारे लिये दुःख उपस्थित हुए हैं, अभी हमारी माता को मरे हुए एक महींना भी नहीं हुआ, हमारे पिताजी ने दूसरा भी विवाह कर लिया बहुत ही शीघ्र हम दोनों की बराबर दूसरी माता हमारे घर में आवेगी तरह २ के जेवर और कपड़े उसके लिये तैयार किये जा रहे हैं नया मकान बनाया जा रहा है नये २ सामान तैयार हो रहे हैं, नया पलंग बनने को गया हुआ है अब आता होगा पिता जी को सब सुख दुबारा प्राप्त होगा परन्तु जब हमारी दूसरी माता आकर रहेगी तब हमारा चंचल चित्त कैसे रहेगा इतना कह दोनों छाती पीट २ रोने लगीं उन दोनों को रोती हुई देख और सब कथा सुन आर्यकवि अपने मन में दैव को उलाहना देते हैं—जैसे।

अहह ! दैव ! किमर्थमिदंत्वया-
प्रकृतिकोमलमूर्तिषु दर्शितम्।
विलसितं निजमाकृतिपेशला-
नसहते तव पातमियं सखी ॥ ५१ ॥

भा०स्वभाव से ही जिनकी अति कोमल आकृति है उन अबलाओं के ऊपर हे दैव ! तेने प्रहार करना क्यों आरम्भ किया है सुन्दर शरीर वाली यह हमारी सखी तेरे दिये हुये कष्ट को नही सह सकती ॥ ५१ ॥

बहुबलंयदिते शमयाशुता-
न्नगणयन्तिभवन्तमपीह ये ।
परकृतेविहितास्वबलासु ते-
कथय किं तवपौरुषमर्हति ॥ ५२ ॥

भा०—यदि तेरे में अधिक बल है तो उनके ऊपर प्रहार कर जो अपने पुरुषार्थ के समक्ष तुझ को गिनते भी नहीं केवल दूसरों के लिये जिनको विधाता ने बनाया उन अबलाओं के ऊपर क्या तेरा बल दिखाना योग्य है ॥ ५२ ॥

परभृतासु परैकहितास्वलं-
परवतीषु परार्पित पाणिषु ।
जगति तास्वबलासु बलोदयं-
धिगपि ते परिदर्शयतो न किम् । ॥ ५३ ॥

भा०—दूसरों के द्वारा पाली हुई दूसरों के लिये हित करने वाली स्वभावतः पराधीन पराए लिये जिनको दिया गया ऐसी निर्बल अबलाओं के ऊपर जोकि सर्वथा परार्थ ही के लिये बनाई गई बल दिखाते हुए तुझको सर्वथा धिक्कार है ॥ ५३ ॥

प्रथमतो जनकस्य नियन्त्रणा-
वयसि नायककर्मणि यन्त्रणा ।
भवति यास्वबलासु न युज्यते-
हतकदैव विषा तव यन्त्रणा ॥ ५४ ॥

भा०—बचपन में जिनके ऊपर पिता का शासन, जवानी में जिनके लिये पति का शासन होता है उन अबलाओं पर तेरा शासन कदापि नहीं होना चाहिये ॥ ५४ ॥

अतिनृशंसमिदं विधवासुते-
हतकदैव कटाक्षनिपातनम्।
यदि नचेत्कथमीदृशदुर्दशा-
प्रतिदिनं जगतोऽस्य समुद्भवेत् ॥ ५५ ॥

भा०—हे दैव ! अत्यन्त दारुण यह तेरा कटाक्ष यदि विधवाओं पर न पड़ता तो इस जगत की यह दुर्दशा कदापि न होती यह तेरी कृपा का ही प्रभाव है जो दिन प्रति दिन यह जगत डूबता ही चला जा रहा है ॥ ५५ ॥

न सफलं किल ते वलमागम-
प्रलयकर्तृषु भाति मते मम।
प्रथितमस्ति मयाद्य विलोकितं-
तवमते ननु दुर्वलमारणम् ॥ ५६ ॥

भा०—जो पुरुष सर्वथा शास्त्र का नाश करते चले जा रहे हैं उन पर तेरा जोर कुछ नहीं चलता यह हमें मालूम हो गया तेरे मत में दुर्वल का मारना ही लिखा है इसी लिये किसी ने लिखा है कि (दैवो दुर्वल घातकः) ॥ ५६ ॥

मृदुमुखीष्ववलासु जगत्सुखं-
कृतविपाकवशेन न लम्भयन्।
प्रहरतः खरखड्गशतेन ते-
वत दयापि न चित्तमुपागमत् ॥ ५७ ॥

भा०—कोमल मुखी अवलाओं को संसार का सुख न देकर और उलटा उनके ऊपर कष्ट गेरते और पैनी तलवार से प्रहार करते हुये तेरे चित्त में दया भी उत्पन्न नहीं हुई यह बड़े खेद की वात है ॥५७॥

नवमृणालकनालसुकोमला-
क्व भुवने सुकुमारबधूदशा।

घनशिलोच्चयसारचयोपमं-
क्व तव तासु कटाक्षनिपातनम् ॥ ५८ ॥

भा०—नवीन २ कमल तंतु के समान कोमल कहां जगत में अवलाओं की दशा कहां फिर कठिन पर्वत तुल्य उन पर तेरा कटाक्ष यह दोनों विरुद्ध हैं ॥ ५८ ॥

हृदयतश्चरणाय विनिर्गता-
विलयमेव वलादथवा गता ॥
हतकदैव निवोधय ते दया-
किमथवाऽऽकृतिरेव तवेदृशी ॥ ५९ ॥

भा०—अरे दैव ! जरा यह तो वतला दे कि क्या तेरी दया आज कल कहीं चुकने गई है या विलकुल उसका नाश ही हो गया या तेरी ही प्रकृति इस प्रकार की है कि तुझ को कदापि दया नही आती ॥ ५९ ॥

न तवमूर्तिरहो परिलभ्यते-
हृदि विचारशतैरपि मार्गिता ॥
यदि मिलेद्घनमुद्गरकुट्टनै-
रिहनयेयमलं विलयं क्षणात् ॥ ६० ॥

भा०—वहुतेरा हमने प्रयत्न किया कि कहीं तेरी मूर्ति मिल जावे परन्तु ढूंढ़ने पर भी वह न मिली यदि आज वह मिल जाती तो मारे २ मुद्गरों के उसका चकना चूर कर देता पर क्या करूं ॥ ६० ॥

कृतमिदं विधिना वहुपेशलं-
नरचिता तवमूर्तिरनुग्रहात् ।
यदि स विश्वपतिः परिकल्पये-
द्विलयमेव जगत्सकलं व्रजेत् ॥ ६१ ॥

यह विधाता ने बहुत ही अच्छा किया जो तुझ को मूर्तिमान नहीं वनाया यदि वह मूर्तिमान वना देता तो जगत मे कोई भी

प्रभवतु धनधान्यवृद्धिरुग्रा
निखिलमनोगतसिद्धिरस्तु भूयः ॥ ८८ ॥

भा०—इस प्रकार अनेक भावों से विधवाओं का कष्ट मिटाने के लिये जगदीश्वर की प्रार्थना कर समझाने के लिये आर्यकवि कहने लगे कि (मेरी प्यारी अनंगलतिके) अधीर मत हो हमारे मित्र श्रोत्रियजी शीघ्र ही तेरा बिवाह कर देगें न केवल तेरा ही किन्तु समस्त वाल विधवाओं का हम दोनों विवाह करावेंगे इतना कह आंसू पोछ रहे हैं पोछ ने पर (दोनों) भगबान आपका अभीष्ट पूरा करें आपकी वाणी पल्लवित एवं पुष्पित तथा फलित हो और आपकी सर्वत्र कीर्ति फैले शत्रु नष्ट हो धन धान्य की वृद्धि हो मनकी समस्त कामना सर्वदा सिद्ध हो ॥ ८८ ॥

सं०—इतिवदतः अनन्तरं श्रोत्रियउत्थाय गन्तव्यमधुनेति स्वगतं-विचार्य प्रकाशं वयस्यार्यकवे ! सुधातिशायिनीभिर्भवदालापलहरीभिः कस्यसचेतसश्चेतोविरमति तथापि समुपस्थितावश्यककार्यपारव-श्यं मुखरयतिमां किमपिनिवेदयितुं कर्तव्यंमयापि विधवोपकाराय-तत्तदावश्यकंकृत्यमतिवर्ततेचवाष्पयानसमयस्तदधुनानुजानीहिमांवृ-न्दावनगमनायेति ।

(आर्यकविः) किं तत्र गमनेऽतिगुरुकंमिदानं येनाकण्ठमुत्क-ण्ठयासमुत्कण्ठितोभवान्बहु कालानन्तरमागतमालापसुखमप्यवधीर्य गन्तुमनाइवलक्ष्यतेगतान्हांप्रतिनिधित्वेविपलान्यपिनिवेश्यन्तेचेन्ननि-वृत्तानि तत्तद्वार्तानांपदे वर्णाअपिस्थाप्यन्तेचेन्न समाप्ताः कथं पुनर्गमनानुज्ञाभ्यर्थनं (श्रोत्रियः) तत्रमे प्राणेभ्योपिप्रेष्ठः समुद्रादपि स्थेष्ठः पर्वतादपिगरिष्ठः प्रज्ञयाघनिष्ठो विद्ययावरिष्ठः सहृदयहृदयो हृदयमिवापरं दत्तसर्वस्वोवालविधवाप्रचारे सुगृहीतनामधेयो (राधाचरण गोस्वामी) वरोवर्ति तेनसाकमत्रविषये बिचारंविधा-य पुनःप्रतिपत्स्ये श्रीमतां दर्शनम् ।

भा०—इतना कहते ही (सोती जी उठ कर) अब चलना चाहिये ऐसा मन में विचार कर (खुलासा) कवि जी ! आपकी बातो से किस का मन भरना है इस लिये जरूरी कामों के कारण कुछ मैं भी कहना चाहता हूं मुझे भी विधवाओं का कष्ट दूर करने का कुछ उपाय सोचना है रेल का समय भी आ चुका अतः वृन्दा-वन जाने के लिये आज्ञा दीजिये।

(आर्य कवि) वहां पर ऐसा कौन जरूरी काम है जिससे आप वेवश होकर वहुत दिनों के बाद छेड़ी हुई सरस बातें छोड़ कर वहां जाना चाहते हैं गए हुये दिनों की जगह में यदि सेकंड भी लगाये जांय तो खतम नहीं हुये बातों की जगह में अगर वर्ण भी रक्खे जांय तो पूरे नहीं हुये फिर जाने की आज्ञा कैसी (श्रोत्रिय जी) वहां पर हमारे प्राणों से भी प्यारे स्थिरता में समुद्र जैसे गुरुता में पर्वत जैसे बुद्धिमान विद्यावान बिधवा विवाह के प्रचार में तन मन धन देने वाले राधाचरण गोस्वामी हैं उनसे इस विषय में बात कर फिर आपका दर्शन करूंगा।

सं०—(आर्यकविः) यद्येवंतर्हि निलिखकरकमलपल्लवतल्लज प्रतिमल्लपाणिपल्लवपल्लविता ममापीयं नतिततिस्तस्मै निवेदनीया यथाहमपि मिश्रभारादवतीर्णोभवेयं मयापिसांप्रतं विधवाविवाह-विरोधिभ्यो देयंविज्ञापनं शास्त्रार्थाय यथा नातिचिरादेव मेसख्योर्वि वाहःस्यात् (श्रोत्रियः) तथेति स्वीकृत्य नमति (आर्यकविः) प्रतिनमन् सखे वक्तव्यमस्तिकिंचित्तदपिश्रूयताम्।

एकेयं मदनस्य गेहविभवप्रख्यापिका मञ्जरी-
सान्या रूपमदादनंगलतिका मन्दामवस्थामिता।
रूपेणाथ गुणेन योग्यवयसे देयामयेतिस्मरन्-
यद्योग्यंविपदयेत्र तन्निभूतमेवाबुध्यतां नापरम् ८९

भा०—(आर्य कवि) अगर ऐसा हो तो मेरा भी विनय पूर्वक प्रणाम कह देना ताकि मैं भी मित्र भार से उत्तीर्ण होऊं मुझे भी अब विधवा विवाह के विरोधियों से शास्त्रार्थ करनेके लियेविज्ञापन देना है जिससे शीघ्र ही मेरी बहिनों का पुनर्विवाह हो (श्रोत्रिय) अच्छा कह कर कवि जी प्रणाम (आर्य कवि) श्रोत्रिय जी नमस्ते जरा एक बात कहनी है सुनिये।

एक तो कामदेव के गृह का सर्वस्व यह मदन मंजरी दूसरी कामदेव की विजय पताका अनंगलतिका ये दोनों योग्य वर को दी जांय इस लिये इस विषय में जो कुछ उचित हो चुप चाप समझ लीजिये ॥ ८९ ॥

सं०—(श्रोत्रियः) न विस्मरिष्यास्मेतत्कृत्यमिति गच्छति (आर्यकविः) तस्मिन्गते तद्गुणान्वर्णयन्तमनुस्मरन्निव स्वगतम्।

देयान्यहो भारतवर्षमध्ये-
मयापि विज्ञापनघोषणानि ॥
सनातनानामतनूनि षण्डे-
लसत्प्रतापानलसंनिभानि ॥ ९० ॥

[अथच]

अवलम्ब्य मतं सनातनं भुवि ये येविधवाकरग्रहे।
न मता विमतास्तएव मे शितवाणीशरलक्ष्यमुत्तमम् ॥ ९१ ॥

भा०—(श्रोत्रिय) इस बात को मैं कभी नहीं भूलूंगा कह कर चलते हैं (आर्य कवि) उनके जाने पर उनको याद करते हुए (मन में) मैंने भी आज भारतवर्ष के सनातनियों में इस बात का विज्ञापन बांटना है उसमें जो २ सनातनी विधवा विवाह के विरोधी बनेंगे वेही मेरी कठोर वाणी का लक्ष्य बनेंगे अर्थात् उनकी ही मैं खबर लूंगा ॥ ९१ ॥

सं०—इति निश्चत्य (प्रकाशं) वयस्येमदनमंजरि ! मद्वचनादुच्यतां सत्वरं महेन्द्रोयथा परित्यक्तावश्यककार्योभवानार्यकविना स्मरणविषयंनीयतइति (मदनमंजरी) तथेति प्रतिपद्य पुनश्चागत्य (सुकवे)

आनन्दविस्तारणपूर्णदक्षो-
महेन्द्रनामायमवैरिपक्षः ॥
यथाविनिर्दिष्टमुपेत्य योगं-
समागतः सत्वरमन्तिकं वः ॥ ९२ ॥

भा०—ऐसा निश्चय कर (खुलासा) मदनमंजरी ! जरा महेन्द्र से कहो कि तुम को बुलाया है (मदनमंजरी) अच्छा कह कर चलती है फिर लौट कर (कवि जी) आपकी आज्ञा सुनते ही यह मन्हेद्र आपके पास आ गया देखिये ॥ ९२ ॥

(महेन्द्रः) निबोधय मनोगतं विबुधगीतकीर्ते द्रुतं-
(आर्यकविः) समानयतु लेखनोपकरणानि सर्वाण्यपि ॥
(महेन्द्रः) निवेदय समागतं सकलमेतदन्यत् कवे-
(आर्यकविः) वदामि, लिख, सत्वरं विदितभाव ! विज्ञापनम् ॥९३

भा०—(महेन्द्र) कहिये कवि जी ! मेरे लिये क्या आज्ञा है (आर्य कवि) लिखने पढ़ने का सब समान एकत्र करो (महेन्द्र) लीजिये यह तो सब एकत्र हो गया और कहिये (आर्य कवि) जो कुछ मैं कहता जाता हूं वह लिखो ॥ ९३ ॥

विज्ञापनम्

भो भो वैधव्यदीक्षागुरवः ! स्वप्रयोजनसम्पादनेपटवः ! परदुःखविचारणेवटवः ! पौराणिकमतावलंबिनः ! पापाः ! पोपाः ! श्रूयतां योयं श्रुतिस्मृतिप्रमाणपरम्परापरिणतः प्राचीनपरम्पराप्रचलितः प्रबलतरवैज्ञानिकविचारप्रवीणजनप्रस्तुतो बालविधवाविवाहः स ययाकयाप्याशङ्कया लोकवैमत्यभयेनवा शास्त्रविचाराभावेनवा निजाज्ञानवशतोवा नानुमतश्चेत्सत्वरमत्रविषये मया समं विचाराय सन्नद्धाभवत भवताधुनाच सावधानाः नास्तिचेद्वैमत्यन्दत्तशरीरमनोधना विषयेत्रभवत यदनुमतमुभयत्र तदत्रलोकेविततमस्तु मास्तु समयविलम्बनमिति ।

विनिवेदयते निवेदकः-
कविरुग्रो विधवानुकम्पनः ॥
प्रमदाजनतापकृन्तने-
निशितस्तद्विपरीतभञ्जनः ॥ ९४ ॥

☞ अनुवादः ☜

☞ अए ! विधवापन की दीक्षा देने वालो ! अपने मतलव के हुशियारो ! दूसरे के दुःख के विचारने मे बच्चों ! पौराणिकों ! ठगों ! सुनो यह जो वेद और स्मृतियों से सिद्ध पहिले से चला हुआ विद्वानों का चलाया हुआ वाल विधवा विवाह है वह जिस किसी भय से लोक भय से या शास्त्र भय से या अपनी, मूढ़ता से तुम को न स्वीकार हो तो इस विषय में मेरे साथ शास्त्रार्थ करने के लिये तयार हो जाओ और सावधान हो जाओ यदि किसी प्रकार का विरोध नहीं है तो सहायक बन जाओ दोनों में जो तुम को स्वीकार हो वह स्वीकार करलो देर मत करो ।

☞ निवेदक—अखिलानन्दशर्मा कविरत्न ॥ ९४ ॥

सं०—महेन्द्रो विलिख्य नेत्रपात्रीक्रियतामयंलेखइत्यर्पयति (आर्य-कविः)पश्यन् अहे सुन्दरोयमक्षरविन्यासस्तदधुना सत्वरंमुद्राप्यतां पुनश्च भारतवर्षेवितार्यतां यथाऽऽगतजनेभ्यश्च दीयताम् अथच।

याः काश्चिदस्मिन्भुवने गृहांत-
र्वसन्ति वैधव्यमुपेत्य वालाः ॥
प्रसिद्धविज्ञापनवोधनेन-
विनष्टशोकाः सहसा क्रियन्ताम् ॥ ६५ ॥

सं०—किंबहुना नगरे२ ग्रामे२ घोषे२ संबाहे२ सर्वत्रप्रचारः क्रियतां यथा मूलतःसमुत्पाटिता विधवाजनतापवल्लरी नामावशेषतामुपेयात् नाशमियाच्च वैधव्यदीक्षागुरूणामाशंसा यया विस्मृतपरतापास्ते नानुविदन्ति परमर्मनिकृन्तनं सकलगात्रशोषणं पापिजनमनस्तोषणं भारतनाशघोषणं कलिकालसमारोहभूषणं सर्वसौख्यमोषणं विधवाहृदयाग्निसंधुक्षणं(महेन्द्रः)तथेतिप्रतिपद्यसविजयपताकंप्रचारकमण्डलमदाय व्रजति नियोजका नियोजयन्ति प्रचारकाः प्रचारयन्ति तानवलोक्य विष्णुमन्दिरपूजको[व्यभिचारदत्तः]सशोकं सतारस्वरम्

भा०—(महेन्द्र) लिख कर दिखाता है (आर्यकवि) देख कर वहुत अच्छा लेख है इसको शीघ्र छापो छाप कर भारतवर्ष में बांटते जाओ पास में आए हुए सभ्यों को दो और जो कोई इस संसार में घरों के अंदर वाल विधवाए बैठी हैं उन सबको दो और इसका आशय समझा कर उनका शोक शीघ्र नष्ट करो ॥ ६५ ॥

वहुत कहने से क्या नगर २ और ग्राम २ में प्रचार करो जिससे विधवाओं का कष्ट मूल से नष्ट हो जावे और पौराणिकों का मन चीता फीका पड जावे जो कि दूसरे के दुःखको विचारते ही नहीं है (महेन्द्र) अच्छा कह कर विजय की पताका हाथों में लिये हुए प्रचारकों को साथ लेकर चलता है प्रचार करने वाले प्रचार कर रहे हैं नोटिस लगाने वाले नोटिस लगा रहे हैं उनको देख विष्णु-मन्दिर का पुजारी (व्यभिचारदत्त) शोक से ऊंची आवाज कर।

भो भो सनातनमतानुगता यतध्वं-
सर्वत्रविस्तृतिमयं समुपैति मार्गः ॥
संरोधने विकसने किल यस्य सर्वा-
गुप्तक्रिया विलयमेष्यति पूजकानाम् ॥ ९६ ॥

भा०—अये ! पौराणिकों ! उठो इसके रोकने का कुछ प्रयत्न करो यह विधवा विवाह का प्रचार सर्वत्र हुआ जाता है यदि इसके रोकने का प्रयत्न नहीं करोगे तो मन्दिरों के पुजारियों का अब सारा भेद खुलता है ॥ ९६ ॥

यासां समूहमधिगत्य वयं सुखेन-
नानारसानुग कटाक्षनिरीक्षणानि ॥
विष्णो मिषेण तुलसीदलपादवारां-
नाशं समेति विधवानिचयः स सर्वः ॥ ९७ ॥

भा०—जिन विधवाओं के बीच में तुलसीदल और चरणामृत के बहाने से जा कर आनन्द पूर्वक आंखें लड़ाया करते थे आज वह विधवाएँ अपने २ घरों को होती हैं अर्थात् सबका विवाह होता जाता है ॥ ९७ ॥

शास्त्रप्रमाणनिचयैर्विधवाजनानां-
सिद्धे पुनःपरिणये गृहकर्मरागात् ॥
का शैशवे गतधवा विधवा दिनान्ते-
पूजामिषेण सुलभास्ति परिक्रमासु ॥ ९८ ॥

भा०—शास्त्रों के प्रमाणों से जब विधवाओं का विवाह सिद्ध हो जायगा तो सब विधवाएँ अपने २ घरों के कामों में लग जायगी सायंकाल के समय पूजा के बहाने से मन्दिरों की परिक्रमाओं में कोई नहीं मिला करेगी ॥ ९८ ॥

नानोपवासनवपारणभोजनाना-
मेकान्ततः प्रविलये विधवाविवाहैः ॥

शोषं गमिष्यति कथं न शरीरमेत-
द्धा दैवमेकपदएव विरुद्धमद्य ॥ ६६ ॥

भा०—व्रतों के बाद जो विधवायें हमको तरह २ के माल खिला कर आप खाया करती थीं आज वह सब विवाह होने पर व्रत छोड़ देंगी तो हमारा शरीर भी माल न मिलने पर सूख जायगा हा ! विधाता ! यह तेने क्या किया ॥ ६६ ॥

या मन्दिरोदरकथाश्रवणच्छलेन-
गेहाद्गताऽऽशुपथि मे शयनं समेति ॥
सा नायकस्य चरणौ निशि पीडयन्ती-
नायास्यतीत्यहह खेदमुपैति चेतः ॥ १०० ॥

भा०—जो विधवाए मन्दिरों में होने वाली भागवत आदि कथाओं के बहाने से घर से चल कर रास्ते में आए हुए पुजारियों के घरों में आनन्द करती थीं आज विवाह होने पर वह पति के चरण दवाया करेंगी यह सोच मेरा जी जल रहा है ॥ १०० ॥

नष्टं गतागतमनेकगृहांगनानां-
भ्रष्टं समोहितमनेकविधं खलानाम् ॥
कष्टं विनष्टमखिलं विधवाजनानां-
हृष्टं न किं वयमहो विधिना हताः स्मः ॥ १०१ ॥

भा०—अनेक घरों की कुलांगनाओं का आज आना जाना बंद हो गया अनेक प्रकार के दुष्टों का मन चीता भ्रष्ट हो गया विधवाओं का समस्त कष्ट नष्ट हो गया कहां तक कहें सभी आनन्दित हुए परन्तु हम लोग पत्थर से मारे गए ॥ १०१ ॥

सं०—किं करोमि क्वगच्छामि कोपि न शृणोति मे परिदेवितानि (क्षणंविचिन्त्य)भवतु विधवाजीवनस्यैव गृहंगच्छामीति गच्छतिनाति-दूरे तद्गृहमुपेत्य तमाव्हयन् ।

भो भो विधवाजीवन जीवनमेतत्प्रयाति ते नाशम् ॥
तस्माद्व्रज कुरुवादं जीवविनाशो न जीवनस्य वरम् ॥ १०२ ॥

भा०—क्या करें कहां जाय कोई भी हमारी बातें नहीं सुनता (कुछ देर सोच कर) चलो विधवाजीवन के घर चलें (चलता है) थोड़ी दूर पर उसके घर जाकर उसको पुकारता हुआ अरे विधवा-जीवन ! तेरा तो जीवन ही नष्ट हो गया उठ चल जल्दी जाकर शास्त्रार्थ कर जीवन का नाश अच्छा मगर जीविका का नहीं ॥१०२॥

सं०—इति पठति(विधवाजीवनः)पश्यन् ! अहो चिरकालमित्रं व्यभिचारदत्तः आगम्यतामितउपविश्यतां कथ्यतांच किमर्थमागमनं-(व्यभिचारदत्तः)उपविश्य निवेदितमागमनकारणं पुरस्तात्(विधवा-जीवनः)मयानाकर्णितं पुनर्वद(व्यभिचारदत्तः) पुनस्तदेवपठतिभोर-इत्यादि(विधवाजीवनः)समाकर्ण्य अरे!कोयमस्माकं यजमानानां पुन-र्विवाह द्वारा सुखंजनयति जीविकांचास्माकमपहरति गंतव्यमवश्यं तेन-सह मयाशास्त्रार्थाय(व्यभिचारदत्तः)वयस्य!भोजनभट्टस्याप्यत्र संम-तिरादेया यतः सविद्वान्(विधवाजीवनः)काक्षतिरेवं क्रियतां(उभौतद्गे-हंगच्छतः)नातिदूरे तद्गृहद्वारमेत्य(उभावुच्चैः) ।

अयि भोजनभट्ट!भोजनं तवनष्टं विधवाकरग्रहात् ॥
नवपायसशष्कुलीचयान्भवते कः प्रतिदास्यतेऽधुना ॥ १०३ ॥

भा०—इस प्रकार पढ़ते हैं (विधवा जीवन) देख कर ओहो ? हमारे पुराने दोस्त व्यभिचारदत्त जी आ गये आइये इधर बैठिये कहिये क्यों आना हुआ (व्यभिचारदत्त) बैठ कर आने का कारण तो मैंने पहिले ही कह दिया (विधवा जीवन) मैंने नहीं सुना फिर कहिये (व्यभिचारदत्त) फिर वही भो २ पढ़ता है (विधवा जीवन) सुन कर अरे ? वह कौन आदमी है जो हमारे यजमानों का दुबारा ब्याह करा कर हमारी रोटियों में खलल गेर रहा है उसके साथ हम जरूर शास्त्रार्थ के लिये चलेंगे (व्यभिचारदत्त) दोस्त ? इस मामले में जरा भोजनभट्ट की भी सलाह लेलो चूंकि वह विद्वान् है (विधवा जीवन) क्या हरज है ऐसा ही करो (दोनों उसके घर पर जाते हैं) दरवाजे

पर जाकर दोनों आवाज से अरे भोजनभट्टा ? वाहर निकल विध-वाओं की दुबारा शादी से तेरे न्यौते बन्द होते हैं अब तुझे खीर और पूड़ी नहीं मिला करेगी ॥ १०३ ॥

सं०—इति पठतः (भोजनभट्टः) सविस्मयमाकर्ण्य अरे ? केनमे भोजनं विघ्नितंकेनच विधवाविवाहप्रचारः कृतः किं नश्रुतं तेन मे पाण्डित्यं यदहंश्वासप्रश्वासैरेव सत्यनारायण दुर्गा शीघ्रबोधादिकं समापयामि शीतलास्तोत्र शनैश्चरस्तोत्र महिम्नःस्तोत्राणितुमत्समक्षे-नृत्यन्ति (उभौ) अतएवावां तवपार्श्वेसमायातौ तदिदानीं सत्वरं शास्त्रार्थायगन्तव्यमितिनिश्चित्य सर्वेगमनमारभन्ते (समक्षे) तैलिकः ! भोभोजनाः ! तैलंगृह्यतां तैलम् (व्यभिचारदत्तः) अहह महदपशकुनं गच्छतामुपगतम् ॥

यन्मनीषितफलं हृदि कृत्वा गम्यते विशदनाय चिराय ।
तन्न सेत्स्यति पुरः समुपेतं तैलिक,गमनमत्र निदानम् ॥१०४॥

सं०—तथापि निजमानरक्षायै तत्रगन्तव्यं (यद्भाव्यंतत्तुभविष्यत्येव) नात्रसन्देहइति वदन्गच्छति (मध्ये महेन्द्रः) भो २ घण्टा पथगामिनः श्रूयताम् ॥

दलमेतदलं हस्ते कृत्वायदि गमिष्यथ ।
भविष्यथ तदातत्र नोचेद्बहिरवस्थितिः ॥१०५॥

भा०—इस प्रकार पढ़ते हैं (भोजनभट्ट) मए अचम्भे के सुन कर अरे मेरे भोजन में किसने विघ्न गेरा है और किसने विधवा विवाह का प्रचार किया है क्या उसने मेरा पाण्डित्य नहीं सुना जोकि मैं श्वास और प्रश्वासों में ही सत्यनारायण वग़ैरा २ खतम कर देता हूं और शीतला स्तोत्र वग़ैरा तो मेरे सामने नाचते हैं (दोनों) इसी पण्डिताई पर तो हम तेरे पास आए ही है इस लिये अब जल्दी शास्त्रार्थ के लिये चलो ऐसा निश्चय कर सब चलते हैं (सामने से आकर) तेली तेल लेलो तेल पुकार रहा है (व्यभिचारदत्त) ओह

बड़ा भारी अपशकुन हुआ है जिस बात को विचार कर शास्त्रार्थ के लिये जाते हैं वह बात सिद्ध न होगी क्योंकि तेली सामने आ गया ॥ १०४ ॥

भा०—तौ भी अपने मान की रक्षा के लिये वहां जाना चाहिये जो होना होगा वह तो होहीगा इसमें सन्देह नहीं कह कर चलता है (बीच में महेन्द्र) अए सड़क पर जाने वालो ? सुनो अगर इस विज्ञापन पत्र को हाथ में लेकर वहां जाओगे तब तो पण्डाल के अन्दर जा सकोगे नहीं तो बाहर खड़े रहोगे ॥ १०५ ॥

सं०—इति वदति सर्वे तदाकर्ण्य हस्ताहस्तिकया विज्ञापनदलान्यादाय पठन्ति (भोजनभट्टः) सत्वरं पठित्वा मनसि स्वगतं विचारयति यथा ।

विलिखितमस्ति सुपर्णे भविताबादः सुरोचिते बचसि ।
नहि शक्यः सचकर्तुं केनाप्यस्माकमुत्वरं मध्ये ॥ १०६ ॥

न गम्यते चेदपमानसिद्धिः-
प्रगम्यते चेन्नहि कार्यसिद्धिः ॥
इतीवचित्ते वहुसिद्ध्यसिद्ध्यो-
र्ममास्ति युद्धैकरसो विवादः ॥ १०७ ॥

सं०—परं वहुविधविद्वज्जनदर्शनाय मण्डपशोभानिरीक्षणायचावश्यंगन्तव्यमितिविचार्य (प्रकाशं) वयस्य विधवाजीवन ! किं कुत्रचिदद्यकौतिकमस्ति नवीनमितिवृत्तंवाविद्यतेयत्तस्य बिलोकनाय विभवोचितैर्वस्त्रालंकारैरुपभूषिता नगरवध्वइमाः समग्रमपिमार्गमावृत्य मदमंथरांगतिमभ्यसन्त्यइव मन्दस्मितहसितकौमुद्यः परस्परालापपेशलानि रहस्यवृत्तानि तिर्यग्विलोकनैरतुमोदयन्त्यो भुवनविजिगीषोर्मदनस्यविजयपताकाइव शिंजितचोरितजननयना व्रजन्त्यइवलक्ष्यन्ते तदावेदय तावत् ।

भा०—ऐसा कहता है सब सुन कर हाथों हाथ लेकर पढ़ते हैं (भोजनभट्ट) जल्दी पढ़ कर मन २ में बिचारता है इस पत्र में लिखा है कि शास्त्रार्थ संस्कृत वाणी में होगा हम लोगों में कोई संस्कृत जानता ही नहीं है अब क्या करें न चलें तो अपमान होता है चलते हैं तो काम नहीं बनेगा ॥ १०६-१०७ ॥

परन्तु अनेक प्रकार के विद्वानों के देखने के लिये और पिण्डाल की शोभा भी देखने के वास्ते जाना अवश्य चाहिये इतना बिचार कर (खुलासा) मित्र विधवाजीवन ? क्या कहीं आज तमाशा है या कोई नई बात हुई है जिसके देखने के लिये यह नगर की स्त्रियां अच्छे २ कपड़े और जेवर पहिन कर सब रास्ता घेरती हुई धीमी २ चाल से जाती हुई मुसका २ कर आपस में कही हुई गुप्त बातों को आँखों के इशारे से मानती हुई कामदेव की विजय पताका जैसी जेवरों के झनकार से मनुष्यों की आँखें चुराती हुई चलतीं नजर आ रही हैं जरा बताओ तो सही।

सं०—(बिधवाजीवनः) बयस्य किंब्रवीमि नकिमपिकौतुकं नापिनवीनमितिवृत्तं सर्वाअपीमा बालबिधवा भगवतायौवनेनसादरमनुगृहीता यथेष्टवरसमागमनियमप्रस्तावप्रतीक्षया निजामवस्थांसर्वेभ्योनिवेदयितुं तत्रैवयान्ति यत्रशास्त्रार्थोभविता? याश्चेमाजरत्यःपृष्ठतोनुयान्ति तास्तासामेवजनन्यः सुतानांपुनर्विवाहेनसौख्यमनुभवितुं मंगलगीतानिगायन्त्यो जगदीश्वरंप्रार्थयन्त्यः समागतार्यकविप्रभृतिपूजनाय तत्तदुचितसामग्रीव्यग्रकरतलास्तदधःपतनभिया मन्दमन्दमनुव्रजन्ति दृश्यतां।

भा०—(बिधवा जीवन) मित्र क्या कहूं न कहीं तमाशा न कही नई बात यह सब बाल बिधवा है और वहीं पर जा रहीं हैं जहां शास्त्रार्थ होगा और जाती हैं इस लिये कि देखें हमारे लिये क्या २ प्रस्ताव पास होते हैं साथ ही अपनी हालत भी सब के सामने पेश करेंगी और सच्ची २ हालत बयान करेंगी और जो यह इनके

पीछे २ जा रही हैं यह इनकी मातायें हैं। उनका शीघ्र पुनर्विवाह हो इस लिये मंगल गाती हुई ईश्वर को स्मरण करती हुई पण्डितों के पूजन के लिये सब सामग्री लेकर धीरे २ जा रही हैं ताकि कुछ गिर न पड़े देख लो इसमें क्या कहना है।

सं०—(भोजनभट्टः) अवश्यद्रष्टव्योयंविषयस्तदधुना तथा गम्य तां यथा नातिक्रामेतसमय इतिवदन्द्रुतंपरिक्राम्यंश्च स्वगतं पठति तद्यथा।

[चतुर्भिःकुलकम्]

अतिविमलसत्पताकं लसत्पताकाभिरुन्नतं परितः ॥
किमिदं सुरसदनाभं सुरसदनाभां दधाति नवलदमीम् ॥१०८॥
नानाविधनवदीपकरश्मिकदम्बप्रबन्धबहुबन्धम् ॥
कस्य जनस्य न चेतः सचेतसो नैवलोभयेदेतत् ॥ १०६ ॥
वर्णविचित्रितबहुविधमुनिजनचित्रैर्विचित्रनवयूपम् ॥
जनयति भाषणशंकां जनस्य कस्याद्य मानसे न चिरात् ११०
कुत्रचिदानतचत्वरमुन्नतमन्यत्र तत्वरैः प्रचितम् ॥
सत्वरमीक्षणहरणं जित्वरमेतद्विभाति सुषमाणाम् ॥ १११ ॥

(भोजनभट्ट) यह उत्सव तो अवश्य ही देखना है इसलिये अब इस चाल से जाना चाहिये जिससे कि समय न निकल जावे इस प्रकार कहता और जल्दी २ चलता हुआ भी मंडपको देख मन २ में कहता हैं कि यह चारों तरफ से चमकती दमकती झंडियोंवाला इंद्रभवन जैसा सुंदर तरह २ की रोशनी से चमचमाता हुआ खंभों में लगी हुई तसवीरों से दमदमाता हुआ कहीं पर ऊंचा कहीं पर नीचा यह मंडप आज किस के मनको नहीं लुभा रहा है॥ १०८-१११॥

सं०—परमस्यमध्ये जनोपमर्देन गमनंदुष्करं तदभावेच दर्शनं-दुर्लभमितिविचार्य(प्रकाशं)वयस्य विधवाजीवन!कतमेनपथाप्स्यतेस्य-मध्यं पूर्वेण पश्चिमेन दक्षिणेणोत्तरेणवा (विधवाजीवनः)सर्वतः पश्य-न्!अये?इतोविधवाकदंबकमितोविद्वन्निकुरंबमितोदर्शकजनव्रज इतश्च

तत्पक्षपातिजनावस्थानं परमस्मत्सावर्ण्यंकुत्रापिनोपलभ्यते विवर्णे-ष्वयुक्तमवस्थानं वर्णवाह्यताचेत्तदप्यनुचितं वर्गमंतरावस्थानंपरयोगाय ग्राहकताराहित्यंसर्वथातिरस्काराय (भवतु) निपातभावैनैवात्र-कार्यं साधनीयमितिमत्वा सहगतगेषु स्थानिवद्धावेन सर्वानवस्थाप्य स्वयमपि वैशाखनंदनोचिते देशे निषीदति ।

भा०—परंतु इसके अंदर जाना मुशकिल है विना अंदर जाए आनंद नहीं आने का इतना विचार कर (खुलासा) मित्र विधवाजीवन? किस रास्ते से अंदर चलें (विधवाजीवन) चारो तरफ देखकर ओहो इधर विधवाए बैठी हैं इधर विद्वानों का समूह है इधर दर्शक लोग हैं इधर उनके तरफदार वैठे हैं मगर हमारे जैसे मनुष्य कहीं नहीं दीखते वे मेल में बैठना अच्छा नहीं खैर कहीं गिर गिरा कर ही काम निकालेंगे ऐसा विचार कर अपने साथियों को इधर उधर विठलाकर गधों के बैठने योग्य स्थल में अर्थात् धूल पर ही आपभी बैठता है ॥

सं०—सर्वेषूपविष्टेषु (महेंद्रः)भोरमंडपोदरगताजनाः!सर्वेप्यधुना सावधाना भवंतु नातिचिरादेवार्यकविरिदानीं दृष्टिपथमवातरिष्यति भवतामित्युक्त्वा मंगलपाठप्रयोजनं वैदिकपद्यंपठति यथा ।

बृहस्पतिर्नः परिपातु विश्वा-
दुतोत्तरस्मादधरादघायोः ॥
इंद्रः पुरस्तादुत मध्यतो नः
सखा सखिभ्यो वरिवः कृणोतु ॥ ११२ ॥

भा०—सब के बैठने पर (महेंद्र) अए! पंडाल के अंदर बैठे हुए नर नारियों! अवसावधान हो जाओ थोड़ी ही देर के बाद आप के सामने आर्यकवि आयेंगे इतना कह कर मांगलिक (अथर्व वेद के) मंत्रको पढ़ता है जिसका आशय यह है कि बृहस्पति परमात्मा (अघायोः) दूसरों के लिये बुरे चाहने वाले हिंसकों से हमारी सर्वतः

रक्षा करें चाहे वह (पश्चात्) पश्चिम से आवें चाहे उत्तर से आव चाहे सामने से आवें चाहे (अधर) पाताल से आवें चाहे किसी वीच से आवें इस प्रकार सर्वतः रक्षा करके मित्र रूप इंद्र मित्र रूप हम लोगों को (वरिवः) धन (कृण्णोतु) दें ॥ ११२ ॥

सं—इति पठित मंगलपाठे महेंद्रे विधवाजनतापनिवृत्तये जगदीश्वरं ध्यायन्नार्यकविरुच्चैर्विज्ञापनदलं पठति (सर्वे समाकर्णयन्ति) विज्ञापनश्रवणानन्तरं (पापमूर्तिः) प्राह भो२ विधवाविवाह प्रचारका विद्वांसः! यदिदं भवद्भिरुपक्राम्यते विधवानां पुनः परिणयनं तन्न वेदे नस्मृतौ नवेदांगोपांगेषु नेतिहासेप्रतीयते वर्ततेचेत्तत्तत्प्रमाणैः साध्यतां (आर्यकविः) वैदिकं प्रमाणमत्रापेक्ष्यतेचेदवहितः शृणु।

इस प्रकार महेंद्र के मंगल पाठ खतम होने पर विधवाओं की दुःख निवृत्ति के लिये ईश्वर का ध्यान धर आर्यकवि विज्ञापन पढ़ते हैं (सब सुन रहे हैं) सुनने के बाद (पापमूर्ति) अप! विधवा विवाह के प्रचारको! यह जो आप दुवारा विधवाओं का विवाह कराते हैं वह न वेद में है न स्मृतियों में है न इतिहास में है यदि है तो उसको प्रमाणों से सिद्ध कीजिये (आर्यकविः) यदि आप इस विषय में वेद का प्रमाण मांगते हैं तो सावधान होकर सुनिये।

उदीर्ष्व नार्यभिजीवलोकं-
गतासुमेतमुपशेष एहि ॥
हस्तग्राभस्य दिधिषोस्तवेदं-
पत्युर्जनित्वमभि संबभूथ ॥ क ॥
[अथर्व० कां० १८ अ० ३ मं० २]
ऋग्वे० वं० १० अ० २ सू० १८]

सं०—पदार्थः) हे 'नारि!' धर्मपत्नि! त्वं 'गतासुं' गतप्राणं 'एतं, पतिं 'उपशेषे' उपेत्य तेन साकं शयनंकरोषि 'उदीर्ष्व' उद्गच्छ अस्मात्पतिसमीपादुत्तिष्ठ 'जीवलोकमभि' जीवंतं प्राणिसमूहमभिलक्ष्य

'एहि' आगच्छ त्वं 'हस्तग्राभस्य' पाणिग्राहवतः 'दिधिषोः' धारयितुः पुनर्विवाहेच्छोरित्यर्थः तव 'पत्युः' इदं एतत् जनित्वं जायात्वं अभि-संवभूथ अभिमुख्येनप्राप्नुहि । (मंत्रोयं तैत्तिरीयारण्यके ६ प्रपाठके १ अनुवाकेपि माधवेनैनं व्याख्यातः (वेदार्थप्रदीपेच) ।

भा०—(पदार्थ-) 'हे नारि' हे धर्मरत्नि 'त्वं' तू 'गतासुं' मरे हुए 'एतंपतिं' इस पतिको प्राप्त हो कर 'उपशेषे' इस के पास सो रही है 'उदीर्ष्व' इस मरे हुए पति के समीप से उठ 'जीवलोकमभि' जीते हुए मनुष्यों को उपलक्ष में रख कर 'एहि' आजा और हस्तग्राभस्य' दुवारा हाथ पकड़ने वाले 'दिधिषोः' पुनर्विवाह की इच्छा वाले तव पत्युः अपने पतिका 'इदं' यह 'जनित्वं' जायात्वको 'अभिसंवभूथ' सामने आकर प्राप्त कर (यह मंत्र तैतिरीय आरण्यक ६ प्रपाठक १ अनुवाक में भी माधव ने व्याख्यान किया है इसी प्रकार वेदभाष्य में भी यह वेद का पहिला प्रमाण है ।

(अथच)

इयं नारी पतिलो*कं वृणाना—
निपद्यत उप त्वा मर्त्य प्रेतम् ॥
धर्मं पुराणमनुपालयन्ती—
तस्यै प्रजांच द्रविणंच धेहि ॥ ख ॥
(अथर्व० का० १८ अ० ३ म० १)

सं०—(पदार्थः) हे मर्त्य हे सजीवपुरुष पतिलोकं पतिसुखं वृणाना कामयमाना इयंनारी प्रत्यक्षेऽवस्थिताविधवा[illegible]ी प्रेतं प्रकर्षेणलोकान्तरमितं पतिं (विहायेतिशेषः) पुराणं प्राचीनं अनादिकालसिद्धं धर्मं सुकृतंसुष्ठुपुनर्विवाहरूपंकृतं कर्म अनुपालयन्ती स्वीकुर्वती त्वा त्वाम्उपसमीपे निपद्यते प्राप्नोति (त्वांभजतेइत्यर्थः) तस्यै तथाविधायै भार्यायै त्वं इह अस्मिन्भूलोके प्रजां सन्ततिं (सन्ततिजन्यसुखं) द्रविणं धनंच धेहि प्रयच्छ द्वितीयमिदं वैदिकं प्रमाणम् ।

* लोकृदर्शने ? लोक्यते दृश्यते सुखंदुःखंवा यस्मिन्नितिलोकः भूलोक इतिसायणः ? ?

भा०—(पदार्थ) हे (मर्त्य) हे जोवित पुरुष ? (पतिलोकं) पति के सुख को (वृणाना) चाहती हुई (इयं नारी) यह स्त्री (प्रेत) मरे हुए पति को छोड़ कर (पुराण) प्राचीन (धर्म) धर्म को (अनुपालयन्ती) स्वीकार करती हुई (त्वा) तुझ को (उपनिपद्यते) प्राप्त होती है (तस्यै) उसके लिये (त्वं) तू (इह) इस भूलोक में (प्रजां) पुत्र (द्रविणं) धन (धेहि) दे (यह दूसरा वैदिक प्रमाण है) ॥

[अपिच]

कुहस्विद्दोषा कुहवस्तोरश्विना-
कुहाभिपित्वं करतः कुहोषतुः ॥
को वां शयुत्रा विधवेव देवरं-
मर्यं न योषा कृणुते सधस्थ आ ॥ ग ॥

[ऋग्वे० मं० १० अ० ३ सू० ४० मं० २]

सं०—(अत्रयास्कभाष्यम्)हेअश्विनौ ! क्वस्विद्रजौ भवथःक्वदिवा क्वाभिप्राप्तिंकुरुथः क्ववसथः कोवां [यजमानः] शयुत्रा शयने विधवा देवरं द्वितीयं पतिमिव [देवरःकस्माद्द्वितीयोवरउच्यते] सधस्थे सहस्थाने परिचचार यथा मर्यं द्वितीयवरं योषाविधवा आकृणुते अभिमुख्येन कुरुते इति पत्यन्तरकरणे तृतीयं वैदिकं प्रमाणम् ॥

भा०—(यहां पर यास्क भाष्य उद्धृत करते हैं) हे अश्विनौ !! हे विवाहित स्त्री पुरुषों ? (क्वस्विद्रात्रौभवथः) कहां रातको रहते हो (क्वदिवा) कहां दिन में रहते हो (क्वाभिप्राप्तिंकुरुथः) कहां लौकिक व्यवहार करते हो (क्ववसथः) कहां उठते बैठते हो और (कोवां) कौन तुम दोनों का यजमान (शयुत्रा) पलंग पर (विधवा देवर मिव) बिधवा दूसरे पति को जैसे (देवर शब्द से यहां दूसरे पति का ग्रहण है) सधस्थे एक मकान में (परिचचार) सेवा करता है जैसे

(मर्यं) दूसरे बर को (योषा) बिधवा स्त्री (आकृणुते) सामने से आकर प्राप्त होती है (यह दूसरे पति के होने में वेद का तीसरा प्रमाण है) ॥

[अन्यच्च]

या पूर्वं पतिं वित्त्वाथान्यं विंदतेऽ[1]परम् ॥
पञ्चौदनं च तावजं ददातो न वियोषतः ॥ घ ॥

[अथर्व कां० ६ अ० ३ सू० ५]

सं०-(पदार्थः) (या स्त्री (पूर्वम्) पूर्वविवाहलब्धम्(पतिं)प्राणेश्वरं(वित्त्वा)लब्ध्वा(विद्लृलाभे (अथ)तस्मिन्मृते सति(अन्यम्)(अपरं)पुनर्विवाहलब्धं विन्दते) लभते(तौ) च)तौ पुनर्विवाहितस्त्रीपुरुषौपुनरपि (अजम्)नजायन्तइत्यजाः(भर्जितधानाः)तैर्जैः भर्जितधान्यैः कृतं(पञ्चौदनं) पंचविधभर्जितधान्यौदनं यदि (ददातः) अग्नौ जुहुतश्चेत्(न)(वि(योषतः)पुनर्वियोगं न प्राप्नुतः(इति पत्यन्तरकरणे चतुर्थं वैदिकं प्रमाणम्) ॥

भा०—(पदार्थ) (या) जो स्त्री (पूर्वम् पहिले (पतिं) पतिको (वित्वा) प्राप्त होकर (अथ) उसके मरने पर (अन्यं) दूसरे (अपरं) सुन्दर पति को (विंदते) प्राप्त करती है (तौ च) वे दोनों दुवारा बिवाहित स्त्री पुरुष (यदि) अगर (अजं) भुने हुए अन्न से बने हुए (पंचौदनं) पांच प्रकार के भात को (ददातः) अग्नि में हवन करें तो (नवियोषतः) फिर वियोग को प्राप्त नहीं होते (यह पुनर्विवाह में वेद का चौथा प्रमाण है) ॥

[तथाच]

समानलोको भवति पुनर्भुवाऽपरः पतिः ॥
योऽजं पञ्चौदनं दक्षिणां ज्योतिषं ददाति ॥ङ॥

[अथर्व० कां० ६ अ० ३ सू० पांचवां]

---

१ न विद्यते पर उत्कृष्टो यस्मान्सोपरस्तं (अपरं) अद्वितीयम् ।

सं०-(पदार्थः)(यः)विधवापतिः (अजं) भर्जितधान्यकृतं (पंचौदनं) पंचविधमोदनं (तथा) (ज्योतिषं) हिरण्यादिमयीम् (दक्षिणा) दक्षिणामपि ददाति) जुहोति ददातिच (सः) विधवापतिः (अपरः) उत्कृष्टः (पुनर्भुवा) द्विवारमूढ़या नार्या (पुनर्भूशब्दनात्रद्विवारमूढाया नार्या ग्रहणं(अ*क्षता-भूयः संस्कृता पुनर्भूरिति)प्रमाणात्(† अक्षता संस्कारमात्रदूषिता पुनः संस्कृताचेत्पुनर्भूरितिकथ्यते)तथा(समानलोकः(तुल्यलोकः)मानेनसहितः समानः समानश्चासौलोकः समानलोकः)प्रतिष्ठितजन दर्शनीयः-(भवति)जायतेवैदिकमेतत्पञ्चमं प्रमाणं प्रमाणांतराण्यप्यस्मिन् भगवति वेदे विद्यन्ते ॥

भा०—(पदार्थ) (यः) जो बिधवा का पति (अजं) भुने हुए अन्न से बनाया हुआ (पञ्चौदनं) पांच प्रकार का भात (तथा) और (ज्योतिषं) चांदी या सोने की (दक्षिणा) दक्षिणा भी (ददाति) हवन करता और देता है (सः) वह (अपरः) द्वितीय (पतिः) विधवा का पति (पुनर्भुवा) दुवारा प्राप्त हुई स्त्री से (यहां पर पुनर्भूशब्द का अर्थ विधवा है) (समानलोकः) प्रतिष्ठासहित सुखको (भवति) प्राप्त होता है या प्रतिष्ठितजनों के देखने योग्य होता है (यह विधवा विवाह में वेद का पांचवा प्रमाण है इसी प्रकार और भी बहुत से प्रमाण वेद में विद्यमान हैं जो प्रसंगवश स्थल २ में उद्धत किये जायेंगे ॥

[आराध्यै दिधिषुपति मितितैत्तिरीयब्राह्मणम् ३-४-४]

सं०—'दिधिषु'शब्देनात्र (पुनर्भूवोग्रहणं) तेन [दिधिषुपतिमिति]-शब्दस्य (द्विवारमूढायाः) पतिमित्यर्थो लभ्यते (पुनर्भुर्दिधिषूरूढ़ेति-कोषः) ।

[नैकस्यैवहवःसहपतयइत्यैतरेयब्राह्मणम् पं० ३ स्व० २२]

सं०—"अनया श्रुत्या(सहेति)युगपद्बहुपतित्वनिषेधो विधीयते नतु समयभेदेन तस्मात्क्रमेण (क्रमशः) पत्यन्तरं भवतीतिगम्यते अतएव

---

* विष्णुस्मृतौ १५ अध्याये पुनर्भूलक्षणमेतत् (याज्ञवल्क्य स्मृतावप्येवम्) ॥

† पुनर्भूलक्षण व्याख्येयं (केय वैजयंत्याम्) ॥

(नष्टेमृतेत्यादिना) मनुनापि स्त्रीणां पत्यन्तरंस्मर्यते"इतिव्याख्याद्वतम्-[मित्रमिश्र] प्रणीत (वीरमित्रोदये) ॥

[तस्मान्नै का द्वौ पती विन्देत]

इतिवचनन्तु केवलं सहैव बहुपतिनिषेधपरकं (क्रमशः)पत्यन्तरकरणेतु भगवान्वेदएव प्रमाणं यथा ॥

भा०—(आराध्यै दिधिषुपतिं) यह तैतिरीय ब्राह्मण का वचन है इसमें 'दिधिषु' शब्द से उस स्त्री का ग्रहण है जिसका दुबारा विवाह हुआ हो (अमरकोष में भी) दिधिषु शब्द इसी अर्थ में आया है (नैकस्यै वहवः सहपतयः) इस ऐतरेय ब्राह्मण में जो अनेक पतियों का निषेध है वह [सह] शब्द से ज्ञात होता है कि एक साथ न हो (क्रमशः) समय २ पर करने में कोई निषेध नहीं है इसीलिये [नष्टे-मृते] इस पद्य में मनु ने भी स्त्रियों के लिये दूसरे पति का विधान किया है (यह व्याख्यान) वीर मित्र कृत वीर मित्रोदय में किया गया है [तस्मान्नैका द्वौपती विंदेत] इस वचन में जो एक स्त्री के लिये दो पति का निषेध है वह एक समय के लिये है समयांतर में करने के लिये तो भगवान्वेद ही प्रमाण हैं—देखिये ॥

सोमः प्रथमो विविदे गन्धर्वो विविद उत्तरः ॥
तृतीयो अग्निष्टे पतिस्तुरीयस्ते मनुष्यजाः ॥ च ॥
[ऋ० मं० १० स्त्रो० ८५ मं० ४०]

सं०—अत्र मन्त्रे प्रथमस्य पत्युः सुकुमारात्मकत्वात्सोमत्वं द्वितीयस्य भोगाभिज्ञत्वाद्गन्धर्वत्वं तृतीयस्य विषयकालेऽग्निवद्दा(जनकत्वादग्नित्वं चतुर्थादारभ्यैकादशपर्यन्तं साधारणवलवीर्यवत्वान्मनुष्यत्वं विवक्षितं स्त्रीणामपि संज्ञाभिराभिर्व्यवहरणं कर्तव्यं अतएव)

दशास्यां पुत्रानाधेहि पतिमेकादशं कृधि ॥ छ ॥
[ऋ० मं० १० अ० ७ सू० ८५ मं० ४५]

सं०—इतिमंत्रेण क्रमश एकादश पतीनां करणं भगवता वेदेन युक्तिमत्प्रतिपादितमन्यथा वेदेषु परस्परविरोधापत्तेः ॥

भा०—(सोमः प्रथमो) इस मन्त्र में पहिले पति को (सुकुमार) मुलायम होने से [सोम] पदवी है दूसरे पति को संभोग में चतुर होने से [गन्धर्व] पदवी दी गई है तीसरे को विषय के समय अग्नि के समान प्रचण्ड होने से [अग्नि पदवी] दी गई है चौथे से लेकर बल एवं बीर्य के सामान्य होने से मनुष्य पदवी दी गई है इसी लिये [दशास्यां] इस मन्त्र में क्रमशः अधिक से अधिक ग्यारह पति तक बिवाह करने का विधान पाया जाता है नहीं तो वेद में भी बिरोध आ जायगा।

सं०—पूर्व २ बिलये पर २ गमनन्तु नानाप्रमाणैरनुगतं [परं] पुत्रोत्पादनासमर्थेन जीवतापिभर्त्रा पुरुषांतरयोगेन [पाण्डुवत्) अपत्यकरणं व्यपदिश्यते यथा वेदएवभगवानत्र प्रमाणम्।

अन्यमिच्छस्वसुभगे पतिंमत्

[ऋ० मं० ७ अ० ६ सू० ७ मं० ५]

सं०— (हे सुभगे) जीवितपतित्वात्सौभाग्यवति ? (मत्) पुत्रोत्पादनासमर्थान्मत्तः (अन्यपति) सवर्णं द्वितीयं पतिंपुत्रोत्पादनाय (इच्छस्व) कामयस्व नाहंपुत्रोत्पादने तवकामवेदनाविचारणेच समर्थः इत्यर्थः (अथच)

अन्यंन मदाहनो याहि तूयं-
तेन विवाह रथ्येव चक्रा ॥

[ऋ० मं० ७ अ० ६ सू० ७ मं० ३]

सं०—(अत्र दुर्गा चार्य कृतोऽर्थः) (हे आहन्तः) आहननशीले पत्नि ? त्वं (मत्) मत्तः (अन्येन) पुरुषान्तरेण सह (तूयं) क्षिप्रं

मैथुनं (याहि) तेनैव सह (विवाह) विवाहपूर्वकं मैथुनकर्म एयात्मा नमभ्युच्छस्व (अति घनिष्ठ सम्बन्धे तदनुगमनेच दृष्टान्तमाह) (रथ्येव) रथ्यायां मार्गइत्यर्थः (चक्रा इव) शकटचक्रयुगलमिव अतएव मनुनापि वेदानुकूल्यादुक्तं यथा ।

देवराद्वा सपिण्डाद्वा स्त्रिया सम्यङ् नियुक्तया ।
प्रजेप्सिताऽधिगन्तव्या सन्तानस्य परिक्षये ॥

[म० अ० ६ श्लो० ५६ ॥]

भा०—पहिले २ पति के मरने पर उत्तर २ पति के साथ बिवाह करना तो बहुत से प्रमाणों से सिद्ध होता है परन्तु सन्तान के पैदा करने में असमर्थ जीता पति भी दूसरे पति के योग से राजा पाण्डु के समान अपनी स्त्री में सन्तान पैदा कर सकता है देखिये वेद का प्रमाण (अन्यमिच्छस्व) इसका अर्थ यह है कि (हे सुभगे) सुहागिन तू [मत्] मेरे से भिन्न (अन्य पति) मेरे समानवर्ण दूसरे पति को सन्तान के लिये (इच्छस्व) चाह मैं अब सन्तान पैदा करने की ताक़त नहीं रखता हूं और भी देखिये (अन्येनमदाहनोयाहितूयं) यह दूसरा प्रमाण है इसका अर्थ दुर्गाचार्य का किया हुआ ही लिखते हैं (हे आहनः) हे पति ? तू (मत्) मेरे से (अन्येन) अन्य दूसरे पुरुष के साथ (तूयं) जल्दी (याहि) जा और उसी के साथ (बिवह) बिवाह करके कार्य में रत हो जिस प्रकार (रथ्ये) मार्ग में (चक्राइव) रथ के चक्र (पहिये) का जोड़ा जैसे जाता है इसी से यह सिद्ध होता है कि गृहस्थ रूपी गाड़ी वैदिक मार्ग में स्त्री पुरुष रूप दो चक्र से चल सकती है एक से नहीं इसी लिये मनु ने भी वेद के अनुकूल कहा है कि वंश के नाश के समय में देवर से या और किसी सपिण्ड पुरुष से सन्तान पैदा कराना स्त्री को चाहिये इत्यादि २

सं०—एवं पराजयमाप्ते पापमूर्तौ (अज्ञानराशिः) प्राह भोजनाः ।

नान्यस्मिन् विधवानारी नियोक्तव्याद्विजातिभिः
अन्यस्मिन्हि नियुञ्जाना धर्म्मंहन्युः सनातनम् ॥

(म० अ० ६ श्लो० ६४)

सं०—इति मनुना प्रोक्तत्वात्कथंपुरुषांतरेण सह योगेयुक्तः कथ्यताम्(आर्यकविः) भोअज्ञानराशे! मनुप्रोक्तेस्मिन्पद्ये (द्विजातिभि) रितिपदोपादानेन अन्यस्मिन्)इतिपदं शूद्रादिव्यवच्छेदपरं न समानवर्णव्यवच्छेदपरं (नोचेत् [सासस्वाचविशःस्मृते] इत्यादिना ब्राह्मणार्थे ब्राह्मणक्षत्रियविशां राजन्यार्थेक्षत्रियवैश्यशूद्राणां वैश्यार्थे वैश्यशूद्रयोः शूद्रार्थेशूद्रस्यैवेति कथं तेनैवोक्तम् आशतमेतावता द्विजन्मनां द्विजन्मभिः समं विवाहादिकरणम् ॥

भा०—इस प्रकार पापमूर्ति के परास्त होने पर अज्ञानिराशि बोला कि महाशयो ! यह जो मनु ने कहा है कि विधवाको अन्य के साथ द्विजातिगण न लगावें इससे तो यह सिद्ध होता है कि विधवा विवाह और नियोग नहीं करना चाहिये फिर आप लोग उसका विधान किस तरह करते हैं (आर्यकवि) अजी अज्ञान के ढेर जी ! सुनिये मनुके कहे हुए उस पद्य में [द्विजातिभिः] इस पद के आने से [अन्यस्मिन्] पद शूद्र आदि के साथ निषेध के लिये आया है नहीं तो मनु ने ही ब्राह्मण के लिये तीन वर्ण की कन्या क्षत्रिय के लिये दो वर्ण की कन्या का विधान क्यों किया इससे यह सिद्ध हो गया कि द्विजाति की स्त्रियां द्विजातिपतियों के साथ नियोग आदि करें औरों से नहीं ॥

सं०—एवं पराजयमिते अज्ञानराशौ (अधर्ममूर्तिः)प्राह भोजनाः

नोद्वाहिकेषु मन्त्रेषु नियोगः कीर्त्यते क्वचित् ॥
न विवाह विधानुक्तं विधवावेदनं पुनः ॥

(म अ० ६ श्लो० ६५)

सं०–इति मनुदर्शनात्कथं नियोगः कथं च विधवायाः पुनः करग्रहणम् (आर्यकविः) भोअधर्ममूर्ते! श्रूयताम् विवाहनियोगयोः प्रकरणपार्थक्या-देकत्र मंत्रविन्यसनं व्यर्थम् अन्तोहि विवाहसमयः अन्यश्च नियोगस्य अतः पृथगेव तन्मन्त्रविन्यसनं भगवतावेदेन कृतं यन्मयोपदर्शितं प्राक् यत्तूच्यते विवाहविधौ विधवावेदनमपि नोक्तमिति तन्मंदम् दृश्यताम् [वीरसूर्देवृकामास्योना]इति विवाहप्रकरणप्रोक्तएव मंत्रे[देवकामा]इति पदेन विधवावेदनस्य विहितत्वात्[देवादेवस्तुदेवर] इतिकोषप्रमाणात् [देवरो द्वितीयवर इति] पूर्वमुक्तत्वात् ॥

भा०—इस प्रकार अज्ञानराशि के परास्त होने पर (अधर्ममूर्ति) बोला महाशयो! मनु ने लिखा है कि विवाह के मंत्रों में नियोग का प्रसंग नहीं आता न फिर विधवा विवाह का फिर नियोग और विधवा विवाह क्योंकर माना जावे (आर्यकवि) सुनो अधर्ममूर्तिजी! विवाह और नियोग इन दोनों प्रकरणों के भिन्न होने पर एक प्रकरण में दोनों के मंत्रों का रखना ठीक नहीं क्योंकि विवाह का समय दूसरा है और नियोग का समय दूसरा है इसलिये नियोग के मंत्रों का अलग ही रखना ठीक था जैसा कि मैंने दिखलाया है और जो आप कहते हैं कि विवाह के मंत्रों में विधवा विवाह का भी प्रसंग नहीं आता है वह आपकी भूल है देखिये [वीरसूर्देवृकामा] इस विवाह प्रकरण के मंत्र में [देवृकामा] पद विधवा विवाह को साबित करता है और देवर [नाम दूसरे वर का है यह मैंने पहिले बतला दिया है]।

सं०—एवं परास्ते अधर्ममूर्तौ (दुःखमूर्तिः)प्राह भोजनाःएकबारं दत्तायाः कन्यायाः पुनः कन्यात्वाभावे कथं दानं केनचवा कर्तव्यम्-(आर्यकविः)भोदुःखमूर्ते ! श्रूयताम् ।

"कन्याशब्दोऽयं पुंसाभिसम्बन्धेपूर्वके-
संप्रयोगे विनिवर्तत'इति[कन्यायाःक-
नीनच्] तिसूत्रभाष्ये महर्षिः पतञ्जलिः"

सं०—अतएव [पाणिग्राहे मृते कन्या]इति वसिष्ठः [परिणीता न रमिता कन्यकेति[बृहस्पतिः]सप्तपौनर्भवाः कन्या इति काश्यपः(नारदोऽप्याह) ॥

कन्यैवाक्षतयोनिर्या पाणिग्रहणदूषितेति ॥

(वसिष्ठोऽप्याह)

अद्भिर्वाचाच दत्तायां म्रियेताथो वरो यदि ॥
कृतमन्त्रोपनीतापि कुमारी पितुरेव सा ॥
यावच्चेदाहृता कन्या मन्त्रैरपि सुसंस्कृता ॥
देयान्यस्मै विधानेन यथा कन्या तथैवसेति ॥

भा०—इस प्रकार अधर्म्ममूर्ति के परास्त होने पर दुःखमूर्ति बोले महाशयो ! एक बार दी हुई कन्या के कन्यात्व नष्ट होने पर फिर दान कैसे होगा और कौन करेगा (आर्यकवि) अजी दुखमूर्ति जी ? सुनियेगा (कन्यायाःकनीनच) इस सूत्र के महाभाष्य में महर्षि पतंजलि कहते हैं कि 'जबतक कन्या पति के साथ शयन नहीं करती है तब तक कन्यात्व नष्ट नहीं होता है' इसीलिये वसिष्ठ बृहस्पति कश्यप और नारद भी इस बात में सहमत हैं 'जल और वाणी के द्वारा दी हुई कन्या भी संयोग से पहिले वर के मर जाने पर कन्या ही बनी रहती है उसको दूसरे वर के लिये देने में कोई हरज नहीं है यह सब ऋषियों का मत है और ख़ास कर वसिष्ठजी का ॥

सं०—यद्दानमपि तत्पितृ मातृ भ्रातृ मातुलमातामहैः सर्वेषामभावे सजातीयैश्च विधिवत्प्रदेयं यथाह भगवान्नारदः प्रजापतिश्च ।

पिता दद्यात्स्वयं कन्यां भ्रातावानुमतः पितुः ॥
मातामहो बांधवश्च सकुल्यो बान्धवस्तथा ॥ क ॥
मातात्वभावे सर्वेषां प्रकृतौ यदि वर्तते ॥
तस्यामप्रकृतिस्थायां कन्यां दद्युः स्वजातयः ॥ ख ॥

(अपिच)

यदि सा बालविधवा बलात्त्यक्ताथवा क्वचित् ॥
तदा भूयस्तु संस्कार्या गृहीत्वा येन केनचित् ॥ ८ ॥

सं०—दृश्यतेपि जगति पुरुषसंयोगादनन्तरमेव कन्यात्वगमनं कथमन्यथा ॥

तमुद्वहंतं पथि भोजकन्यां
रुरोध राजन्यगणः सदृप्तः ॥
(इतिरघौ ७ सर्गे ३५)

अथावमानेन पितुः प्रयुक्ता-
दक्षस्य कन्या भवपूर्वपत्नी ॥
(कुमारे १ सर्गे २१)

कन्यां दशरथो राजा शान्तां नाम व्यजीजनत् ॥
(उत्तररामचरिते)

सं०—परिणीतानामपिभर्त्रा भवभूतिकालिदासाद्यैः कन्याशब्देनैव संबोधनंकृतमाख्यातमेतावता संयोगात्परमेव कन्यात्वगमनं न ततःप्रागितिज्ञेयम् ॥

भा०—दान भी उसका नारद के मत से कुवारा मा बाप भाई मम्मा नाना और किसी के न रहने पर अपनी २ ज्ञाति के पुरुष दे सकते हैं प्रजापति के मत से सब कोई कर सकते हैं देखा भी जाता है कि संसार में संयोग के बाद ही कन्यापन का नाश माना जाता है नहीं तो रघुवंश में कालिदास ने इन्दुमती के विवाह होने पर भी उसको कन्या क्यों कहा उत्तर रामचरित में भवभूति ने शांता के विवाह होने पर भी उसको कन्या कहा इस से सिद्ध होता है कि बिना संयोग के कन्यात्व नहीं जाता है ॥

सं०—एवं पराजिते दुःखमूर्तौ (शोकमूर्तिः)प्राह भो जनाःश्रुतिस्मृतिविरुद्धयं किमाश्रयणीयं स्मृतिषु कस्याः सांप्रतं प्रामाण्यंप्रोच्यताम्-(आर्यकविः) भो शोकमूर्ते ? श्रूयताम् ॥

धर्मं जिज्ञासमानानां प्रमाणं परमं श्रुतिः ॥
द्वितीयं धर्मशास्त्रन्तु तृतीयं लोकसंग्रहः ॥ क ॥
(भारतेऽनुशासनपर्वणि)

अर्थकामेष्वसक्तानां धर्मज्ञानं विधीयते ॥
धर्मं जिज्ञासमानानां प्रमाणं परमं श्रुतिः ॥ ख ॥
(मनोःप्रथमाध्याये)

श्रुतिस्मृतिपुराणानां विरोधो यत्र दृश्यते ॥
तत्र श्रौतं प्रमाणंतु तयोर्द्वैधे स्मृतिर्वरा ॥ ग ॥
(याज्ञवल्क्यस्मृतौ)

श्रुतिस्मृतिपुराणेषु विरुद्धेषु परस्परम् ॥
पूर्वं पूर्वं बलीयः स्यादिति न्यायविदो विदुः ॥ घ ॥
(चतुर्विंशतिस्मृतिसंग्रहे)

केवलं शास्त्रमाश्रित्य न कर्तव्यो विनिर्णयः ॥
युक्तिहीनविचारेतु धर्महानिः प्रजायते ॥ ङ ॥
(स्मृतितत्वेबृहस्पतिवचनम्)

न यत्र साक्षाद्विधयो न निषेधाः श्रुतौ स्मृतौ ॥
देशाचारकुलाचारैस्तत्र धर्मो निरूप्यते ॥ च ॥
(मदनपारिजाते)

स्मृतेर्वेदविरोधेतु परित्यागो यथा भवेत् ॥
तथैव लौकिकं वाक्यं स्मृतिबाधे परित्यजेत् ॥ छ ॥
(प्रयोगपारिजाते)

भा०—इस प्रकार दुःखमूर्ति के परास्त होने पर शोकमूर्ति कहने लगे महाशयो ! जहां पर श्रुति और स्मृति का विरोध आपड़े वहां पर क्या मानना चाहिये और आज कल कौनसी स्मृति माननी चाहिये (आर्यकवि) सुनिये शोकमूर्ति जी महाराज सुनिये धर्म की खोज करने वालों के लिये सब से उत्तम प्रमाण वेद है दूसरा धर्म शास्त्र

और तीसरी लोक रीति (क) यही सिद्धान्त मनु का भी है (ख) जहां पर श्रुति स्मृति और पुराणों का परस्पर विरोध हो वहां पर सर्वोपरिवेद मानना चाहिये और स्मृति एवं पुराण के विरोध में स्मृति उत्तम माननी चाहिये (ग) यही सिद्धान्त चौवीस स्मृतियों का भी है (घ) बिना युक्ति के केवल प्रमाणों से धर्म के निश्चय करने में धर्म की हानि होती है इसलिये युक्ति अवश्य माननीय होनी चाहिये यह सिद्धान्त बृहस्पति का है (ङ) जहां पर वेद और स्मृतिके द्वारा न विधि हो और न निषेध हो वहां पर देशाचार और कुलाचार से धर्म का निर्णय करें (च) वेद के विरोध में जिस प्रकार स्मृति त्याज्य होती है इसी प्रकार स्मृति के विरोध में लौकिक व्यवहार छोड़ देने योग्य होता है (छ) ॥

लोके प्रेत्यवा श्रुतिस्मृतिविहितोधर्मस्तदलाभे शिष्टाचारः प्रमाणम्!

(वसिष्ठ १-४-५)

देशजातिकुलधर्माश्चाम्नायैरविरुद्धाः सन्तः प्रमाणम्-!

(गौतम अ० ११ सू० २०)

देशधर्मजातिधर्मकुलधर्माञ्छ्रुत्यभावादब्रवीन्मनुः!

(वसिष्ठ अ० १ सू० १७)

(देशकालसमयभेदेन धर्मभेदकरणं प्रसिद्धं यथाह मनुः)

अन्ये कृतयुगे धर्मास्त्रेतायां द्वापरे परे ॥
अन्ये कलियुगे नृणां युगह्रासानुरूपतः ॥

(म० अ० १ प० ८५)

सं०—परं कलियुगे पराशरस्मृतेरेव प्राधान्यं तस्यास्तदर्थमेव प्रणीतत्वादतएव ॥

कृतेतु मानवाधर्मास्त्रेतायां गौतमाः स्मृताः ॥
द्वापरे शंखलिखिताः कलौ पाराशराः स्मृताः ॥ क ॥

(इतिसंगच्छतेपराशर अ० १ प० २४)

सं०—सर्वेष्वपि कल्पेषु पराशरस्मृतेः कलियुगधर्मपक्षपातित्व-मिति माधवाचार्य्यः।

"न च कलिनिषिद्धस्यापि युगान्तरीयधर्मस्यैव(नष्टेमृते)इत्यादि-पराशरवाक्यं प्रतिपादकमितिवाच्यं कलावनुष्ठेयान्धर्मानेव वक्ष्यामिति प्रतिज्ञाय तद्ग्रन्थप्रणयनात्"इति(भट्टोजिदीक्षितकृत मुख्यचतुर्विंशति स्मृतिव्याख्यान भागः" आयातमेतावता कलौ पराशरवचनानां प्राधान्यं तेषुच स्पष्टमेव पराशरमुनिना पत्यन्तरकरणं प्रतिपादितं यथा

नष्टे मृते प्रव्रजिते क्लीवेच पतिते पतौ ॥
पञ्चस्वापत्सु नारीणां पतिरन्यो विधीयते ॥ क ॥

सं०—पराशरस्मृतौ अ० ४ प० २८, वृद्धमनौ अ० ६ प० १११, अग्निपुराणे अ० १५४, नारदस्मृतौ द्वादशपदे सर्वत्रेदं पद्यमुपलभ्यतेऽतोबहुमतमेतत् ॥

भा०—इस लोक में अथवा परलोक में वेद और धर्मशास्त्र के द्वारा बतलाया हुआ धर्म ही मानना चाहिये उसके अभाव में शिष्टाचार प्रमाण मानने योग्य होता है यह वसिष्ठ का मत है (१) वेद के अनुकूल देश धर्म और जाति और धर्म कुल धर्म मान मानने चाहिये किन्तु वेद से विरुद्ध नहीं यह गौतम का मत है (२) मनु ने वेद के प्रमाण न मिलने पर देश और जाति एवं कुल के धर्म कहे हैं यह वसिष्ठ जी का मत है (३) देश काल और समय भेद से धर्म में भी तबदीली होती है यह मनु का सिद्धान्त है (४) परंतु कलियुग में पराशरस्मृति ही मानने योग्य है मनु नहीं यह माधवाचार्य और भट्टोजिदीक्षित का मत है (५) उस पराशरस्मृति में (नष्टे मृते) इस पद्य में साफ़ तौर पर स्त्री के लिये दूसरे पति का विधान पाया जाता है ॥

सं०—एवं पराजिते शोकमूर्तौ (रण्डागुरुः) प्राह भो जनाः! पाराशर्येस्मिन्पद्ये पताविति व्याकरणविरुद्धं (पतिःसमासएवेति) घिसंज्ञानियमात्पकिंच गौणपतिपरकं पतिशब्दं मत्वा नञोयोगादपताविस्यर्थ-

स्तत्रकर्तुंशक्यते विधीयतइत्यत्राप्येवं नञःसम्बन्धादविधीयतइत्यर्थलाभे कथमस्यपद्यस्य विधानपरत्वम् (आर्यकविः) भो रण्डागुरो? श्रूयतां तु उच्यते भवता पतावित्यशुद्धं तन्न (पतिरित्याख्यातःपतिरिति) विग्रहेस (नामधातुप्रक्रिया) सिद्धं पताविति पदमतएव पूर्वोक्तं त्वदुक्तं सूत्रं तत्र न प्रवर्तते दर्शितमेतदेव (दीक्षितेन मनोरमायां यत्तूच्यते नञोयोगाच्च गौणपतिपदकत्वमिति तत्प्रकरणविरुद्धं प्राचीनाचार्यप्रमाणाभावात् [आख्यातिकक्रियया सहनञः सम्बन्धाभावात्] विधीयतइत्यत्रापि नञोऽर्थ विधानं अकारोपद्यव्ययंमन्यतेचेत्पूर्वरूपं न भवितुमर्हत्यतो अत्र नञः संगतं सांगत्यं सिद्धमेतावता लोकान्तरंगते पत्यौ विधवायाः पुनः परिणयनम् ॥

भा०—इस प्रकार शोकमूर्ति के परास्त होने पर रंडागुरु बोले कि महाशयो! पराशर के श्लोक में [पतौ] यह पद अशुद्ध है क्योंकि समास में ही पतिशब्द की घिसंज्ञा होती है अन्यत्र नहीं और गौड़पति वाचक पतिशब्द मान कर नञ के योग से अपतौ अर्थ कर सकते हैं एवं क्रिया में भी न कार योग लगा सकते हैं (आर्यकवि) सुनो [पतिरित्याख्यातःपतिः] इस विग्रह में नाम धातु से यह पद बनता है इसलिये (पतौ) अशुद्ध नहीं यही समाधान दीक्षितने मनोरमा में किया है नञ का लगाना प्रकरण विरुद्ध है और किसी आचार्य से सहमत नहीं है [आख्यातिक क्रिया के साथ में नञ का सम्बन्ध नहीं होता है) यह वैयाकरणों का सिद्धान्त है अकार को यदि अव्यय मानोगे तो उसका पूर्वरूप नहीं होगा इसलिये नञ का लगाना ठीक नहीं है इससे यह सिद्ध हुआ कि पति के मर जाने पर बालविधवा अथवा समस्त विधवाओं का दुबारा विवाह अवश्य कर देनाचाहिये ॥

सं०—एवं पराजयमुपागते रण्डागुरौ (वंचकोपाध्यायः) प्राह भो जनाः ॥

वेदार्थोपनिबन्धत्वात्प्राधान्यं हि मनोः स्मृतम् ॥
मन्वर्थविपरीतातु यास्मृतिः सा न शस्यते ॥ मनुः ॥

सं०—इति वचनात्कथं पराशरस्मृतिप्रतिपादितस्य विधवावेदनस्य प्रामाण्यं तथाविधस्यपत्युः करणे मनुप्रमाणाभावात्(आर्यकविः)-भोवंचकोपाध्याय!श्रूयताम्(स्मार्य्यते वेदगतोऽर्थोऽनयेतिस्मृति)रिति निर्वचनेन वेदार्थोपनिबन्धत्वात्सर्वासामपि स्मृतीनां प्राधान्यं न केवलं मनोरेवकिमधिकं प्रशस्तम्वा मनुना प्रतिपादितं यतस्तदनुमतंस्यात् केवलमर्थवादमात्रमेतत् प्रशंसापरंवा कथनं वास्तु वेदानुकूलसकलमहर्षिप्रणीतस्मार्तवचनानां विशेषतस्तत्रदृष्टिपरंपरानुगतानांच प्रामाण्यं (यदुच्यते)पत्यंतरकरणे मनोः प्रमाणाभावइति तत्र स्वयमेव मनुना(देवराद्वासपिंडाद्वेति)नवमाध्याये(नष्टेमृते)इत्यादिनाच स्वाभिप्रायप्रकटनपुरःसरं पत्यन्तरकरणं प्रतिपादितम् ॥

भा०—इस प्रकार खण्डागुरु के परास्त होने पर (वंचकोपाध्याय) बोला कि महाशयो ! वेदानुकूल होने से मनु प्रधान माना जाता है और मनु के विपरीतस्मृतियों का प्रमाण नहीं माना जाता फिर पराशर स्मृति में कहे हुए विधवा विवाह को आप क्यों मानते हैं (आर्यकवि) सुनो (वेद के अर्थों का जो स्मरण दिलाती हो वें स्मृति) होती है इस लक्षण के अनुकूल जो स्मृतियां हों वे सब मानने योग्य हैं मनु के ऊपर कोई कलंगी नहीं लटक रही है और वेद के विरुद्ध होने पर मनु भी मानने योग्य नहीं है और आपने यह जो कहा है कि मनु ने कहीं विधवा विवाह का विधान नहीं किया है यह आप की भूल है देखिये ९ अध्याय में (देवराद्वासपिंडाद्वा) इस श्लोक में मनु ने स्वयं इसका विधान किया है ॥

(अथच)

या पत्यावा परित्यक्ता विधवा वा स्वयेच्छया ॥
उत्पादयेत्पुनर्भूत्वा स पौनर्भव उच्यते ॥

(मनु अ० ९ प० १७५)

सा चेदक्षतयोनिः स्याद्गतप्रत्यागतापि वा ॥
पौनर्भवेन भर्त्रा सा पुनः संस्कारमर्हति ॥ १७६ ॥

(वौधायन)स्मृतावापि(साचेति)पद्यं(४-१-१६)पूर्णमुपलभ्यते
"याक्लीवंपतितमुन्मत्तं वा पतिमुत्सृज्यान्यंपतिं विंदते मृतेवा"
"सा पुनर्भूभवतीति वसिष्ठः (अ० १७ सू० २०)"

सं०—शेषमन्यत्पुनर्भूविषयकं प्रागुदाहृतं सिद्धमेतावता मनोर्वौधायनस्य वसिष्ठस्यच मते विधवायाः पत्यंतरकरणं दृश्यतां प्रत्यक्षे किं प्रमाणम् ॥

भा०—और भी देखिये मनुजी कहते हैं जो स्त्री पति ने छोड़ दी हो या विधवा हो गई हो या अपनी इच्छा से किसी की होकर जिसको उत्पन्न करे वह पौनर्भव कहाता है उसके साथ में अक्षतयोनि कन्या का पुनर्विवाह होना चाहिये वौधायन ऋषि भी इसका अनुमोदन करते हैं (जो स्त्री अपने पति को किसी कारणवश या उस के मरने पर छोड़ कर किसी दूसरे से विवाह करती है वह पुनर्भू कहलाती है) यह वसिष्ठ का मत है इतने में यह सिद्ध हो गया कि इन तीनों ऋषियों के मत में विधवा का विवाह करना चाहिये ॥

सं०—एवं पराजिते वंचकोपाध्याये (कलहवर्धनः)प्राह भो जनाः

अपत्यलोभायातुस्त्री भर्तारमतिवर्तते ॥
सेह निन्दामवाप्नोति पतिलोकाच्च हीयते ॥
(म० अ० ५ प० ६१)

सं०—इति मनुवचनात्कथं देवरेणसह(द्वितीयवरेणसमं)नियुक्तया स्त्रियासुतोत्पादनं कर्तुं शक्यते(आर्यकविः)श्रूयतां यदिदं भवता पद्यं नियोगनिषेधविषये प्रमाणत्वेनोपन्यस्यते तत्प्रकरणविरुद्धं नेदं पद्यमेतद्विषयपरकं दशास्यांपुत्रानाधेहोति भगवतोवेदस्य दशपुत्रोत्पादनप्रेरणया यास्त्री वानप्रस्थाश्रमे पुनरपि कामवेदनया पुत्रलोभेन वा भर्तारमुल्लंघ्य तदाज्ञामतिक्रम्य वर्तते सा लोके निंदनीयाभवतीतिपद्यार्थो न नियोगपुनर्विवाहयोर्निषेधपरकः ॥

भा०—इस प्रकार वंचकोपाध्याय के परास्त होने पर (कलहवर्धन) बोले कि महोदयो ? मनु में लिखा है कि जो स्त्री संतान के लालच

से पति की आज्ञा का उल्लंघन कर काम करती है वह निंदनीय होती है आप उसका दूसरा विवाह बतलाते हैं यह कैसे (आर्यकवि) सुनिये यह जो पद्य इस प्रस्तुत हुए विषय के प्रमाण रूप में आपने दिया है वह इस विषय का नहीं है पद्य का अर्थ यह है कि दश संतान के बाद जो स्त्री वानप्रस्थ आश्रम में भी कामवश होकर इस काम केलियें पति को विवश करती है वह निंदित होती है नियोग और विधवा विवाह का इसके साथ में कुछ सम्बन्ध नहीं है ॥

सं०—एवं पराजयंप्राप्ते कलहवर्धने(कलयुगमूर्तिः)प्राह भो जनाः बाल विवाहकरणे को दोषः कथ्यतां (आर्यकविः)श्रूयताम् ॥

ऊनषोडषवर्षायामप्राप्तः पंचविंशतिम् ।
यद्याधत्ते पुमान्गर्भं कुक्षिस्थः स विपद्यते ॥
जातोवा न चिरंजीवेजीवेद्वा दुर्बलेंद्रियः ।
तस्मादत्यंतबालायां गर्भाधानं न कारयेत् ॥
(सुश्रुतेशरीरस्थाने अ० १०)

सं०—इति सुश्रुतवचनाद्यदर्थं विवाहः क्रियते तत्फलविघात-एव तत्रदोषः किंचकन्यानां बाल्ये विवाहेन तासां पठने विघ्नपतनं द्वितीयोदोषः, तासांब्रह्मचर्यविघातनं तृतीयोदोषः मंत्रार्थपरिज्ञानम-न्तरा प्रतिज्ञाभंगकरणं चतुर्थोदोषः,अन्येप्येवं दुर्बलसन्तानोत्पत्ति-रोगाल्पजीवनप्रभृतयो बहवो दोषा भवन्ति ।

भा०—इस प्रकार कलहवर्धन के परास्त होने पर कलियुगमूर्ति बोले कि महाशयो ! बाल विवाह करने में क्या दोष है (आर्यकवि) सुनो सुश्रुत में लिखा है कि सोलह वर्ष से कम अवस्थावाली कन्या में पच्चीस वर्ष से कम अवस्था वाला पुरुष यदि गर्भाधान करे तो गर्भ गिर जाता है यदि सन्तान पैदा हुइ भी तो दुर्बल और कम जीने वाली होगी इसलिये इतनी अवस्था तक गर्भाधान न करे यह पहिला दोष है और बचपन में विवाह होने से उनके पढ़ने

में विघ्न होगा, उनका ब्रह्मचर्य नष्ट होगा प्रतिज्ञा मन्त्रोंके अर्थ न जानने पर प्रतिज्ञाका न निवाहना आदि अनेक दोष हैं।

सं०—एवं पराजयमुपागते कलियुगमूर्तौ (गोमयगणेशः) प्राह भो जनाः ! कन्यानां ब्रह्मचर्ये किम्मानं किञ्च तासामध्ययने प्रोच्यतां (आर्षकविः) श्रूयताम्।

ब्रह्मचर्येण कन्या युवानं विन्दते पतिम्।
(अथर्व० कां० ११ अ० ३ सू० ७ म० १८)

सं०—(अत्रमाधवः) कन्या अकृतविवाहास्त्री ब्रह्मचर्यंचरन्ती तेन ब्रह्मचर्येणकर्त्रा युवानं युवत्वगुणोपेतं पतिं विन्दते लभते" इति वेदःप्रमाणम् ब्रह्मचर्ये कन्यानां, तत्समयनियमनं यथा सुश्रुते सूत्रस्थाने

पञ्चविंशे ततो वर्षे पुमान्नारीतु षोडशे।
समत्वागतवीर्यौ तौ जानीयात्कुशलोभिषक् ॥ क ॥

सं०—तासामध्ययनेपि बहूनि प्रमाणान्युपलभ्यन्ते यान्यनुपदं मया प्रदर्श्यन्ते।

इयं नार्युपब्रूते लाजानावपन्तिका।
आयुष्मानस्तु मे पतिरेधन्तां ज्ञातयो मम ॥
अर्यमणं देवं कन्या अग्निमयक्षत-।
तामद्य गाथां गास्यामि या स्त्रीणाम् ॥
(दीक्षामयष्ट कन्या)

कृताभिषेकां हुतजातवेदसं-
वगुत्तरासंगवतीमधीतिनीम्।
दिदृक्षवस्तामृषयोभ्युपागम-
न्न धर्मवृद्धेषु वयः समीक्ष्यते ॥ क ॥

भा०—इस प्रकार कलियुगमूर्ति के परास्त होने पर गोबरगणेश बोले कि महाशयो ! कन्याओं के ब्रह्मचर्य रखने में क्या प्रमाण है और

उनके पढ़ने में (आर्यकवि) सुनिये (ब्रह्मचर्येणकन्या) यह अथर्व वेद का मन्त्र कन्याओं का ब्रह्मचर्य सिद्ध करता है उसकी अवधि सुश्रुत के (नारीतुषोडशे) इस वचन से सोलह वर्ष की मानी गई है उनके पढ़ने में (इयंनार्युपब्रूते) इस मन्त्र में नारी पद का आना और (कन्याअग्निमयक्षत) इस मन्त्र में कन्या पद का आना प्रमाण है इतिहास भी कहता है कि देखिये जिस समय पार्वती जया और विजया दोनों सखियों को लेकर तप करने गई उस समय वल्कल धारण, गाती लगाना, अग्निहोत्र करना और वेद पढ़ना आदि वह सब करती थी।

सं०—एवं पराजयं प्राप्ते गोमयगणेशे (गवेन्द्राचार्यः) प्राह भो जनाः ! अस्माकं मते विधवानां परिणयनमयुक्तं नोचेन्मन्दिरेषु देवदास्यः का भविष्यंति काश्च नृत्यं करिष्यति कासांच वयमाचार्या भविष्यामः कथं जीविष्यामः अस्मदनुगामिनां (रामस्नेहिनां) च कथं निर्वाहो भविष्यति कथंच निरक्षर भट्टाचार्याणां त्रिश्रृंगणां येषां मते—

भाले श्रृंगत्रयी, माला गले वाला करे मुखे।
रावरावेति कथनं जीवनोपायसाधनम् ॥ क ॥

(आर्यकविः) श्रूयतां देवदास्यस्तु भवतां..........भविष्यन्ति ता एव नृत्यमपि करिष्यन्ति निज..........भवद्भिराचार्य्यैर्भाव्यं जीवनोपायस्तु भारवाहित्वेन सुकरः रामस्नेहिना मुपरिदंडपातेन भाव्यं त्रिश्रृंगाणां कारागृहगमनेन किमितिचेद्राजराजेश्वरराज्ये एभिरेवोपद्रवः क्रियते धनं ह्रियते स्त्रियो धावं २ नीयन्ते बालाश्चोर्यंते संधिर्दीयते नायातिचेन्मनसि दृश्यतामयोध्यापुरीस्थं वृत्तं हरिद्वारस्थंच यद्भारते प्रसिद्धं पत्रेषु च मुद्रितमास्ते।

भा०—इस प्रकार गोबरगनेश के परास्त होने पर गवेन्द्राचार्य बोले कि महाशयो ! हमारी समझ में तो विधवाओं का विवाह नहीं होना चाहिये क्योंकि इनके विवाह होने पर (देव दासी) बन

हमारे मन्दिरों में कौन नाचेगीं ये ही हमारे यहां चढ़ाई जाती हैं इन का भेट में आना बन्द होगा फिर हम किन के गुरु बनेंगे और किन से [तन मन धन सब आपके अर्पण] कहलायेंगे और इनके बिवाह होने पर हमारा भी निर्वाह क्यों कर होगा (बड़ी २ सेठानी बड़ी २ रानी क्यों कर हम जैसे) महन्तों की चेली बनेंगी (बड़े २ अखाड़ों के महन्त भी क्यों कर काम चलायेंगे रामस्नेहियों का तो काम बन्द हो जायगा वैरागियों के अड्डे जिनमें कि वह साधुओं का वेष धर पाखण्ड फण्ड के रोट उड़ाते हैं और माथे में गोपीचन्दन का तिलक गले में माला बगल में बाला लगाते हैं (सर्वथा ही उजड़ जायंगे) इतने सब मनुष्य विधवाओं से ही पलते हैं और इनकी कोई जीविका नहीं (आर्य कवि) सुनियेगा देवदासियों का तो अब समय जाता रहा आचार्य्य आप अनेक बुद्धियों के बनिये रहा निर्वाह करना वह बोझा ढोकर भी कर सकते हैं आपका मामला तो यों रहा ।रहे रामसनेही और वैरागी इनके लिये दण्ड मिलना चाहिये क्योंकि मिहर्वान गवर्नमेंट के स्वर्ग सम इस राज्य में यही उपद्रव मचाते हैं दिन में बाबा जी का भेष धर इधर उधर घूम आते हैं रात में सेंध लगा कर चोरी करते हैं, औरतें भगा २ कर ले जाते हैं, बच्चों को चुरा कर चेला बनाते हैं रास्ते के सिरे पर बैठ कर बालक और स्त्रियों के जेवर उतार लेते हैं, रसायन बनाने के लालच से जेवर उतरवा कर धोखा दे जेवर ले चल देते हैं यदि आपको विश्वास न आता हो तो अयोध्या और हरद्वार का हाल पढ़िये जो मशहूर अख़बारों में छप गया है ।

सं०—एवं पराजयमाप्ते गवेन्द्राचार्ये (कुमारभंजनः) प्राह भो जनाः !

न दत्त्वा कस्यचित्कन्यां पुनर्दद्याद्विचक्षणः ॥
दत्वा पुनः प्रयच्छन्हि प्राप्नोति पुरुषानृतम् ॥

सं०—इति मनुवचनादेकवारं दत्तायाः कन्यायाः कथं पुनर्दानम्

(आर्यकविः) श्रूयताम् देश काल पात्र परीक्षण पूर्वकं यद्दानं तद्दानं यदतोविरुद्धं तन्नदानमतएव नारदोप्याह यथा [४ पदे ११ पद्ये]

अपात्रे पात्रमित्युक्ते कार्येवाऽधर्म संहते ।
यद्दत्तं स्यादविज्ञानाददत्तं तदपिस्मृतम् ॥ क ॥

सं०—(श्रुतशीलिनेविज्ञाय ब्रह्मचारिणेऽर्थिनेवराय देयेतिबौधायनः) तदभावे तु दत्वापि पुनः प्रत्याहरणंशातातप कात्यायनादिभिरनुमतमेव यत्प्रदर्शितं प्राक् अथच यथान्यवस्तूनि (स्व सत्व निवृत्ति पूर्वकपर सत्वोपादानपूर्वकं) जनैर्दीयन्तेनतथा कन्या प्रदीयते दृश्यते बिवाहानन्तरमपि पितुर्ममत्वं कन्यायामतएव तदागमनमपि पुनर्भवत्येवतत्सुख दुःखयोर्जायमानयोर्हर्षशोकावपि पितुर्भवतएव अतो नतथेदं दानं यथा-गो वस्त्र पात्र प्रभृतीनाम् ।

[अथच]

कोऽदात्कस्मा अदात्कामोदात्कामायादात् ।
कामोदाताकामः प्रतिग्रहीता कामैतत्ते ॥
(यजु० अ० ८ मं० ४८)

सं०—संकल्पान्ते पठ्यमानेनानेन मन्त्रेण स्वयंप्रतिपाद्यते कामः कामाय स्वशरीरं प्रयच्छति (अर्थात्) कन्याहृदयस्थः कामः (इच्छा) वरहृदयस्थाय कामाय स्वशरीरमुपायनी कुरुते पित्रादयः केवलं निमित्त कारण भूताः पितृदानमन्तरापि उभयतः काम पूर्वकं गान्धर्वोबिवाहः प्रसिद्धएव दृश्यतेप्यतएव स्वयमेव स्वयम्वरे कन्ययावरो-वृयते न पित्रादिभिरितिस्पष्टम् अन्यदपीदृशं ग्रन्थ विस्तरभियान ब्रूमः ।

भा०—इस प्रकार गवेन्द्राचार्य के परास्त होने पर कुमारभंजन बोला कि महाशयो ! यह जो मनु में लिखा है कि एक वार कन्या देकर दुबारा न दे इसका आप क्या समाधान करते हैं (आर्यकवि) सुनिये देश, काल और पात्र देख कर जो दान दिया जाता है वह दान

कहाता है उससे विरुद्ध यदि किसी भूल से हुआ हो वह दान नहीं कहाता है इसी लिये नारद भी कहते हैं कि अपात्र को पात्र कह कर जो दान दिया गया हो वह दिया हुआ न माना जावे। विद्वान ब्रह्मचारी कन्या का चाहने वाला जो वर हो उसको कन्या देनी चाहिये यह बौधायन का मत है नहीं तो देने पर भी दुबारा लौटा कर दूसरों को देना शातातप आदि ने कहा ही है जो मैंने पूर्व कह दिया है। और भी देखिये जिस प्रकार देने वाले का वस्त्र आदि वस्तुओं पर देने के बाद अधिकार नहीं रहता इसी प्रकार यहां पर नही है। विवाह के बाद भी कन्या का पिता के घर आना जाना कन्या के सुखी दुखी होने पर पिता का सुखी दुखी होना लोक में प्रत्यक्ष है इस लिये गौ पात्र आदि जैसा यह दान नहीं है कन्या दान के अनन्तर पिता (कोदात्) मन्त्र पढ़ता है जिसका अर्थ यह है कि यह कन्या किसने दी किसको दी कामने दी काम को दी काम ही देने वाला और काम ही लेने वाला है पिता तो केवल निमित्त मात्र है बिना भी पिता के दान के दोनों तरफ़ से उठे हुए काम द्वारा गान्धर्व विवाह होता ही है स्वयम्बर में भी कन्या स्वयं अपने वर को वर लेती है पिता कुछ नहीं करता। कन्या के हृदय में उत्पन्न हुआ काम कन्या के शरीर को वर के हृदय में उत्पन्न हुये काम के लिये प्रदान करता है यह भाव है।

सं०—एवं पराजयमाप्ते कुमारभंजने [विद्याशत्रुः] प्राह भो जनाः! कार्यवशेन देशांतरंगते तत्रैव मृते पत्यौ युवतीभिः किंकार्यं (आर्य-कविः)॥

अष्टौ वर्षाण्युदीक्षेत ब्राह्मणी प्रोषितं पतिम्॥
अप्रसूतातु चत्वारिपरतोऽन्यंसमाश्रयेत्॥ ९८॥

क्षत्रिया षट्समास्तिष्ठेदप्रसूतासमात्रयम्॥
वैश्या प्रसूता चत्वारिद्वेवर्षेत्वितरावसेत्॥ ९९॥

न शूद्रायाः स्मृतः कालएष प्रोषित योषिताम्॥

जीवति श्रूयमाणेतु स्यादेष द्विगुणो विधिः ॥ १०० ॥

[नारदस्मृतौ द्वादशेपदे]

प्रोषितो धर्मकार्यार्थं प्रतीक्ष्योष्टौनरःसमाः ॥

विद्यार्थंषड्यशोर्थं वा कामार्थं वत्सरत्रयम् ॥ क ॥

[मनुः अ० ६ श्लो० ७६]

त्रीणि वर्षाण्युदीक्षेत कुमारी प्रोषितं पतिम् ॥ ख ॥

[जाबालिः अ० श्लो० १५]

भा०—इस प्रकार कुमार भंजन के परास्त होने पर विद्या शत्रु बोला कि महाशयो ! जब स्त्री का पति विदेश जाकर मर जावे तो स्त्रियों को क्या करना चाहिये (आर्यकवि) ब्राह्मणी विदेश गए हुए अपने पतिको आठ बरस, क्षत्रिया और वैश्या चार बरस उसकी बाट देखें यदि वह मर गया हो तो तुरंत विवाह करले यह नारद ऋषि का मत है मनु भी इसी बात का अनुमोदन करते हैं जाबालि ऋषि ब्राह्मणी के लिये केवल तीन बरस ही बाट देखना बतलाते हैं बादको दूसरा विवाह करना सब मानते हैं ॥

सं०—एवं पराजयमाप्ते विद्याशत्रौ (धर्मखंडनः) प्राह भो जनाः (शालिग्रामेण)साकंविधवानां मन्मते परिणयनं श्रेष्ठं व्रतादिना शरीर शोषणं चताभिः कार्यं (आर्यकविः(शालिग्रामेण शिवलिंगेन वापरिणयनं वैष्णवानाम्मते कमलायाः शैवानांमतेऽपर्णायाएवभवितुमर्हति नान्य-स्त्रीणां व्रतैः शरीरशोषणं प्राग्भवताकार्यं पश्चाताभिः अबलानां विषये कर्णंयोजयतोधिग्भवतः पांडित्यं नातःपरमेवं वाच्यं नोचेत्सर्वदा नरके वासोभविष्यति ॥

भा०—इस प्रकार विद्याशत्रु के परास्त होने पर धर्मखंडन बोले कि महाशयो ! हमारे मत में तो विधवाओं का शालिग्राम से विवाह होना चाहिये और व्रतों से इनका शरीर सुखाना चाहिये (आर्यकवि) शालिग्राम अथवा शिवलिंग के साथ वैष्णवों के मत में लक्ष्मी का

और शैवों के मत में पार्वती का विवाह हो सकता है और स्त्रियों का नहीं, नहीं तो वह भी व्यभिचारी ठहरेंगे शालिग्राम जी को तो एक तुलसी से ही फुरसत नहीं मिलती हर वक्त छाती पर ही तुलसी जी डटी रहती हैं अगर एक दो विवाह उनके साथ और किये गए तो उनके पलस्तर ढीले हो जायेंगे इसलिये जाने दीजिये रहा व्रत वह पहले आप करके देखिये अच्छा लगता हो तो उनसे भी कराना क्योंकि [अपने समान] सबको देखना चाहिये ॥

सं०—एवं पराजयमाप्ते धर्म्मखण्डने पापमण्डनः प्राह भो जनाः [परतोऽन्यंसमाश्रयेदित्यस्यकोर्थः] (आर्यकविः) श्रूयताम् [अन्यारादितरर्ते] इति- सूत्रे अन्यशब्दस्यार्थ ग्रहणादन्यं पूर्वस्माद्भिन्नं विलक्षणमितरंवा सवर्णं पतिमवलम्ब्य सुतानुपादयेदि-त्यर्थः (अतएव) पुनः सवर्णेनोढायांतज्जातः पौनर्भवइतिविवादचंद्रः

भा०—इस प्रकार धर्मखंडन के परास्त होने पर (पापमंडन) बोले कि महाशयो ! (परतोन्यंसमाश्रयेत्) इसका क्या अभिप्राय है (आर्यकवि) सुनिये व्याकरण में अन्य शब्द का अर्थ भिन्न विलक्षण आदि किया है इससे यह सिद्ध हुआ कि पहिले पति से भिन्न और सवर्ण पति का अवलंब लेकर संतान उत्पन्न करे और सुखी रहे ॥

सं०—एवं पराजयमाप्ते पापमंडने [जारेन्द्रचूड़ामणिः]प्राह भो जनाः! चोरजारशिखामणौ श्रीकृष्णेकृतभक्तिरहं ब्रवीमि श्रूयताम् ॥

अहिल्या द्रौपदी कुंती तारा मंदोदरी तथा ॥
पंचकन्याः स्मरेन्नित्यं महापातक नाशनम् ॥ क ॥

सं०—इति स्मरणादिमास्तुसांप्रतमपि कन्याएव नासांनिदर्शनं पुनर्विवाहे नियोगेवादेयम् (आर्यकविः)श्रूयताम् गौतमेनसाकं कृत-परिणयायै सपुत्रायैअहिल्यायै जारःसुरपतिरभूत्, द्रौपद्याः पंचपत्नीत्वं प्रसिद्धं,सुग्रीवयोषिस्तारायाः पुनर्वालिनागमनं पुनः सुग्रीवगमनञ्च प्रत्यक्षमेव, मंदोदर्याः पत्यौमृतेदेवरानुगमनं सर्वसंमतं, कुंत्याः पुरुषा-

न्तरगमने भारतमेव निदर्शनं, तदेवं कृतपरिणयानां पुत्रवतीनां जरती नामद्यापि कन्यात्वं न प्रमाणसाध्यमितिमूकीभूयस्थीयताम् ॥

भा०—इस प्रकार पापमण्डन के परास्त होने पर जारेन्द्रचूड़ामणि बोला कि महाशयो ! चोरजारशिखामणि का उपासक हूँ जो कुछ बोलता हूं सुनिये अहिल्या, द्रौपदी, कुन्ती, तारा, मन्दोदरी, यह पांच आज भी कन्या है इनका दृष्टान्त पुनर्विवाह या नियोग में न दिया कीजिये (आर्यकवि) सुनिये जाराग्रणी जी महाराज ! सुनिये इस प्रकार तो आपकी माता भी कन्या हो सकती है (जारेन्द्र) क्यों उसका तो विवाह भी हो गया हम उस पतिव्रता के सुपुत्र विद्यमान है (आर्यकवि) धन्य है महाराज बलिहारी है आप ही जैसे कुलांगारों से माता पतिव्रता होती है ठीक है देखिये अहिल्या का गौतम से विवाह और इन्द्र से व्यभिचार द्रौपदी का पांच पुरुषों से विवाह कुन्ती का इन्द्रादि से नियोग तारा का सुग्रीव की स्त्री होने पर भी बालि से अनुचित सम्बन्ध और पुत्र का पैदा करना मन्दोदरी का रावण से विवाह होने पर विभीषण से नियोग सर्वत्र भारतादि में प्रसिद्ध है इस लिये इनका कन्यात्व सिद्ध करने के लिये आपके पास में कोई प्रमाण नहीं है (कन्या वही कहलाती है जो अक्षतयोनि हो चाहे विवाह न हुआ हो या हुआ हो) इस लिये अब चुप ही बैठिये अपनी पण्डिताई न छांटिये ॥

सं०—एवं पराजयमुपागते जारेन्द्रचूड़ामणौ (सत्यानाशमूर्तिः) प्राह भो जनाः ! (विधवेति) शब्दस्य किं निर्वचनं कुत्रच तल्लिखितं कथ्यतामथच चांद्रायणकृच्छ्रचांद्रायणादिना यदि विधवा समयमतिवाहयेत्तदा काहानिः (आर्यकविः) [धवइतिमनुष्यनाम तद्वियोगाद्विधवेति) विधवाशब्दनिर्वचनं (निरुक्ते ३ अध्याये १५ खण्डे) लिखितं चांद्रायणादिव्रतजातंच महापातकप्रायश्चित्तार्थं मनुनाप्रोक्तं न विधवार्थं नकिमपिबालविधवाभिस्तथाविधं पापं विधीयतेऽतोव्यर्थमेवतासांव्रतादिकं धर्मशास्त्रविरुद्धंच ।

भा०—इस प्रकार जारेन्द्रचूड़ामणि के परास्त होने पर सत्या-नाशमूर्ति बोले कि विधवा शब्द का क्या (डेफिनेशन) है और कहां लिखा है विधवा यदि चांद्रायण आदि व्रत से समय बितावे तो क्या हरज है (आर्यकवि) 'धव' मनुष्य को कहते हैं उसके वियोग से विधवा होती है निरुक्त देखिये चांद्रायण आदि व्रत महा पातक की सज़ा में बतलाये हैं इन विचारियों ने क्या पाप किया जो यह व्रत करें धर्मशास्त्र में इनके लिये कोई व्रत कराना नहीं बतलाया है।

सं०—एवं पराजयमुपागते सत्यानाशमूर्तौ (हत्यानिधाननामा) प्राह भो जनाः ! (नदेवचरितंचरेदिति) नियमाद्देवजातेषु देवतुल्येषु युधिष्ठिरादिषु प्रवृत्तंनियोगकृत्यं कथंमनुष्यैःकर्तुं शक्यते (आर्यकविः) "विद्वांसोहिदेवाः" इति शतपथप्रमाणादाप्तानां विदुषामेवदेवशब्दे-नग्रहणं तत्कृताचरणानामुपादेयतातु भगवता श्रीकृष्णेनोक्ता।

यद्यदाचरतिश्रेष्ठस्तत्तदेवेतरो जनः।
स यत्प्रमाणं कुरुते लोकस्तदनुवर्तते ॥ गीता ॥
"महाजनोयेनगतःसपन्थाः"

सं०—सिद्धमेतावता देवानामनुकरणं मनुष्याणांश्रेयसे तन्निषे-धपरम्वाक्यमुन्मत्तप्रलपितवत् युधिष्ठिरादिराज्ञां दमयन्त्यादिराज्ञीनां चवैदुष्येसिद्धे तत्प्रचालित नियोगादिकरणं सर्वथामान्यं यदिजनैर्वि-दुषामनुकरणं नकार्यंतर्हिकिं दुष्टानामनार्याणाम्।

भा०—इस प्रकार सत्यानाशी के परास्त होने पर हत्यानिधान बोला कि महाशयो ! हमको देवताओं का अनुगमन नहीं करना चाहिये युधिष्ठिर आदि देवतों से पैदा हुए इस लिये यदि उन्होंने नियोग किया तो क्या हम भी करें कदापि नहीं (आर्यकवि) सुनिये हत्यानिधान जी महाराज ! शतपथ में लिखा है कि विद्वान् ही देवता होते हैं विद्वानों का किया हुआ आचरण सब को करना चाहिये इसमें गीता का वचन भी प्रमाण है देखिये (यद्यदाचर-

तिश्रेष्ठः) अर्थात् जो काम श्रेष्ठ पुरुष करते हैं और प्रमाणिक मानते हैं वही संसार भी मानता है इस लिये आपका कहना ठीक नहीं है यदि हम विद्वानों का आचरण ग्रहण नही करें तो क्या मूर्ख और नीचों का ग्रहण करें ।

शंकान्तरं चेत्क्रियतामिदानीं-
विशंकता चेत्क्रियतामिदानीम् ।
जगत्यमुष्मिन्विधवाजनानां-
पुनर्विवाहो नवयौवनानाम् ॥ ११३ ॥

भा०—यदि इस विषय में आप लोगो को और शंका रही हो तो कीजिये न रही हो तो संसार में नौजवान विधवाओं का पुनर्विवाह कीजिये ॥ ११३ ॥

सं०—इति श्रुतविज्ञापनाःनिरुत्तराःसर्वे पापमूर्तिप्रभृतयः कर्णाकर्णिकिमपि संदिश्यबाराणसीमुद्दिश्यपलायन्ते नातःपरमवशिष्टाकाप्यस्माकंहृदयेशंकाकरिष्यामोवयंभवदादिष्ट ।मित्यवशिष्टावद्धांजलयः कविरत्नं प्रणमंति अवनतशिरसः कृतप्रणामांस्तानवलोक्यार्यकविः (यद्येवमस्ति तर्हि)

भवतु भुवन मध्ये भूतबाधानिवृत्तिः-
फलतु जनसमूहे धर्ममार्ग प्रवृत्तिः ॥
लगतु करुणभावे मानवी चित्तवृत्ति-
र्हरतु सकलकष्टं सर्वथा विश्वमूर्तिः ॥ ११४ ॥

भा०—इस प्रकार आर्य कवि की घोषणा सुन पाप मूर्ति आदि सब निरुत्तर हो कान में बात करते हुए काशी को भागते हैं । बाकी अब हमारे हृदय में शंका नहीं रही आप कीं आज्ञा का पालन करेंगे । इतना कह प्रणाम करते हैं (आर्य कवि) अगर ऐसा है तो संसार में भूतों की बाधा नष्ट हो मनुष्यों का मन धर्म में प्रवृत्त हो जन समुदाय में दयाभाव उत्पन्न हो विश्वनिलय परमात्मा परमेश्वर समस्त कष्टों को दूर करें ।

सं०—इत्याशिषं प्रयुंक्ते मुदितांतःकरणाः सर्वेजनाः कविरत्नम-भिनंदंतिबालबिधवानामंबाः परितो मालाभिरर्चयन्ति हस्तधृत मंजुलतर तरलतालबृंत्ता मदनमंजरी मदनलेखाचोभयतोबीजयति प्रसन्नचित्तानंगलतिका सर्वाभिरनुगम्यमाना (शतंजीवशरदोवर्धमान) इत्याशिषायोजयति काचिद्दीपयति काचिद्भूपयति धृतविजयमालः खण्डित बहुविधजालः कविरीश्वरं ध्रुवपदानुगेन षट्तालेन छन्दसा स्तौति।

भा०—इस प्रकार आशीर्वाद देते हैं प्रसन्न चित्त पुरुष चारों तरफ़से आपकी प्रशंसा करते हैं बिधवाओं की माताए माला पहिनाती हैं मदनमंजरी और मदनलेखा हवा करती है अनेक बालबिधवाओं सहित अनंगलतिका आशीर्वाद देती है इस प्रकार चारों तरफ़ जय की आवाज़ों से पंडाल गुंजा हुआ देख आर्यकवि ईश्वर की स्तुति करते हैं।

देवदेव! रचितवेद! जयजगत्पते!
शमितसकलदुःखजाल!
शरणनिरतमनुजपाल!
निगमविमुखकर्मकाल! सकलभूपते! जय?
विधृतसकलविश्वभार!
विविधमहितलोककार!
हृदयनिहितवेदसार! विविधदिक्पते! जय?
शमय शमय तापमद्य!
जनय जनय सौख्यमद्य!
कलय कलय मोदमद्य सुखद गोपते! जय?

सं०—इति जगदीश्वरं ध्यायन्तः सर्वे शृण्वंति विजयश्रियाभितोवृत (आर्यकविः) प्रमोद्गमं नाटयन्स्वगतम्।

अतिशितमपिशस्त्रं निष्फलं तावदास्ते-
यदवधि न परेषां कृंततीद्धा शिरांसि।

द्रुतमिति हृदि तत्तत्संविविच्यात्मकार्यं-
सफलयितुमिदानीमुद्यमः कार्य एव ॥ २१२ ॥

सं०—इति विचार्य (प्रकाशं) अंग ! निर्व्याजसुहृदः ! श्रीमतां-कृपया समाप्तः शास्त्रार्थः समासादिताच विजयलक्ष्मीः परमिदानी मनयोः सख्योर्विवाहकृत्यं कर्तव्यमस्ति यथायमायासः सफलः स्यात् (इतिवदति) सर्वे सांजलिबंधमाज्ञायैचेष्टंते ।

भा०—यह विचार कर (खुलासा) अए मेरे मित्रों ! आप लोगों की कृपा से यह शास्त्रार्थ निर्विघ्न समाप्त हो गया विजय लक्ष्मी भी प्राप्त की परंतु अब इन सखियों का विवाह बाकी रह गया जिससे यह परिश्रम सफल होना है (सुन कर) सब लोग आज्ञा केलिये प्रार्थना करते है ।

सं०—(आर्यकविः) यद्येवंतर्हि मदनुज्ञया केनचिदनयोःप्रसाधन-विधानं संपाद्यतां केनचिदनयोर्विवाहायमण्डपरचनाविधीयतां केन-चिन्मंगलमयनानोपकरणसमुच्चयःक्रियतांकिंबहुना सर्वैरपि निज २ विभवोचितेन साधनेन सर्वमपीहसंपाद्यतामितिनिर्दिशति सर्वेस-त्वरमुत्वरमाणाःकर्तुमारभंते (मदनमंजरी) वयस्यार्यकवे ! इतोपि करुणयादृष्टिर्दीयताम् ।

भा०—(आर्यकवि) अगर ऐसा है तो मेरी आज्ञा से कोई इन का वस्त्र आभूषण आदि का प्रबन्ध करै कोई मण्डप की तयारी करें कोई हवन आदि की सामग्री एकत्र करे कहां तक कहूं सब लोग अपने सामर्थ्य के अनुकूल सब काम तयार करे (कहते हैं) सब सुन कर अपने काम मे लगते है (मदनमंजरी) कवि जी ! जरा कृपा कर इधर भी दृष्टिपात कीजिये ।

नवोदयमनोहरा कुमुदबन्धुलेखेव सा-
नवोद्गमम्मनोरमा नववनांतवेलेव वा ।
नवांकुरविशोभिता कुटजपुष्पमालेव वा-
सखी मम भवद्गृहं कनकमालतीसाऽऽगता ॥ १२५ ॥

भा०—नवीन रूप से उदय को प्राप्त हुई चन्द्रमा की कला जैसी नवीन पत्रों से चित्त को चुराती हुई जंगल की वृत्त पंक्ति जैसी नवीन अंकुरों द्वारा शोभा को प्राप्त हुई २ कुटज पुष्प की माला जैसी यह मेरी सखी (कनक मालती) आपके समीप आ गई है ॥ १२५ ॥

सं०—इतिनिदर्शयति प्रमोदवाष्पावृतनेत्रपंकजा ;सत्वरमार्यकवि-मभ्युपेत्य सापि विनयावनतकंधरासती मंदं २

अस्मादृशविधवानामकारणेनैवबन्धुतांप्राप्त ॥
जगदानन्दन नितरां प्रणमति विधवा भवंतमियमेका ॥ १२६ ॥

सं०—इतिवदन्निमति नतोन्नतभ्रूगतिबद्धलास्यां विलोक्य बालां-शशिपेशलास्यामार्यकविरपि (नवीन सौभाग्येनयुज्यस्व नातः परंस्वा-त्माकदापि विधवाशब्देनप्रयोज्य) इत्याशिषं प्रयुंक्ते ;(मदनमंजरी) समाकर्ण्य वयस्यार्यकवे भवतां कृपयासिद्धमेवैतत् ।

भा०—इतना कह कर दिखाती है आनन्द के आंसुओ से आंखें भर कर वह भी शिर झुका कर कहती है कि हम जैसी बाल विधवा ओं के लिये विना कारण मित्रता को प्राप्त हुए आपको यह भी एक बाल विधवा प्रणाम करती है ॥ १२६ ॥

(आर्यकवि) उसको देख कर (नवीन सौभाग्य तुमको प्राप्त हो) आज से अपने को कभी विधवा न कहना कह कर आशीर्वाद देते हैं (मदन मंजरी) आज आपकी कृपा से यह बात सिद्ध हो गई ।

सं०—(आर्यकविः) सर्वाउद्दिश्य ःभोवयस्याः ! सांप्रतमपनयंतु भवत्यो विधवावेशम् प्रत्यायातोधुना हृदयमिवमेद्धितीयं श्रोत्रियः शंकरलालशर्मा वृंदावनात् संपादितं चान्यैस्तत्तदुपकरणं तदधुना नवीनवस्त्राभरण भूषितांगोभिर्भवतीभिर्भाव्यमिति समादिशति सर्वा-स्तथाकुर्वंति ।

भा०—(आर्यकवि) मेरी प्यारी बहिनो ! अब विधवा पन का वेश (लिवास) दूर करो हमारे मित्र श्रोत्रिय शंकर लाल जी वृन्दावन से आगए हैं और सामान भी सब तैयार कर लिया है इस लिये नवीन वस्त्र जेवर पहिनो इस प्रकार कहते हैं सब पहिनती है।

प्रसाधयंती पृथिवीकणोक्षितं-
चिरादनालोचित केशमंडना ॥
पुरःस्थितं दर्पण मीक्ष्य विस्मिता-
शिरोरुहैर्धैर्नितरामशोभत ॥ १२८ ॥

भा०—बहुत दिनों से छोड़ दिया है केशों का संस्कार जिसने ऐसी कोई विधवा कई वर्षों के अनंतर धूल में लिपटे हुए अपने केशों को दर्पण में देख २ कर बांधती हुई शोभा को प्राप्त हुई ॥ १२८ ॥

कथं विधेयं सखि बोधयाधुना-
मयानवोद्वर्तनमेवमादता ॥
पराप्यनुद्वर्तित गात्रमंडना-
मुहुर्वयस्यामवदन्नपानताम् ॥ १२९ ॥

भा०—बिना उवटन लगा गात्र ही है मंडन जिसका ऐसी एक बालविधवा पास बैठी हुई अपनी सखी से उवटन लगाने की तरकीब पूंछती हुई इस प्रकार आनंदित हुई जिसका वर्णन भी असंभव है १२९

मदेन काचित्तिलकांकितं मुखं-
मुहुर्मुहुर्वीक्ष्य समीप दर्पणे ॥
न संममौ हर्षवशेन विभ्रम-
भ्रमन्नवीनांजनमंजुलेक्षणा ॥ १३० ॥

भा०—विभ्रम अर्थात् विलास के अनुरोध से चमकता हुआ जो अंजन उस करके सुंदर नेत्र वाली कोई सखी तिलक से अलंकृत अपने मुखको बार २ दर्पण में देख अपने में नहीं समाती थी ॥१३०॥

दुकूलसंसर्गि नवीनमंडनं-
समादधाना मदनस्यमंजरी ॥
तथा समंताच्छुशुभे यथाऽपरा-
न कापि तद्गौरवमाप मानिनी ॥ १३१ ॥

भा०--उत्तम वस्त्र सुंदर आभूषण पहिनती हुई मदन मंजरी तो इस प्रकार शोभा को प्राप्त हुई जैसी और कोई भी नहीं ॥ १३१ ॥

पदेपदेऽनंगविलासपेशलं-
प्रयोजयंती विविधं प्रसाधनम् ॥
दशामनिर्वाच्यपदामगादहो-
मदादनंगस्य लतापिसुंदरी ॥ १३२ ॥

भा०--पद २ में अनेक प्रकार के भावों को उत्पन्न करने वाले अनेक वेशों से अलंकृत श्रीमती अनंगलतिका तो उस सुंदरता को प्राप्त हुई जिसका वर्णन करना भी मेरी शक्ति से बाहर है ॥ १३२ ॥

विनिर्मितं सर्वशएव तादृशं-
सखीभिरस्मिन्विषयेपि सौष्ठवम् ॥
यथा विवाहोचितवेशकल्पनं-
विधीयते यद्व तदोचितक्रमम् ॥ १३३ ॥

भा०--कहां तक वर्णन किया जावे जो २ विवाह के समय में धारण करले योग्य अलंकार थे उन सब को धारण कर मदन मंजरी आदि बालविधएं आज एक अनिर्वचनीयता को प्राप्त हुई ॥ १३३ ॥

सं--अत्रांतरे (श्रोत्रियः) वयस्यार्यकवे गिरामतीत्यपंथान मवस्थितोसि आर्यकविः अलमनया नवीनप्रशस्तिपरंपरया श्रूयतांयन्मया भवते पद्यद्वारानिवेदितं तद्भवतासाधितंनवा (श्रोत्रियः) हृत्पुट कुटीतटगतस्य तस्यभवतोनिर्देशस्य यत्फलं तन्मदनमोहनानंगशेखर मीनकेतनप्रभृतिरूपेण परिणतं दृश्यतांवलितग्रीवमितिदर्शयति (आर्यकविः)

तिर्यक्पश्यन् अहोमहीयःसादृश्यम् हृष्टैःपुष्टैर्दृष्टैश्चकुमारैरेभिः स्मृतिमार्गमारोहंति मेवस्याः भेदवादिभिरप्यत्रमौनमालंब्यतेसादृश्ये दूरमास्तामभेदवादिनां कथेतिविरमति वद्धांजलयःसर्वेकुमाराः प्रणमंति (आर्य कविः) तानाशिषायोजयन्नेकतःस्थिताःसख्योनिर्दिशति वृयंतामिमे स्वानुरूपाः पतय इति।

भा०—इसी बीच में (श्रोत्रिय जी) मित्रवर! आज तो आप वाणी के भी विषय नहीं रहे। (आर्य कवि) जाने दीजिये इन बातों को इन में कुछ नहीं धरा है परंतु यह तो बतलाइये कि मैंने जो आप से चलते समय कहा था उसके लिये आपने क्या किया (श्रोत्रिय) उसके लिये जो कुछ किया वह देखिये (मदनमोहन) अनंगशेखर, मीनकेतन आदि कुमारों को दिखाते हैं) आर्य कवि उनको देख कर ओहो इन में तो कुछ भेद ही प्रतीत नहीं होता रूपसे रूप, गुणसे गुण, कर्म से कर्म स्वभाव से स्वभाव मिला हुआ है अद्वैत वादियों की तो बात ही क्या है द्वैत वादी भी इन में द्वैत नहीं बतला सकते इनके देखने से मालूम होता है कि मानो मदन मंजरी आदि सखियां बैठी हों इतना कहते हुए आपको कुमार 'नमस्ते' करते हैं आर्य कवि उन से नमस्ते कर एक तरफ़ बैठी हुई सखियों को कहते हैं कि बहिनों इच्छानुसार आकर अपने २ वरों को वरलो सब आकर वर कन्याओं को वरते हैं (कन्या वरों को) वरती हैं।

सं०—उभयतःप्रवृत्तेवरणे रहस्यविच्छेदाय (श्रोत्रियः) वयस्यार्यकवे यदाहमकुंठोत्कंठया बृंदावनमभ्युपेत्य गोस्वामिने भवद्वृत्तांतमकथयं तदासभवंतमप्युद्दिश्येदमुक्तवान् (आर्यकविः) तत्किम् (श्रोत्रियः) श्रूयताम् (आर्यकविः) अवहितोस्मि (श्रोत्रियः) "यदिदं भवता भवतापतांतचेतसा सचेतसाजगति गतिमत्सुविस्तारमनायिवृत्तं तदिदं मन्मनःकुटीपुटतटगतमप्यासीदतोनिरायासनिष्पन्नमनीषितेन मया तर्जितसकलकोविदकौतुकाय कौतुकायमानचेतसे सचे-

तसे भवते स्वप्रयाससंपादितसमस्तकीर्तितांडवमुपायनीक्रियतइति" वदति (आर्यकविः प्रतिवदति तद्यथा ॥

दूरे गिरां जगति यस्य चरित्रशैली-
मार्गे धियां न किल यस्य मनः प्रवृत्तिः ॥
सिद्धेरुदंतमखिलं यदुदाजहार-
सोपीदमस्ति ननु तस्य कृपानुरूपम् ॥ १३५ ॥

भा०—दोनों तरफ़ से स्वयंवर के प्रवृत्त होने पर श्रोत्रिय जी (आर्य्यकवि से) जिस समय आपके यहां से विदा होकर मैं वृन्दावन गया और जाकर आपका वृत्तांत गोस्वामी जी से कहा उस समय गोस्वामी जी ने भी आपके लिये कुछ कहा था (आर्यकवि) वह क्या (श्रोत्रिय जी) सुनिये (आर्यकवि तयार हूं) (श्रोत्रिय जी कहते हैं) जो कुछ आपने संसार के कल्याणार्थ इस विषय को हाथ में लिया है यह मेरे मन में कभी का उपजा हुआ था इसलिये बिना ही परिश्रम के अपना कार्य सिद्ध देख कर अपने द्वारा तयार की हुई कीर्ति को आपके भेट करता हूं (आर्यकवि श्रोत्रिय जी से) जिनका चरित्र वाणी का विषय नहीं जिनका भाव बुद्धि का विषय नहीं ऐसे गोस्वामी जी ने यह जो मेरे लिये कहा है वह उनकी कृपा है ॥ १३५ ॥

सं०—अत्रांतरेसेवकाः (वयस्यार्यकवे) भवता यद्यदादिष्टं तत्तत्संपादितम् नातिपरिश्रमश्च दृत्वाकतिचित्पदानि नेत्रपात्रीक्रियतामिति निवेदयंति (अर्यकविः) तथेतिप्रतिपद्य हवनागाररामणीयकमवलोकयन्स्वगतम् (अहो) ॥

इतस्ततोनिर्मितगोपुराणां-
विशोभयाधःकृतनागलोकः ॥
विवाहदीक्षाऽऽगमनाय मन्ये-
प्रतीक्षतेमामयमत्र लोकः ॥ १३६ ॥

सं०—परमावश्यकमन्यदपिकार्यमनुष्ठेयमिति मीमांसयित्वा प्रकाशं वयस्यश्रोत्रिय!किमन्यदिहावश्यकं (श्रोत्रियः) श्रूयताम् ॥

वेदीचत्वरमुत्वरं न विहितं तत्सत्वरं गत्वरै-
रेवं जित्वरमित्वरोपचितिभिः संभूष्यतामत्वरम् ॥
यच्चान्यद्भवनोपयोगिकरणं तत्साध्यतां तत्वरै-
रन्यत्तत्समये स्थिता भृतिकराः संसाधयिष्यंत्यरम् ॥१३७॥

सं०—आर्यकविः भो जनाः समाकर्णितंश्रोत्रियोदीरितं तदधुनासकलमप्येतत्संपाद्यतामितिनिर्दिशति सर्वेतथाकुर्वंति ॥

भा०—इसी बीच में (सेवक) कवि जी ? जो २ आपने बतलाया वह तयार हो गया अगर परिश्रम न हो तो चल कर देखियेगा (आर्यकवि) अच्छा कह कर चलते २ मंडप की शोभा देख कर मन २ में ओहो चारों तरफ़ से सजे हुए दरवाजों वाला इसीलिये पाताल की शोभा को नीचे करने वाला यह मंडप तो मुझको बुलातासा नजर आ रहा है (१३६) परंतु और भी मुझे ज़रूरी काम करना है इतना विचार कर (खुलासा) श्रोत्रिय जी देखिये और क्या बाकी रह गया (श्रोत्रिय जी) सुनिये अभी वेदी बाकी रही है उसका भी सामान अभी से तयार करना चाहिये बाकी उसी समय होता रहेगा (१३७) आर्य कवि (नौकरों से) सुना आप लोगों ने जो कुछ श्रोत्रिय जी ने कहा है सब तयार करो (कहते हैं) आज्ञानुकूल सब वैसा ही करते हैं ॥

सं०-श्रोत्रियःवयस्यार्यकवे! [उदगयनआपूर्यमाणपक्षेपुण्येनक्षत्रेचौलकर्मोपनयनगोदानविवाहाः] इत्याश्वलायनसूत्रनियमात्कथमिदानीं वर्षतौ श्रावणेमासि हीयमानपक्षे भवान्विवाहाय पुत्रीणामुपक्रमते कथ्यताम् (आर्यकविः) श्रूयताम् [सर्वकालमेकेविवाहम्] इतिभवदुक्तसूत्रादुत्तरसूत्रेण सर्वस्मिन्नपिकाले प्रधानाचार्यैरनुमन्यतेविवाहः तदिदानीमत्रभवताऽऽचार्येणभाव्यम् (श्रोत्रियः) वयस्या-

र्य कवे शंकामात्रसमर्थनपरे समस्तशेमुषोसंपन्ने भवतिविद्यमाने कथ-मेतद्भवितुमर्हति तद्भवद्भिरेवात्राचार्यैर्भाव्यम् (आर्यकविः) यद्येवं-तर्हि समाहितचित्तैः सर्वैरपीदानीं पाणिपादं प्रक्षाल्य शुभासनेषुस्थेयं स्तुतिप्रार्थनोपासनामंत्रैरीश्वरंस्वागतीकृत्य तत्परमाचमनीयमाचम्य विधायचांगस्पर्शं स्वस्तिवाचनशांतिप्रकरणपठितैर्मंत्रैः स्वस्तिकरणंशां-तिंचकृत्वा मंत्रपूर्वकमग्न्याधानंविधाय सामान्यहवनंविधेयमितिनि-र्दिशति सर्वेतथाकुर्वंति ॥

भा०-श्रोत्रिय जी (आर्य कवि के प्रति) एक बात तो सुनिये आश्वला-यन गृह्य सूत्र में लिखा है कि उत्तरायण और शुक्लपक्ष में विवाह होना चाहिये फिर आज कल श्रावण कृष्णपक्ष में विवाह क्योंकर होगा (आर्यकवि) सुनिये उसी गृह्य सूत्र में यह भी लिखा है कि विवाह सर्व काल में होनो चाहिये इसमें कोई हरज नहीं आप आचार्य बनिये (श्रोत्रिय) भला यह कब हो सकता है कि आपकी मौजूदगी में मैं आचार्य बनूं आचार्य तो आपको ही बनना पड़ेगा (आर्यकवि) अगर ऐसा है तो आप सब लोग सावधान हो हाथ पैर धोकर आसनों पर बैठें ईश्वर की स्तुति प्रार्थना उपासना करके आचमन और अंगस्पर्श के बाद स्वस्तिवाचन एवं शांति प्रकरण का पाठ कर विधिपूर्वक अग्न्याधान करके सामान्य हवन आरम्भ करें (कहते हैं) सब वैसा ही कर रहे हैं ॥

सं०—कृतसामान्यप्रकरणविधिः श्रोत्रियः वयस्यार्य कवे ! समाप्तं पूर्वकृत्यं तदधुनाकिंकर्तव्यमित्युच्यताम् (आर्यकविः) (भामिनी-भूषणकाव्ये) येन २ विधिनायत् २कार्यंमयानिबोधितंतत्तथैवात्रकर्त-व्यं (श्रोत्रियः) नातिगुरुकश्चेत्सविधिः पुनरुदीर्यतां (आर्यकविः) श्रूयतां (सामान्यकार्यानन्तरंविवाहमण्डपेसमागतया कन्ययैव त-दुत्तरविधावनुष्ठेयं समागतायवरायासनपाद्यार्घाचमनीयमधुपर्कान्तं कर्मविधेयमितिवैदिकोविधिः) तदिदानीमेकतःकुमारा अन्यतश्चकु-

मार्यः समाहूयंताम् (श्रोत्रियः) ओमित्युररीकृत्य यथोक्तकर्मणि-सज्जते कुमारेष्वागतेषु कुमार्योविष्टरादिना तानभ्यर्चयन्ति (प्रति-गृह्णामीति) कथयन्तः प्रत्येकंवराअपिस्वीकुर्वन्ति एवमुभयतोदानप्र-तिग्रहादिनासमाप्तेस्वागते समीपस्थिताञ्जनानुद्दिश्यार्यकविः प्राह भो कन्यापक्षानुगताजनाः (समयोयमागतःसुतार्पणस्य) तदिदानीं गोदानपूर्वकं कन्यादानायसज्जैर्भाव्यमितिवदति सुखाश्रुनयनाः सर्वे तथाकरणायविचेष्टन्ते।

भा०—सामान्य विधि के करने पर श्रोत्रिय जी (आर्यकविसे) कहिये अब क्या किया जावे (आर्यकवि) अब जो कुछ कार्य करना हो वह (भामिनी भूषणकाव्य में) कहे हुये प्रकार से कीजिये (श्रोत्रिय) यदि वह प्रकार अत्यन्त विस्तृत न हो तो दुबारा कह दोजिये (आर्यकवि) सुनिये सामान्य विधि के अनन्तर बिवाह मण्डप में आई हुई कन्या के द्वारा ही विष्टर आदि का देना विधि के अनुकूल है इस लिये अब एक तरफ़ कुमारियों को दूसरी तरफ़ कुमारों को बिठलाओ (श्रोत्रिय जी) वैसा ही करते हैं कुमारों के आने पर कुमारियां आसन आदि देती हैं वर भी स्वीकार करते जाते हैं (इस प्रकार मधुपर्कान्त स्वागताचार के समाप्त होने पर) पास में बैठे हुये पुरुषों के प्रति (आर्यकवि) हे कन्या पक्ष के पुरुषों! अब कन्या-दान देने का समय उपस्थित हुआ है इस लिये गोदान पूर्वक कन्या-दान के लिये तयार हो जाओ (कहते हैं) आनन्द पूर्वक सब वैसा ही करने को तयार होते हैं।

सं०—अनन्तरं दत्तगोदानेषु कुमारीपितृषु गृहीतगोदानेषु कुमा-रेषु कन्यादान-समयेसमुपस्थिते श्रोत्रियः प्राह (वयस्यार्यकवे)!

अमुष्यपौत्रींचामुष्य पुत्रींचामुष्यगोत्रजाम्-
इमां कन्यां वरायास्मै वयन्तद्विवृणीमहे।
शृणुध्वमितिवैब्रूयादसौ कन्याप्रदायकः॥ १॥
(वसिष्ठ अध्याय ४)

सं०—इति धर्मशास्त्रनियमात्कन्यावरगोत्रोच्चारणपूर्वकमिदानीं-संकल्पः पठ्यताम् (इति वदति) तिरस्कृतान्यकविरार्य्यकविश्च संकल्पंपठति ।

सं०—पठितसंकल्पे कविरत्ने दत्तकन्यादानेषुचबांधवेषुश्रोत्रियः [कोदात्] इतिमन्त्रंपठति वराश्च कन्याभ्यो वस्त्रोपवस्त्रेप्रयच्छन्ति धृतवस्त्रोपवस्त्रासुकन्यासु [समंजन्तुविश्वेदेवाइति] मन्त्रेण कन्याव रौमिलतः [अनन्तरंगृभ्णामिते] इत्यादिमन्त्रैः कुमाराःकन्याकरानादा-याश्मारोहणपूर्वकं वेदींपरिक्रमन्ति सप्तपदीगमनोत्तरं [ममव्रते] इति-मन्त्रेणपरस्परंविधायप्रतिज्ञांधृताशीर्वादास्तिष्ठंति पश्चाद्ध्रुवारुंधती दर्शनोत्तरं कन्याः वरभुक्तशेषंहव्यशेषं प्राश्य निवर्तंते समाप्तेचकरपी-डनकर्मणि कविरत्नं प्रणमन्ति ॥

भा०—इसके बाद गोदान देने पर कन्यादान के समय श्रोत्रिय जी गोत्रनामोच्चारण पूर्वक संकल्प पढ़ने की प्रार्थना करते हैं आर्य कवि संकल्प पढ़ते हैं (सब कन्यादान करते हैं) श्रोत्रिय जी [कोदात्] मन्त्र पढ़ते हैं वर कन्याओं को नवीन वस्त्र देते हैं विद्वानों के समक्ष प्रतिज्ञा करते हुए आशीर्वाद प्राप्त कर बैठते हैं पति की आज्ञानुसार ध्रुव और अरुंधती का दर्शन कर कन्यायें पति का दिया हुआ चरु खाकर बैठती हैं इस प्रकार विवाह संस्कार के समाप्त होने पर आर्यकवि के लिये सब एक साथ [नमस्ते] करते हैं ॥

सं०—आर्यकविः सख्यौपश्यन् वयस्येमदनमंजरि! सखिमदनलेखे! प्राणाधिकेऽनंगलतिके भवतीनामेवदुःखोपशमाय सर्वमिदंमयाऽऽरब्धं तदधुनाभवत्यः प्राणेश्वरैरुपगताःसौख्यमनुभवंत्विति सखीराशिषा योजयति तथाविधस्यार्यकवेःसमीपेसनुपविष्टा मदनमंजरीतमुद्दिश्य निर्व्याजबंधो! किमिदमुच्यतेतत्रभवताभवता जगदीश्वरएवास्मत्पक्षे दत्तपक्षपातंभवंतमत्रभूवलयेससर्ज सांप्रतंतुनकेवलाहं समस्तापिबाल-विधवातितरापपरमागंशर्मणइतिविरमति विरतायांतस्यामनंगलतिका

निसर्गबंधो!नातःपरंमयाशक्यतेवक्तुं केवलमेतावच्चेपुरतोवाच्यमस्ति यदस्मत्कृतेकर्तव्यं बांधवांवाजनकैरपिनाकारि तदत्रभूतलेकेवलेनभवतैवाकारि तेन यदवधिजगदीश्वरवशवर्तिनोप्रकृतिरीश्वरदत्तफलभोक्ताजीवश्चास्ते तदवधियशस्तेजगतिनिश्चलंभूयादितिवदंतीचरणौस्पृशति मोहवाष्पोद्गमाशंकया ताममालोक्यैवार्यकविरन्यतःपश्यन् सखे श्रोत्रिय!मत्सख्योर्गृहगमनायसांप्रतंभवता कृतोपायेनभाव्यं यथानानयोरध्वनि कापिबाधासमापद्येतेतिवदति श्रोत्रियस्तथाकरोति [मदनमंजरीप्रभृतयःसर्वाअपि गीतानिगायंत्यो गृहंगच्छंति] ॥

भा०—(आर्यकवि) मेरी प्यारी बहिनों ! तुम्हारा दुःख दूर करने के लिये ही मैंने इतना प्रयास उठाया है इस लिये अब तुम सब आनंदित रहो (आशीर्वाद देते हैं) मदनमंजरी (आर्यकवि जी) परमेश्वर ने ही हमारा दुःख दूर करने के लिये आपको भेजा अब केवल मैं ही क्या सब बाल विधवाही आनन्द को प्राप्त होगई (कह कर बैठती है) उस के बैठने पर (अनंगलतिका) कवि जी ! मेरे से तो अधिक कुछ कहा ही नहीं जाता केवल इतना ही कहने को तयार हूं कि जो काम हमारे लिये किसी ने भी नहीं किया वह आपने किया इसलिये जब तक ईश्वर के वश में प्रकृति और जीव रहे तब तक आपका यश बना रहे इतना कह कर पैरों पर गिरती है (आर्यकवि) आंसू भरी आंखों से उसको न देख कर ही (श्रोत्रिय जी से) मेरी बहिनों के लिये घर जाने को बिलंब होता है इसलिये बिदा का सामान जल्द तयार कीजिये (श्रोत्रिय जी सब तयार करते हैं) मदनमंजरी अनंगलतिका मदनलेखा आदि सब बाल विधवाएं अपने २ पतियों के साथ आनंद पूर्वक ईश्वर की प्रार्थना करती हुई अपने २ घरों को जाती हैं ॥

सं०—निवृत्ते विवाहोत्सवे गतासुच गृहं बालविधवासु सानन्दमुपविष्टमार्यकविमालोक्य (महेन्द्रः प्राह) वयस्यार्यकवे ! यदारभ्यशास्त्रार्थे निरुत्तराः पापमूर्तिप्रभृतयो धावं २ वराणसींप्रयातास्तदारभ्य

महदांदोलनमत्रविषयेजातमभूत् (आर्यकविः) क्रमशः सर्वंकथ्यताम् (महेन्द्रः) श्रूयताम् वयस्यां मदनमंजरींप्रापयितुं वाराणसींगतेन मया कतिचिद्दिनानि तत्रैवनीतान्यभूवन् प्रत्यहं इतोविश्वनाथ इतो-ढुंढिराज इतोभैरव इतोन्नपूर्णेति कथयद्भिर्वाराणसेयैर्दक्षिणालोभेन प्रतिरथ्यंप्रतिघट्टं प्रतिमन्दिरं दर्शनाय नीतआसम् ।

भा०—विवाह से निवृत्त हो जाने पर बाल बिधवाएं जब अपने घरों को गईं तब आनन्द में बैठे हुये आर्यकवि को देख कर महेन्द्र बोला कि जब से शास्त्रार्थ में निरुत्तर हो कर पापमूर्ति आदि काशी में जाकर छिपने लगे तब से इस बाल बिधवा विवाह के विषय में बड़ा आन्दोलन उठा (आर्यकवि) क्रम से सब सुनाओ (महेन्द्र) सुनिये यहां से श्रोत्रिय जी के कथनानुसार मदनमंजरी को पहुंचाने के लिये काशी गया था कुछ दिन वहीं फिर रहा बना-रसी पंडों ने दक्षिणा के लालच से प्रति दिन मुझे विश्वनाथ, ढुंढि-राज, भैरव आदि का दर्शन कराना आरंभ किया यहां तक कि हर गली हर घाट हर मन्दिरों से मैं परिचित हो गया ।

सं०—मयापि कुत्र २ कदा २ केन २ किं २ कर्मक्रियतइतिदर्शनो त्सुकेन तिरस्कृत्य परिश्रमकष्टं सर्वमपि नगरंदृष्टमासीत् मन्दिरेषु-वैष्णवानांव्यभिचारलीलादृष्टा घट्टेषुजारकर्मदृष्टं प्रतोलीषुव्यभिचार-स्थानानिलब्धानि बिधवासुरक्ताःकाषायधारिणोवीक्षिताः अनेकबिध-वावृताज्योतिर्विदोविलोकिताः भैरवमन्दिरेषु भैरवीचक्रमदर्शि दक्षि-णामूर्तिमन्दिरे शिशुक्रीडाप्यालोकि विद्यार्थिनांबिधवासेवकत्वमदर्शि काथिकानांगृहेबिधवावृंदमलंभि किंबहुना सर्वेविद्यार्थिनः सर्वेकाषाय-वस्त्रधारिणः सर्वेतीर्थपुरोहिताः सर्वेमन्दिरपूजकाः सर्वेकाथिकाः सर्वेमौहूर्तिकाः स्व २ गृहे बालबिधवाभिरेवसमं व्यभिचारे तत्पराः संदृष्टाः ।

भा०—मैने भी परिश्रम की कुछ परवाह न करके कहां २ पर क्या २ होता है यह देखने के लिये समस्त काशी देख डाली वैष्णवों

के मन्दिरों में व्यभिचार के अड्डे पाए, घाटों पर कुकर्म होता देखा गलियों में गंदिगी पाई, मुंडी विधवाओं में आसक्त देखे ज्योतिषीभी विधवाओं में ही बैठे देखे भैरव मन्दिरों में भैरवी चक्र पाया दक्षिणामूर्ति में बाममार्ग के विरुद्ध दक्षिण मार्ग......पाया विद्यार्थिगण बिधवों में फंसे पाए, कथक्कड़ों के घरों में बिधवाओं के झुंड के झुंड मिले कहां तक कहूं बिधवाओं से न कोई विद्यार्थी बचा न संन्यासी न पंडा न पुजारी न कथक्कड़ न ज्योतिषी सब बिधवाओं से व्यभिचार करते देखे ॥

सं०—(अथैकदा) रथ्यासु परिभ्रमता मया भवता-शास्त्रार्थे पराजितो रंडागुरुरलंभि- सचोक्तवान्- वयस्यमहेंद्र कथमायातोसि रहस्यंगोपयता मयाप्यगादि भवतोदर्शनायेति सचोक्तवान्- सर्वतः पलायमानास्तुवयमत्रागत्यलोनाः इदानीं त्वयिदृष्टिपथंगते क्व लीना भविष्यामः अहोमहत्कष्टमापतितम् भेदंग्रहीतुकामेन मया सप्रत्ययवादि वयस्य सांप्रतंत्वहमपि विधवा विवाह विरोधी संवृत्तः तन्मत्तोभयंमास्तु एवमुक्तेसति सशांतमना मामवोचत् यद्येवंतर्हि भोजनभट्टाद्यैः समं परिचयं कारयिष्यामीति-

भा०—कुछ दिनों के बाद- गलियों में घूमते हुए मैंने शास्त्रार्थ में परास्त हुआ (रंडागुरु) पाया वह बोला कि मित्र महेंद्र ! कैसे आये हो मैंने भी रहस्य छिपा कर उससे कहा कि आपके देखने के लिये फिर वह बोला कि सब जगह से तो भाज कर हम यहां आकर छिपे अब तुम यहां भी आ गए हो अब कहां जाकर छिपेंगे भेद लेने के लिये मैंने भो उससे कहा कि मित्र अब तो मैं भी (विधवा बिवाह) का विरोधी वन गया हूं इसलिये तुम मेरे से मत डरो इतना कहने पर वह शांत होकर मेरे से बोला कि यदि ऐसा है तो चलिये भोजन भट्ट आदि मित्रों से भी आपको मिलावें।

सं०—मयापि तत्कथनमुररीकृत्य तेनैवसह गमनमारब्धम् लब्ध परिचयैर्भोजनभट्ट प्रभृतिभिः समं वार्तालापश्चाकारि समागतो

ऽयमस्मत्पक्षइतिवदंतः सर्वे मामभिननंदुः (अत्रांतरे) कृतपरिचयः कुमारभंजनो मामवोचत् वयस्यमहेंद्र नातिपरिश्रमश्चेदद्यास्मत्सभायामागंतव्यं द्रष्टव्यंचतत्रागत्यतत्तत्कृत्यम् इत्युक्त्वा निमंत्रणपत्रं विज्ञापनदलंच महांदत्तवान्मयापितदादायसत्वरमेवापाठि तदक्षर विन्यासोयथा।

गोपनीयं३प्रयत्नतः

सं०—भो विधवाविवाहविरोधिनः (निभृतं वाच्यतां) अद्यार्ध रात्रादनंतरं ज्ञानवापी मंदिरे वैदिक धर्म विध्वंसिनी सभा भविष्यति यस्यां भो जनभट्टप्रभृतयो विद्वांसः कलियुगाचार्य सभापतित्वे विधवा विवाहविरोधप्रस्तावान् प्रस्तोष्यंत्यतो नियत समये भवता प्यागमनं विधेयमितिनिवेद्यते तन्मंत्री जारेन्द्रचूड़ामणिः (ज्ञानवापी) स्थानं।

भा०—मैंने भी उसका कहना मान कर उसी के साथ २ जाना आरम्भ किया परिचय होने पर भोजन भट्ट आदि सभ्यों से वार्तालाप किया अपने पक्ष में आए हुए मुझको जान कर सब मेरी प्रशंसा करने लगे। इसी बीच में अत्यंत परिचित कुमार भंजन मुझसे बोला कि मित्र महेंद्र ! यदि अधिक परिश्रम न हो तो आज आप हमारी सभा में आवें वहां आकर उस सभा का कार्य देखें इतना कह निमंत्रण पत्र और विज्ञापन पत्र मुझको देने लगा मैंने भी लेकर पढ़ा जिसकी नकल इस प्रकार है। "प (विधवा विवाह) के शत्रुगण-(चुपके २ पढ़ना) आज आधी रात के समय ज्ञानवापी में (वैदिक धर्म विध्वंसिनी सभा) का अधिवेशन होगा उसके अन्दर कलियुगाचार्य के सभापति होने पर भोजन भट्ट आदि अनेक विद्वान विधवा विवाह के रोकने के लिये अनेक प्रस्ताव प्रस्तुत करेंने आप भी नियत

समय पर पधार कर हमको अनुगृहीत करें निवेदक (जारेन्द्र चूड़ा मणि) स्थान ज्ञानवापी।

सं०—पठितविज्ञापनदलेन मया सर्वमपितेषां गुप्तलीलां द्रष्टु नियत समयात्प्रागेव तत्रगत्वास्थितिरकारि संजाते निशीथे समागतेषुचसभ्येषु सभाधिवेशनमभूत् बहुशः प्रार्थितः कलियुगाचार्यः सभापति पदं स्वीचकार जारेन्द्रचूड़ामणिश्चमंत्रिपदमग्रहीत् अनंतरं पापमूर्त्ति प्रभृतिषु सर्वेषुसभ्येषु समुपस्थितेषु सभापतिः कलियुगाचार्यः प्राह भोगवेन्द्राचार्यप्रभृतयोविद्वांसः प्रस्तूयतां स्वमनीषितप्रस्तावः यमाकर्ण्याहं सभ्योचितं स्वनिर्वाहानुकूलंच कमप्युपायं विचारयेयमिति अनन्तरं त्वयोच्यतांपूर्वंत्वयोच्यतामिति विचारे समुपस्थिते गवेन्द्राचार्यएव स्वदशामकथयत् यथा-

भा०—विज्ञापन पत्र के पढ़ने पर उनकी सब गुप्त लीला देखने के लिये मैं भी नियत समय से पहिले ही सभा में जा बैठा आधी रात होने पर जब कि सब सभ्य एकत्र हुए सभा का आरंभ हुआ बहुत कुछ कहने पर श्रीमान् कलियुगाचार्य ने सभापति पद को सुशोभित किया जारेंद्रचूड़ामणि मंत्री पद पर नियत हुए अन्त में पापमूर्त्ति अधर्ममूर्ति दुःखमूर्ती शोकमूर्ति सत्यानाशी धर्मखण्डन पापमण्डन विद्याशत्रु कलहवर्धन अज्ञानराशि रण्डागुरु वंचकोपाध्याय हत्यानिधान गोबरगनेस कुमारभंजन भोजनभट्ट विधवा जीवन आदि अनेक विद्वानों के उपस्थित होने पर सभापति कलियुगाचार्य बोले कि हे गवेंद्राचार्य आदि प्रधान २ विद्वानों! अब आप लोग अपना अपना प्रस्ताव पेश करें आज्ञा पाते ही पहिले तुम कहो २ सब आपस में कहने लगे सबसे पहिले गवेंद्राचार्य अपनी दशा पेश करने लगे जैसे--

कालाद्यतो जगति नाश मियायरुष्टे-
दैवेन वालविधवाजन तापवल्ली॥

सर्वा ततोस्मदुचिता विलयं प्रयाता-
निर्वाहरीतिरधुना वद किं विधेयम् ॥१३८॥

जब से संसार में बाल विधवाओं की बृद्धि बंद हुई अर्थात् उनका पुनर्विवाह होने लगा तबसे हमारी जो निर्वाह (गुजारे) की सूरत थी वह भी बंद हो गई कहिये अब हम क्या उपाय करें १३८

नायाति कापि विधवा भवने स्मदीये-
दीक्षां ग्रहीतुमुपदा बृत पात्र हस्ता ॥
नो यंत्र मंत्र बहुतंत्र विधान हे तो-
रेकांतमेति सविधे मम संग माय ॥१३९॥

भा०—थाली में अनेक प्रकार के पदार्थ रखकर जो विधवायें मेरे पास मंत्र लेने के लिये पहिले आया करती थीं और तरह २ के तंत्र मंत्र पूंछा करती थी आज एक तरफ से उनका भी आना बन्द हो गया १३९

गर्भावपातनकृते गृहतो गतानां-
तीर्थेषु मज्जनमिषाद्विधवाजनानाम् ॥
संप्रत्यभावतइमेविरतं रुदंति-
किं नाद्य पश्यसि विलोकय तीर्थ जातान् ॥१४०॥

भा०—काशी, मथुरा, हरद्वार आदि तीर्थों में स्नान के बहाने से जो विधवाएँ अपने २ घरों से चल कर वहां गर्भ गिराया करती थीं वह आज उनके पुनर्विवाह होने पर बन्द हो गईं इस लिये देखिये पण्डे भी रो रहे हैं ॥ १४० ॥

माला करे तिलकमुन्नतकोटि भाले-
जाले मनोऽविरतमल्पवयस्क वाले ।
कालेऽत्र तेपि सममेव सदा रुदन्ति-
श्रीवैष्णवाः कथय तैः क्रियतां किमद्य ॥ १४१ ॥

भा०—जिनके माथे में गोपीचन्दन का तिलक हाथ में माला दोनों बगल में दो बाला छल प्रपंच में सदा मन रहा करता था वह वैष्णव साधू वैरागी भी आज विधवाओं के न रहने से पेट पीट रहे हैं ॥ १४२ ॥

बित्तंमनः करणमप्युपलभ्ययासा-
मानन्दमत्रभुवने रभसादकुर्वन् ।
गोस्वामिनः परमभागवताः सदाते-
वृन्दावनेऽद्य गतसर्वसुखा रुदन्ति ॥ १४२ ॥

भा०—जो गुसाई समाश्रय के द्वारा विधवाओं का तन मन धन अपने अर्पण करा कर गो-लोकवासी कृष्ण के प्रतिनिधि बन वृन्दाबन आदि नगरों में आनन्द करते थे आज विधवाओं के न रहने पर वह भी छाती पीट २ चिल्ला रहे हैं ॥ १४२ ॥

एवं स्वदुःखघटनां कथयत्यनंता-
मन्वब्रवीत्कथनमस्य तदा गवेन्द्रे ।
मन्त्री सभापतिनिदेशवशात्परस्ता-
त्तत्पापमूर्तिरुचितं वचनंजगाद ॥ १४३ ॥

भा०—इस प्रकार गवेन्द्राचार्य के कथन का जारेन्द्रचूड़ामणि ने अनुमोदन किया अन्त में कलियुगाचार्य की आज्ञा पाकर पापमूर्ति ने अपनी स्पीच शुरू की जो इस प्रकार है ॥ १४३ ॥

[युग्मम्]

जगत्यभावाद्विधवाजनानां-
न पूजनं सिध्यति गुप्तदेशे ।
प्रकोपमाप्ता ततएव देवी-
विनाशयिष्यधुना समस्तम् ॥ १४४ ॥

अतोधुना बोधय पारिषद्यान्-
सभापते निर्वहणस्य रीतिम् ।

भवेद्यथा वंचकमानवानां-
यथाकथंचिद्भुवने निवासः ॥ १४५ ॥

भा०—माननीय सभापते और पारिषद्यो ! विधवाओं के न रहने से अब भैरवी चक्र का पूजन बन्द हो गया इस लिये देवी कुपित हो रही हैं देवी के कुपित होने पर हमारा सत्यानाश हो जायगा ॥ १४४ ॥

इस लिये अब कोई ऐसा उपाय बतलाइये जिससे हम लोगों का निर्वाह हो और भेद भी न खुले नहीं तो हम लोगों का अब नाश का समय निकट आ गया है ॥ १४५ ॥

सं०—इतिनिवेदयति रण्डागुरुप्रभृतयःसर्वे तमनुवदन्ति अन्तेस मस्तपारिषद्यप्रार्थनानन्तरं सभापतिः कलियुगाचार्यो व्याख्यानद्वारा स्वोयांव्यवस्थांददाति सायथा (भो पारिषद्याः ! समयोयंविलक्षणः-प्राप्तः प्रत्यहंविद्याबृद्धौ जनैर्मनोदीयते बहवोविद्वांसःसंवृत्ताः प्रत्यहं-विचारयन्तिच धर्मशास्त्रम् पठंतिवेदं अतःसामान्यतया जनवंचनसम-यस्तुदूरमितः केवलं विद्यारहिता ग्रामीणा इदानींवंचनीयाः तेपिनिभृ-तमेव न प्रकाशं ?

शास्त्रार्थेसमुपस्थिते कदापिनगन्तव्यं यतोस्मत्पक्षेशास्त्रबलंसर्व-थानविद्यते प्रत्यक्षमेवैतद्भवतां यदेकत्रशास्त्रार्थे प्रमाणाभावात्पलायनं यावत्कालपर्यंतं शास्त्रार्थो न गम्यते तावदेवास्माकंविजयः परतः परा-जयेतु भवंतएवप्रमाणं ?

यदिकश्चिदत्रविषये बुद्धिमानागत्यसंमतिंप्रार्थयेत्तदा तस्मैशास्त्रानु-कूलैवसंमतिर्देया (अवश्यंकार्योविधवाविवाहइति) सामान्य मूर्खजन प्रश्नावसरेतु (अश्वालंभं यद्यपिशुद्धं) इत्यादि प्रमाणान्युपन्यस्य "कदापिनेदंकर्मकार्यं भवतुभ्रूणघातादिनापापं वर्ततांराजद्वारेदुर्दशानु-भवनं प्रसरतुनिन्दा भूयात्पुरांतरमधिगत्य पुत्रीभगिनीवावेश्या पमरप्र-चलितस्य विधवापरिणयस्यकदापि नानुष्ठानं विधेयमिति" वाक्यम् ?

एतावतापिकथनेन यदिकश्चित्कथनंनमंन्येत तदातंप्रतिवाच्यं भो नराधम ! तवोपरिवयं श्मश्रूणिवर्द्धयिष्यामः कूपेनिपत्य वृक्षाद्वा विष भक्षणेन शस्त्रघाताद्वा स्वात्मानंविपाद्य ब्रह्मराक्षसाभविष्यामस्तववंशंचनाशमिष्यामइति एवंभयभीतास्ते कदाचिदवरुद्धाभविष्यंति ?

प्रकारेणामुना यावदस्मज्जीवनं भविष्यतिनिर्वाहः अस्मज्जीवनावधि मूर्खाअपिस्थास्यंत्येव परतस्तुनास्यसिद्धान्तस्यावस्थितिर्भविष्यति समालोच्यैवंपूर्वापरसमयंहताशैर्भवद्भिर्नभाव्यं भवंतोबीरवर्य्याः कातर्यमाश्रित्यमाविषीदंतु बारं २ विघ्नेष्वागतेष्वपि समारब्धमेतत्कार्यं नपरित्याज्यं भवद्भिः दृश्यतां ।

प्रारभ्यते न खलु विघ्नभयेन नीचैः-
प्रारभ्य विघ्नविरता विरमन्ति मध्याः ।
विघ्नैः पुनःपुनरपि प्रतिहन्यमानाः-
प्रारब्धमुत्तमजना न परित्यजंति ॥ क ॥

इति भर्तृहरिरप्याहातःशास्त्रार्थाशंकया स्वकार्यं कदापि नहेयं-येनकेनप्रकारेण जनवंचनमवश्यंविधेयमेतदेवभवतांबीरत्वमित्युक्त्वा-कलियुगाचार्यो विरराम ज्ञानबापी समुत्थितप्रतिध्वनिपरिवर्द्धितः सभ्यकरतलध्वनिरुदतिष्ठत् ।

इस प्रकार निवेदन करता है रंडा गुरु आदि समस्तपारिषद्य अनुमोदन करते हैं अन्त में समस्त जनों की प्रार्थना पर सभापति कलियुगाचार्य व्याख्यान द्वारा अपनी व्यवस्था देते हैं ।

कलियुगाचार्यकीस्पीच
[और व्यवस्था]

उपस्थित सभ्यो ! समय विलक्षण आ गया है विद्या की बहुत कुछ तरक्की हो रही है बहुत से विद्वान हर बात के आंदोलन में लगे हुए हैं इसलिये सबको बहकाने का समय तो अब रहा नहीं केवल मूर्खों का बहकाना ही बाकी रह गया वह भी एकांत में बैठ करके सबके सामने नहीं। दूसरी बात यह है कि जहां कहीं इस विषय में शास्त्रार्थ हो वहां कभी न जाना चूंकि हमारे पास शास्त्र का कोई बल नहीं है जब तक हम शास्त्रार्थ में नहीं जाते हैं तभीं तक हमारी जीत है जाने पर तो शास्त्रार्थ में परास्त होकर भागे हुए आप स्वयं प्रमाण हैं ?

यदि कोई बुद्धिमान जन इस विषय में सम्मति पूछे तो उसको विधवा विवाह करने की इज़ाज़त दे देनी चाहिये मूर्खों के पूंछने पर तो (अश्वालंभं) आदि प्रमाण देकर कहना चाहिये कि तुम ऐसा कार्य कदापि मत करो चाहे गर्भ गिराने का पाप हो चाहे राज दरबार में जाकर इज्जत खराव हो चाहे बदनामी हो चाहे दूसरे शहरों में जाकर बहू बेटी मा बहिन रण्डी बने मगर लोक में अप्रचलित यह काम कदापि मत करो आदि २ ?

इतने पर भी यदि मूर्ख न माने तो उनसे कहो कि हम तुम्हारे ऊपर बार बढ़ावेंगे तेरी पुरोहिताई छोड़ेंगे कुए में या पेड़ से गिर कर मरेंगे जहर या छुरी खाकर ब्रह्म राक्षस बन तेरे वंश का सत्यानाश करेंगे इतने से डर कर शायद वह इस काम को छोड़ दें इस प्रकार हमारे जीवन पर्यंत निर्वाह होता रहेगा और यह भीहमेविश्वास है कि १५-२० बरस तक मूर्ख भी बने रहेंगे परन्तु अन्त में यह सिद्धांत अवश्य नष्ट होगा इसलिये अभी हताश मत बनो

देश काल देख कर काम करो तुम लोग वीर हो वीरता से काम लो देखो भर्तृ हरि क्या कहते हैं बार २ विघ्न आने पर भी जो अपने काम से नहीं हटते वही उत्तम कहलाते हैं उठाये हुए काम को बीच में छोड़ देना कायरों का काम है इसलिये शास्त्रार्थ के भय से तुम अपना काम कहीं भी मत छोड़ो जिस प्रकार बने उस प्रकार मूर्खों को हर समय बहकाते रहो धोका देते रहो अपना मत लब बनाते रहो इसी में आप लोगों की बहादुरी है इतना कह कर श्रीमान कलियुगाचार्यजी प्रधान वैदिक धर्म विध्वंसिनी सभा अपने पद पर बैठ गए ज्ञानवापी से भी यही प्रतिध्वदि उठी अंत में समस्त सभ्यों की करतल ध्वनि से ज्ञानवापी गूंज उठी ॥

सं०—विश्रांतिमुपागते श्रीमति कलियुगाचार्ये मंत्रिपदमुपागतो जारेंद्रचूड़ामणिःप्राह भोसभ्याः ! अस्माकंप्रार्थनामुररीकृत्य भवादृश-जननिर्वाहहेतवे यस्तावदुपायः श्रीमता कलियुगाचार्येणोदीरितः स-सर्वैरिदानींमाननीयः परतोव्यवहर्तव्यश्च तेनैवास्माकंनिर्वाहोभविष्यति नान्यथेत्युक्त्वा विरराम (सर्वेधन्यवादानदुःसभापतये मंत्रिणेच) अंते पुष्पवृष्टिपूर्वकं त्रिवादनात्पूर्वमेव सभाविसर्जनमभूत् ।

भा०—सभा पति के बैठने पर मंत्री महाशय उठ कर बोले कि माननीय सभ्यो हमारी प्रार्थना स्वीकार करके सभा पति जी ने जो हमारे निर्वाहार्थ उपाय बतलाया उसका हम लोगों को धन्यवाद देना चाहिये और इनके कथन पर अमल करना चाहिये इसी से हमारा निर्वाह होगा अन्यथा नहीं (सब धन्यवाद देते हैं) अंत में गलियों में पड़े और सड़े पुष्पों की वर्षा करते हुए तीन बजे से पहिले ही सभाविसर्जित करते हैं ।

सं०विसर्जितायां सभायामहमपिगृहमागत्य मदनमंजरींप्रणम्यच वाष्पीययानालयमगाम् तत्रच समागतंदीर्घवेगवत्-शकटंसमधिरुह्य भवदंतिकमागतइत्येतावानुदंतः (आर्यकविः) वयस्यमहेंद्र ! सम्यक्कृतं

१५

यदेतेषांगुप्तप्रचारोप्यदर्शिपरमेतत्तुवाच्यं शास्त्रार्थायापिकश्चिदस्तिस-
ज्जोनवा गुप्तप्रचारभेदनायतु पुस्तकमेवैतत्पर्याप्तं (महेंद्रः) नास्तिक-
श्चिदपिसज्जः (आर्यकविः) किमधुनामयाकर्तव्यं तदुच्यतां (महेंद्रः)
वयस्यार्यकरे किमन्यदवशिष्टं यदधुना निवेदयामि ॥

नीतं बिनाशमबलाजनदुःखजातं-
लोकत्रयेपि निहितं नवकीर्तिजातम् ॥
भूमंडले सकलमुत्सुकमद्य जातं-
तत्किं वदस्व सुकवे लघु यन्न जातम् ॥ १४६ ॥

भा०—सभा के विसर्जन होते ही मैं भी घर आया और मदन-मंजरी से इजाज़त लेकर स्टेशन पर आ गया टिकट लेकर डांक गाड़ी पर सवार हो आपकी सेवा में उपस्थित हुआ इतना वृत्तांत है (आर्यकवि) मित्र महेंद्र ! तुमने बहुत अच्छा किया जो इनका गुप्त प्रचार भी देख लिया परन्तु यह तो बतलाओ कोई शास्त्रार्थ करने के लिये भी तयार है गुप्त भेद का पोल तो यह पुस्तक ही खोल देगा (महेंद्र) कोई नहीं (आर्यकवि) तो अब मेरे लिए क्या करना बाकी रहा (महेंद्र) अब बचा ही क्या रह गया जो कि सेवा में निवेदन करूं विधवाओं का कष्ट नष्ट कर दिया सर्वत्र कीर्ति का प्रचार कर लिया भूमंडल में मनुष्यों को आनंदित बना दिया अब रहा ही क्या ॥ १४६ ॥

सं०—आर्यकविः यद्येवंतर्हि [अंतेकाव्यस्यनित्यत्वात्कुर्यादाशिष-मुत्तमाम्] इतिभरतमुनिप्रणीतवाक्यनियमादेतावत्पुनरस्तु यदेवं प्रयुज्यते ॥

बियोगं नोपेयाज्जगति तरुणी नायकमिता-
समन्तादानन्दं श्रयतु मनुजौघोपि नितराम् ॥
स्वधर्मे सर्वेषां भवतु मतिरप्यत्र परतः-
समृद्धिः पर्जन्यै रविरतमुदारा विलसतु ॥ १४७ ॥

भा०—(आयकवि) यदि ऐसा है तो मेरे कहने से इतना और भी हो संसार में कोई भी स्त्री जवानी में पति से वियोग को प्राप्त न हो चारों तरफ से मनुष्यों को सुख प्राप्त होवे वैदिक धर्म की हर समय वृद्धि होती रहे समय २ पर बर्षा करते हुए मेघ भारत भूमिको पुष्पित एवं फलित रखते हुए प्रजा को आनंदित करे॥ १४७॥

विश्वातीतविचारविस्तृतमतिर्वेदांतविद्यानिधि-
ष्टीकाराममुनिः सुबुद्धिरथ यं प्राजीजनच्छ्रीमती ॥
सोयं पाठकवंशजोऽमरगिरामब्धिः कवींद्रोऽखिला-
नंदो ग्रन्थमिमं विधाय विधवानंदाय तुष्टोऽभवत् ॥ १४८ ॥

भा—लोकोत्तर बिचारों में विस्तृतप्रज्ञ वेदांत विद्या के एक समुद्र मुनिवर टीकारामजी तथा उनकी लोकमान्य प्रातःस्मरणीय धर्मपत्नी श्रीमती सुबुद्धीजी ने जिसको जन्म दिया वह पाठक पदवी विभूषित सनाढ्य वंश में उत्पन्न संस्कृत विद्या के अद्वितीय भवन कविरत्न अखिलानंद शर्मा बिधवाओं के उपकारार्थ इस ग्रन्थ को बना कर अत्यंत आनंद को प्राप्त हुए ॥ १४८ ॥

बाणर्तुनंदशशियोजनतः प्रलब्धे-
श्रीविक्रमार्कनृपतेः समये नभस्ये ॥
पक्षे शुचौ मदनबाणमतिथौ प्रभाते-
नीतः समाप्तिमयमुत्तमकाव्यबंधः ॥ १४९ ॥

बाण ५ ऋतु ६ नंद ९ शशि १ इनके योजन से लब्ध महाराजा बिक्रमादित्य से प्रवृत्त हुए [१९६५] संवत्सर में श्रावण शुक्ल पंचमी की प्रभात वेला में यह ग्रन्थ समाप्त किया ॥ १४९ ॥

इति श्रीमदखिलानंद शर्म्म प्रणीतं
सानुवादं वैधव्य विध्वंसन चंपू
काव्यंसमाप्तिमगादित्योम्

(शुद्धाशुद्ध सूची)

पृष्ठे	पंक्तौ	अशुद्धम्	शुद्धम्
६५	११	शपुत्रा	शयुत्रा
,,	१४	द्रजौ	रात्रौ
,,	१५	शपुत्रा	शयुत्रा
,,	१६	मधस्थे	सधस्थे
,,	२३	शपुत्रा	शयुत्रा
६६	१०	तैजैः	तैरजैः
६७	४	शह्वना	शह्वेना
,,	२१	पुनर्भु	पुनर्भू
६८	१	हतम्	नम्
,,	२१	वह्वाज	वह्वाहज
६९	१७	अन्यपति	अन्यंपतिं
,,	१८	बिचारणे	निवारणे
,,	२१	बिवाह	बिवह
,,	२३	आहंतः	आहनः
७०	१	बिवाह	विवह
,,	६	तागन्त	ताधिगंत
७१	१०	आशत	आयात
,,	२५	बिधानुक्तं	बिधावुक्तं
७२	३	अंतोहि	अन्योहि
,,	६	देवकामा	देवृकामा
,,	२४	संबंधे	संबंध
७५	२०	लौकिक	लौकिकं
७७	४	मिति	मीति
,,	२६	पकिंच	किंच
७८	१	इत्यथ	इत्यर्थ
,,	३	दुच्यते	यदुच्यते
,,	५	यत्रू-नञो	यत्तू-नञो
,,	६	पटक	परक
,,	८	पद्य	यद्य
,,	९	अत्र	नात्र
७९	६	वास्तु	वस्तुतस्तु
,,	७	स्तत्र	स्तत्त
८०	३	भवतीति	भंवतीति

(मुद्रित पुस्तकें)

दयानंददिग्विजय महा काव्यभा० टी० ...	४)
पिंगल छंदः सूत्र वै० भा०	॥)
भामिनी भूषण काव्य भा० टी०	।)
आर्य शिरो भूषण काव्य भा० टी०	।)
लघुकाव्य संग्रह भा० टी०	≡)
श्री दयानंद लहरी भा० टी०	≡)
आर्य नियमोदय काव्य भा० टी०	=)
आर्य वृत्तेंदु चंद्रिका सं० टी०	-)
गुरुकुलोदय काव्य भा० टी०	-)
आर्य संस्कृत गीतिः	-)
वार्षिकोत्सव चंपूः	=)
ब्रह्मचर्य वर्णनम्	-)

पुस्तकें मिलने का पताः— ओंकार बुक डिपो
(श्री शिक्षा भण्डार)
प्रयाग

(शीघ्र छपने वाली पुस्तकें)

वैदिक सिद्धांत वर्णन (महाकाव्य)
वैदिक धर्म विजय (संस्कृत नाटक)
सत्यार्थ प्रकाश का (संस्कृतानुवाद)
विरजानंद चरित काव्य
द्विजराज विजय काव्य
काव्यालंकार सूत्र (वैदिक भाष्य)
दशावतार खंडन काव्य
पतित प्रायश्चित्त विधि
बृहत्काव्य संग्रह
संस्कृत विद्या मंदिर
आर्य सुता शिक्षा सागर
शब्द बोध व्याकरण (श्री विरजानंद कृत)
वाक्य मीमांसा (श्री विरजानंद प्रणीत)
द्विज राज विजय पताका
द्विजराज विजय चंपूः